THE DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION

GUJARATI KAVYASANKSHEPA,

OR

SELECTIONS FROM GUJARATI POETS.

BY

KAVI DALPATRÁM DÁHYÁBHÁI

6000 Copies

BOMBAY,
GOVERNMENT CENTRAL BOOK DEPÔT
1875

मुंबई इलाकानुं सरकारी केळवणीखातुं.

गूजराती काव्य संक्षेप.

आ ग्रंथ,

कवि दलपतराम डाह्याभाई

एओए रच्यो.

६००० प्रत.

मुंबईः

गवर्नमेंत सेंत्रल बुक दिपो.

सन १८७५ इ०

Price Rs. 5-0-0

मुबई इलाकानुं सरकारी केळवणीखातुं.

गूजराती काव्य संक्षेप.

आ ग्रथ,

कवि दलपतराम दाह्याभाई

एओए रच्यो.

६००० प्रत.

मुंबई:

गवर्नमेंत सेंत्रल बुक दिपो

सन १८७९ इ०

Price Rs 5-0-0

मुंबईमा

"निर्णयसागर" छापखानामा छाप्युं छे

काव्यसंक्षेप.

प्रस्तावना.



हरेकदेशनी भाषामा कविता होयछे. हरेकदेशमा एवो नियम छे के व्याकरण भणीने बीजा ग्रंथो वांचे, पण जो ते भाषानी कवितानां पुस्तको वांची के समजी शकतो न होय, तो ते भाषा पूरी भणेलो पंडित कहेवाय नहि, अने एकला गद्यनांज पुस्तको वांच्या होय तेनाथी तेज भाषानी कवितानु पुस्तक वांची के समजी शकाय नहि.

जेम छापेला अक्षरोमां अने झडपथी लखेला अक्षरोमां तफावत होय छे, तेमज कवितानी भाषामां अने गद्यनी भाषामां कांइक तफावत होयछे, माटे ते बने प्रकार शीखवा जोइए.

संस्कृत भणनारा पण प्रथम व्याकरण भणीने पछी पंचकाव्य भणेछे त्यारे पंडित कहेवाय छे, तेमज अंग्रेजीमां अने फारशीमां पण छे, तथा मराठी भाषामां अने हिंदी भाषा वगेरेमां पण गद्यनां अने पद्यनां पुस्तको छे, अने ते सरकारी निशाळोमां तथा स्कूलोमां चालेछे.

गूजराती भाषामां जूना कविओनो कविताना संग्रहनां काव्यदोहन नामे बे पुस्तको सरकारे मारी पासे कराव्यां हतां, अने ते आज सूधी स्कूलोमां चाल्यां. ए पुस्तको रचावती वखते एवो विचार हतो के कवितामां मतलब धर्मनी होय के गमे ते होय, पण जे कविता लोकोमां वखणाती होय तेनो संग्रह करवो.

पारका धर्मनो उत्कृटतानुं पुस्तक घणा खरा लोकोने वाचवु गमतु नथी, तेथी हमणां एवी तकरार उठी के निशाळोमां तथा स्कूलोमां कोइना धर्मनी कविता अथवा बाबत शीखववी नहि, तेमज नागा शृंगाररसनी बाबत उछरता छोकराओने शीखववी नहि. ते उपरथी

सरकारे एवो ठराव कर्यो के कोइ एकज पथने लागु पडे नहि, तथा जेमां बालकने नुकसान करी शृंगार रस न होय एवी कविता काव्य दोहननां बे पुस्तकोमांथी तथा बीजा ग्रंथोमांथी तारवी कहाडीने तेनुं एक पुस्तक तैयार करवु. ते काम रावसाहेब महिपतराम रुपरामना देखरेखमां करवाने मने सोंप्युं, तेथी आ पुस्तक तेवी रीते में तैयार कर्युंछे.

आ पुस्तकमां फकत त्रणज कवियोनी कविता लीधी छे. तेमां प्रथम गिरधरकृत रामायणमांथी केटली एक कविता इतिहास दाखल छे, तेमां असलना अयोध्याना राजानी वात छे. तेपछी लज्जारामकृत अभिमन्युना आख्यानमांथी केटलो एक भाग लीधो छे. ते पछी शामळभटना विविध विषय तथा पद्मावतीनी वार्ता संक्षेपे लीधी छे. ए वार्तामां सतीओ स्वयंवरथी परणेली ते चाल घणो वखाणवा लायक छे; तेमां अघटित शृंगार रस नथी पण योग्यरीते शृंगार रस छे.

ए त्रणे कवियोनी कवितामांथी धर्मने लगतां वाक्यो तथा अघटित शृंगार रसने लगतां वाक्यो आमां लीधां नथी, माटे आ पुस्तकनुं नाम "काव्यसंक्षेप" राख्युंछे. इ० स० १८७९

क. दलपतराम डाह्याभाई.

संवत १८९३ मां वडोदराना दशा लाड वाणिया कवि गिरधरे रामायणनुं पुस्तक रची पूरुं करेलुं छे.

गिरधरकृत रामायणमांथी

दशरथ विषे.



राग धनाशरी.

दशरथ राजा पुण्य पवित्रजी, कहु संक्षेपे तेनां चरित्रजी;
रावणे मुक्यां सैन्यो त्यांहेजी, विधिये पोहोचाड्यां अवधपुरमांहेजी.

(ढाळ) अवध पुरमां राय दशरथ राणी कौशल्या सती;
तेना आनंदमां दिन जायछे निजधरम पाळे महामती.
पछे पुत्रने निज राज सोंपी अज गया वन वास;
तप साधना करी थोडे दिवसे पाम्या स्वर्ग निवास.
त्यारे राय दशरथ राज करता नीति धर्म विवेक;
पुत्रनी पेरे प्रजा पाळे दया सत्य विशेक.
एक केकै कन्या रायनी शुभरूप कपटी मंन;
वळवान निरदे अतिघणी ते परणिया राजंन.
वळी नागकन्या सुमित्राने परण्या पोते भूप;
बीजी सात शत कन्या वर्या जेनुं महा मनोहर रूप.
ज्ञानकळा ते कौशल्या सुमित्रा भक्ति अनूप;
केकै निश्चे जाणजो-ए कपट वृत्ति रूप.
त्रिगुण रूप विवेक मुरती मान दशरथ राय;
तेना पावन जश अदभूत प्राक्रम केहेतां पार न थाय.
धनुर विद्या विशारद रणपंडित शस्त्र प्रवीण;
शब्द वेधी विचक्षण सहु शत्रु कीधा क्षीण.
पण प्रजा नव थइ रायने कंइ पुत्र पुत्री रूप;
जोवन पण चाल्युं वही चिंता करेछे भूप.

---

१ दशरथ तथा तेनी राणी.

शास्त्र पंडित एम कहे पुत्र विना धिक संसार;
शुन्य मंदिर सुत विना जेम दीप विण अंधार.
प्रजा जेम राजा विना घृत लवण पाखे अन्न;
राका विधु तरु फल विना संसार सुख निरधन.
एम राय दशरथ करे चिंता पुत्र न थयो पेट;
एक दिवस नृपने निद्रामांहे स्वप्न आव्यु नेट.
जाणे बे पुरुष एक स्त्रीने मारी स्वप्नमां निरधार;
झबकी जाग्या रायजी करता ते मन विचार.
प्रातःकाळे वसिष्ट गुरुने कही राये वात;
में त्रण जणनी स्वप्नमांहे करी शस्त्रे घात.
त्यारे गुरु कहे ए भविष्य आगल थवानु छे जाण;
पछे शांति अरथे राय दशरथ कर्यु पुण्य प्रमाण.
केटला दिन वीत्या पछी मृगया गया वन राय;
कोइ मृग हाथे नव चड्यो त्यारे दूर पथे जाय.
ते वनमांहे निशा पडी त्यारे विमांश्यु मनमांहे;
एक सरोवरथी दूर तरुवर तळे बेठा त्यांहे.
ते समे-ब्राह्मण श्रवण नामे वृध अंध मात पिताय;
ते फरे तीरथ अटण करतो धरी कावड कांय.
त्यारे तम निशामां तृषा लागी वृधने तेणीवार;
त्यारे कावड सर उपकंठ मुकी गयो भरवा वार.
कमंडळमां जळ भर्यु ते शब्द प्रगट्यो त्यांहे;
त्यारे राये जाण्यु मृग को आव्यो सरोवरमांहे.
राये ततक्षण बाण मुक्यु शब्दवेधी जेह;
ते श्रवणने वाग्यु तदा कही राम पडियो तेह.
त्यारे धस्या दशरथ गया पासे द्विज पड्यो जे ठाम;
दीन थइ कहे श्रवणने में कर्यु अघटित काम.
त्यारे श्रवण कहे जइ पाओ जळ मुज मात पिताने जाण;
ए वृद्धने तमो पाळजो एवु कहेतामां गया प्राण.
त्यारे कमंडळ लेइ राय आव्या वृद्ध केरी पास;
बोल्या विना जळ आपियुं त्यारे थया चित्त उदास.

अरे श्रवण केम नथी बोलतो तने क्रोध नहि कोइ दीन;
जळ पान नहि करीये अमो बोल्या विना चित्त भिन्न.
त्यारे राय वळतुं बोलिया मे श्रवण मार्यो ठाम;
अज तणो हुं पुत्र दशरथ अज्योध्या मुज गाम.
मे अजाणे कर्म आचर्युं मृग वरांसे करी आज;
हुं पुत्र थइ पाळीश तमने पीयो जळ महाराज.
एवुं सांभळी अति दुःखमां आक्रंद मांड्युं अपार;
अरे श्रवण जेवो पुत्र क्यांथी प्रगटशे संसार.
जेणे मात पितानी सेवा न करी धरी मनुष्या देह;
चंडाळ तेने जाणवो महापुत्र पापी तेह.
मात पिताने उवेखी शुभ करम करता अन्य;
ते धरम अधरम जाणजो सेवा समु नहि पुन्य.
एवुं कही धरणी ढळ्यां मुरछा थइ तव आप;
अंतकाळे रायने बे जणे दीधो शाप.
पुत्र विजोगे प्राण तारा जज्यो सत्य वचन;
एवुं कही बे मरण पाम्यां राय कंप्या मन.
दाहक्रिया कीधी ते तणी दशरथे तेणी वार;
पछे अश्व आरुढ थइ पोते आव्या नगर मोझार.
उत्तर क्रिया करी वृद्धनी आप्यां अपरिमित दान;
राय हरख्या मन विशे मारे थशे संतान.

सीताना स्वयंवर विषे.

राग सोरठ.

राम जनकपुर आविया विश्वामित्रनी साथ,
हेते करी तेडी जायछे मिथुला नगरीनो नाथ. रामजनकपुर आविया.
मुनिमंडळमां महाल्ता चालता बे चतुर,
शोभे जेम साधन विशे ज्ञान विवेक पुर. राम जनक०
सुंदर पुर शणगारियुं शेरी चौटाने पोळ,
मनोहर मंदिर शोभतां सामा सामी ओळ. राम०

झळकेछे उची अटारियो सप्त भूमिना माळ,
छजा झरूखा रावटी बोले कीर मराळ. राम०
ध्वजा पताका फरफडे जाणे तडिताकार,
शिखरे शीखडी नाचता कचनकळश अपार. राम०
घरघर केरे आगणे मगळ उपचार,
पुरण कुभने साथीया मोती तोरण द्वार. राम०
एवी रचना रघुवर नीरखता आवे नगर मोझार,
रूपना भूपने जोइने मोह्या सहु नर नार. राम०
एवी मोहनरूपनी मोहनी मोही नगरनी नार,
जाणे पुतळियो चित्रनी एम थइ तदाकार. राम०
कोइ अबळा लेती ओवारणा कोइ देती आशीश,
नेत्र भरीने निरखती कोइ वीनवे ईश. राम०
ए वर सीता परणजो छे सरखी जोड,
जो विधि जोग ए मेळवे त्यारे पोहोचे कोड. राम०
त्यारे एक सखी सखीने कहे सुण वेनी वचन,
आवा रूपाळा राजवी हशे कोना तन. राम०
गौर श्याम गुणवत छे कामरूप कीशोर,
धनुष बाण कर शोभता नेत्र चपळ चकोर. राम०
सखी श्याम घणो सकुमार छे चाले लटकती चाल,
ए वर सीता जोग छे निश्चे परणशे काल. राम०
त्यारे बीजी कहे बाइ साभळो सीता सुकृतवान,
अण चिंतव्यो आवी मळ्यो गुण रूपे समान. राम०
त्रीजी त्रिया बोली तदा शु जाणो तमो आज,
जनके तेडाव्या हशे वरवाने काज. राम०
चोथी चतुरा कहे सखी घणु धनुष कठोर,
तेहने केम चढावशे सकुमार कीशोर. राम०
त्यारे पाचमी कहे पण पाळशे राखो धीरज मन,
तेजस्वी गणीये नहि लघु कोमळ तन. राम०
एम पचे मळी परमाणियु निश्चे वरशे राम,
सुकृत फळशे सीता तणु पोहोचशे मन काम. राम०

एवी नगरनी नारी वातो करे धरे नेह अपार,
स्तुति विधि उमयानी करे मनावे त्रिपुरार. राम०
सुकृत कइ जे अमे कर्यां धरीने आ शरीर,
ते पुन्ये करी जानकी, वरजो रघुवीर. राम०
ए रीते रघुनाथजी आव्या राजद्वार,
मिथुलेशे मुनि पूजीया करी सेवा अपार. राम०
एक मंदिर सुंदर शोभतु आप्यु देइने मान,
रामसहित मुनि उतर्या कर्यां भोजन पान. राम०

वलण.

भोजन करिया भावता संतोष्या मुनि जनरे;
कहे दास गिरधर ए कथा पावन श्रोता धरजो मनरे.

राग धन्याश्री.

जनके तेडाव्या राय अनूपजी, दशे दिशाना आव्या भूपजी;
आप्या आसन भोजन पानजी, सहुने उतार्या करी सनमानजी.

ढाल.

सनमान करी सौने उतार्या, मिथुलपतिये त्याहे;
अपार सेना सकळ नृपनी, भीड थइ पुरमाहे.
केटला राजा नगर बाहेर ऊतर्या उपवन;
त्यां जनकना परधान फरता आपे तृणजळअन्न.
रथ अश्व हस्ती पदाती दळ चतुरंग सेना त्याहे;
तेणे जनकपुर वींट्यु सकल जेम नाव सागरमाहे.
निमंत्रण गयु हतु अवधपुरमा स्वयंवरनु जेह,
छे दुखी रामवियोगे दशरथ माटे न आव्या तेह.
मंडप रचाव्यो जनक राये अति घणो विस्तार;
मणिथंभ कंचन कळश झळके शोभानो नहि पार.
वितान वदन जरी झालर हुलीचा बहु रंग;
जाळी मुक्ताफळ तणी मणि रत्न तेजतरंग.
सिंहासन सोनातणा ते मुक्या हारोहार;
माहे खंड जूदा कर्याछे मंडप घणो विस्तार.

ते मध्यमा त्र्यंबक रह्युंछे छूट चारे पास,
जनके धनुषपूजा करी शुभलग्नमा उल्लास
दुतने आज्ञा करी भूपे तेडाव्या सहु राय,
ते सभामाहे आविया त्या थइ घणी शोभाय
सिंहासन बेठा सकळ नृप ज्यहा जेनो अधिकार,
रुषिमंडळ सहित आव्या दशरथ राजकुमार.
गौर श्याम कीशोर तन मनहरण मोहन रूप,
श्रवणारिसुतने जोइने मोह पामिया सहु भूप
जेम तारामंडळ क्षीण पामे उदय रविनो थाय,
एम भूप सौ झाखा थया ज्यारे आव्या श्रीरघुराय
एक दीर्घ सिंहासन सुभग छे अधिक सहुथी सार,
श्रीराम लक्ष्मण मुनी कौशिक बेठा तेणे ठार
अन्य मुनिजन सरव बेठा सकळ पृथ्वीराय,
रूप जोइ रघुवरतणु नव नेत्रतृप्ति थाय
सरवे मळाने एम विचार्यु धनुषनु मिथ्या नाम,
ए रामने परणावशे कन्या जनक अभिराम
ते मंडपना एक खंडमा शोभा अधिक छे ज्याहे,
सिंहासन उपर बिराजे जनकतनया त्याहे
इद्राणि जेवी अनुचरी ते अनेक उभी दास,
रत्नडाडी तणा चमर करेछे वे पास
पुष्पमाळा हाथ झाली बेठी अदभूत रूप,
चपळ नेत्रे करी जोती सकळ पृथ्वीभूप

राग सामेरी

आवी रह्या सहु भूपति स्वयंवरमा जेणीवार,
त्यारे जनक रायनो भाट उठी बोलायो तेणीवार.
साभळो सरवे नरपती जनके कर्यु पण नेह,
जे आ सभे त्र्यंबक चढावे वरे कन्या तेह
माटे शूर वीर पराक्रमी शुभ होय क्षत्रीराज,
ते उठो ततपर थइ करी त्र्यंबक चढावो आज.

---

१ दशरथ

घणु कठीण ^1^त्र्यंबक जोईने गतवळ थया राजन,
पछे परस्पर वातो करेछे राय अन्योअन्य.
ए शरासन जे चढावे एवो नथी को राज;
बीजो कहे अमो आव्याछु जोवा स्वयवर काज.
एक कहे मारे जनक साथे घणो मित्राचार;
ते माटे आव्या अमो करवा गृहस्थनो वेहेवार.
केटलाये आवी हलाव्यु न हाल्यु ते चाप,
ते पाछा वेठा मान मूकी पाम्या मन परिताप.
केटला कहे अभिमानथी जो उठीशु आ वार;
अपमान थाशे आपणु एम करे मन विचार
एम धनुष हाल्यु नहि कोइथी थइ घडी बे चार;
त्यारे जनक नृपति बोलीया साभळो राजकुमार.
राजेद्र बलीयो होय जे त्र्यवक चढावो आज;
परणावु तेने जानकी माटे उठो करवा काज.
जोइ रह्या नीचु सुणी सरवे कोइ न उठयो शूर;
ते समे दशमुख आवियो अभिमान सागरपूर.
ककोतरी लखी हती जनके रावणने ते दीश,
बे मत्रि साथे आवियो ते सभामा दशशीश.
लकापतीने जोइने सहु कप्या राजकुमार;
सनमान करी आसन वेसाड्यो ^1^विदेहे तेणीवार.
अभिमान करीने वोलीयो ते समे रावणराज;
अल्या जनक ते शु पण कर्युछे कहे मुजने आज.
तव विदेहे त्र्यवक देखाड्यु रावणने ततकाळ;
ए चाप चढावे तेने कन्या आरोपे वरमाळ.
एवु साभळीने अट्टहास्ये हस्यो रावण राय;
कैलाश सरखो हलाव्यो कोणमात्र धनु कहेवाय.
में अमर बधीवान कीधा, हु रावण बलीयो सत्य;
कढुकनी पेरे उछाळु मेरू ^2^मदराचळ परवत.

---

१ जनक २ एक पर्वतनु नाम.

पृथ्वी उधी करी नाखु पलकमा निरधार;
ब्रह्मांड चाक चढावु तो ए धनुषना शा भार.
एम घणा वचन बोली पछे उठियो रावणराय,
वस्त्राभूषण संभाळीने धनुषभणी ते जाय.
रावणे आवी बाथ मारी वीश करशु साहे,
रेश हाले नहि ते घणो भार त्र्यंबकमाहे.
तदा थयो निस्तेज रावण स्परशता शिवचाप,
हलाव्यु हाले नहि सारे पाम्यो मन परिताप.
पछे अधर पीशे दंत रीशे रक्तलोचन क्रोध,
धनुष ते तव उपाड्यु घणु जोर करीने जोध.
परस्वेद चाल्यो अगयी उंचु कर्युं बलवान,
घणो श्वास चढियो शूरने थयु मन घणु अभिमान.
उभु कर्युं जव धनुषने अतिबळ करी महाकाय,
करमांहेथी लथड्यु तदा तव पड्यो रावण राय
पृथ्वी उपर पड्यो दशमुख थयो पुरण प्रहार,
तेनो उपर पड्यु त्र्यंबक चपायो तेणीवार.
ते भडाको सबळो थयो घणी उडी रज ते ठार,
रुधिर चाल्यु मुखथकी कचर थयो निरधार.
पोकार करतो बोलियो तमो सुणो सरवे जन,
हु दबायो छु मुने काढो थाय पीडा तन.
अरे जनक मुजने काढ वेहेलो जशे मारा प्राण,
तो कुंभकरण इंद्रजीत तुजने मारशे निरवाण.
पुरभंग करशे असुर तहारु लेशे मारु वेर;
पामु नवो अवतार जो जाउ जीवतो मुज घेर.
एम ते समे चपायो रावण थयु दुःख अपार,
पृथ्वी उपर पड्यो निशिचर करे मुखपोकार.

वलण.

पोकार करतो मुखे रावण पीडा पामे तनरे;
सारे सरव सभा सांभळता बोल्या जनकराय वचनरे.

राग मारु.

बोल्या जनक ते पुरुष वचन, नथी बळीयो को राजन;
में जोइ सरवनी करणी, निरवीर थइ आज धरणी.
भू नक्षत्री करी भृगुनाथ, गयु बळपराक्रम ते साथ;
पछी जन्म्यो नथी कोइ सुर, राणी जायो क्षत्रीपुर.
सरवे बेठा हीमत हारी, रही कन्या कुवारी महारी;
सरवे भूपति शोभा सहित, पण छे पुरुषार्थरहीत.
कह्या अघटित एवा वचन, रह्या साभळी सौ राजन,
शुणी जनकनी वाणी विरोध, चढ्यो लक्ष्मणने अतिक्रोध.
थया लोचन राता चोळ, फरके अधर भ्रकुटी कपोळ;
प्रगट्या रोमाचित अग, चढयो रामानुज रणरग.
[2]वीरासन उचो करी पाणी, गुरुप्रत्ये बोल्या वाणी;
हे मुनिवर आवां वचन, केम बोल्यो जनक राजन.
बेठा रामचद्र रघुराज, केम लोपी एणे लाज;
शुणता भानुकुळतन, केम बोले कठण वचन.
कहोतो उरवी उधी नाखु, एक हस्तमा मेरु राखु;
करु त्र्यबक चोळी पिष्ट, तो हु रामनो दास कनिष्ट.
[3]सुमित्रीना वचन शुणी धीर, नेत्र समस्या श्री रघुवीर;
रामे लक्ष्मण वार्या ज्यारे, मुनि कौशिक बोल्या त्यारे.
उठो राम हवे करो काज, पाळो जनकतणु पण आज;
गुरुवचन पाळवा आप, हरवा जनकतणो परताप.
गुरुचरण वद्या तेणीवार, कर्या सहु मुनिने नमस्कार;
श्याम सुदर तन सकुमार, पेहेर्युं पीतवसन चळकार.
मणिजडित मुगट शीरशोभे, जेना तेजथी दिनकर थोभे;
काने कुडळ मच्छाकार, उर मुक्ताफळना हार.
मणिमाळ हीरा गळुबध, करककण बाजुबध;
पाम्या विस्मे सरवे भूप, जोइ रघुवरकेरु रूप.
आवी उभा धनुषनी पास, थया जानकी जोइ उदास;
मन गभरायु तेणीवार, रामचद्र घणा सकुमार.

१ परशुराम २ टीचण उधा नाखीने बेसवु ते ३ लक्ष्मण.

राग धनाश्री

श्रीरामे करीयो धनुषनो भगजी, जनक पण पाळ्यु राख्यो रंगजी,
रावण उठयो थइ सावधानजी, गयो एका पामी अपमानजी.

टाळ.

अपमान पामी गयो रावण रामे भाग्यु चाप,
ते समे जयजयकार वरत्यो थयो अधिक प्रताप
सहु सभाने मुरछावळी ते थया सरव सचेत,
श्रीरामने जोता तदा या सत्यप्रेम समेत
सहु परस्पर वातो करे रघुवीर अति सुकुमार,
ए कठण सायक केम भाग्यु एम करे मन विचार.
हरख आसु आव्या सहुने रोमांचित गदवाण;
जनक सीता सहित सरवे हरख पाम्या जाण
ते समे विश्वामित्र उठया हरख प्रेम अपार;
हदे चापिया रघुवीरने आशीश देता सार
त्यारे जनक आज्ञा थकी उठया जानकीजी त्याहे;
हंसगमनी हरख शु वरमाळ ग्रही करमाहे.
शणगार सजीया सोळ अंगे चुदडी झळकार;
प्रकाश पृथवी थायछे जेम तडितनो चळकार
गजगति चाले चपळ चरणे घुघरी घमकार,
पदपान अणघट वीछिया, नेपुरनो झणकार
एवा जगतजननी आविया जानकीरूप रसाळ,
रघुवीर केरा कंठमाहे आरोपी वरमाळ
निज आसने बेठा जइ हरखिया सीतामन,
वाजिंत्र वाजे अतिघणा करे गान मंगळ जन
आनंद मन पामी तदा उठया जनक राजन,
रामलक्ष्मणने वेसाड्या पोताने आसन
जामात्र श्री रघुवर थाय ते जोइ हरखे राय,
पछे विश्वामित्रनी साथ बोल्या सुणता सरव सभाय.
कंकोतरी लखो अवधपुरमा रायदशरथ ज्याहे,
सहुसाथने तेडी भूपति वेहेला पधारे आहे

मुनि कौशिके कंकोतरी लखी यीने करी बहु स्यांहे;
कुमकुमे छांटी पत्र बीड्यो आप्यो द्विजकरमांहे.
चाल्यो विप्र उतावळो अति हरखशुं तेणी वार;
ते अवधपुरमां आवियो ज्यां रायनो दरबार.
ते समे दशरथ सभा करीने बेठाछे गुरुसाथ;
विजोग छे रघुवीरनो चिंता करे नरनाथ.
अरे गुरू वीत्या दिन बहु गया रामलक्ष्मण ज्यांहे;
पछे खबर कंइ आवी नहि शुं हशे कारण स्यांहे.
एटले द्विजवर आवियो छे सभामां ते दीश;
रायने कर कंकोतरी ते आपी देइ आशीष.
श्री राम लक्ष्मण कुशल छे राजे जनकपुरमांहे;
नरपति जोतां सरव रामे धनुष भाग्युं स्यांहे.
जानकीए वरमाळ घाली थयुं रुडु काज;
जान सरवे लेइ तमने तेड्या जनके आज.
मिथुला पतिये कह्यो छे परणाम अति आहाल्हाद;
घणो करी तमने कह्यो कौशिके आशिरवाद.
एवुं सांभळतां राय दशरथ पाम्या हरख अपार;
रामे स्वयंवर जीतियो सुणी थयो जयजयकार.
पछे दशरथे कंकोतरी आपी गुरुकरमांहे;
सहु सभा सुणतां वसिष्ट वांचे उकेलीने स्यांहे.
स्वस्तिश्री महाशुभस्थानक अवधपुर पावन;
पूज्य मूर्ति पावन जश नृप मुगट मणिराजन.
अखंड लक्ष्मी अलंकृत गुण सकळ बळ महिमाय;
केतुवत् रविकुळ विशे महाराज दशरथ राय.
लखीतंग मिथुलापुर थकी सेवकजन अभिराम;
चूडामणि महिपति मारो मानजो परणाम.
शुभकाम कारण लख्यानुं ते सांभळो नृपनाय;
तमपुत्र मुज पुरविशे आव्या मुनि कौशिकसाथ.
ते स्वयंवरमां धनुष भाग्युं पाळ्युं मुज पण राम;
मम पुत्रीए वरमाळ घाली थयां पुरणकाम.

माटे परणावा रघुवीरने शुभलग्न करवा काज;
सहुसाथने तेडी तमो, वेहेला पधारो आज.
तमो सदा जशवंत छो शोभासहित राजन,
ते माटे वेहेला पधारजो मुजने करो पावन.
ए विनति सेवक तणा लख्यु तेह धरजो चत;
कोटि गणु करी मानजो भूपति भाग्यवत.
एम पत्र वाच्यो वसिष्टे ते सुण्यो दशरथराय,
थया मग्न ब्रह्मानदमा अतिहरख अग नमाय.
सहु सभाने भूपे कह्यु जाने जवाने काज,
प्रधानने कहे सकळ सेना करो ततपर आज.
वीर बन्यो हरखिया जे भरत शत्रुघन,
सहु अयधपुरमा वात चाली लोक कहेछे धन्य.
राणीवासमा जइ राणियोने कर्युं राये जाण,
जनकपुरनो पत्र ते सभळावियो निरवाण
राणियो सहु आनद पामी उलट अगनमाय,
थयो कौशल्याजीने तदा ते हरख नव कहेवाय
द्विजवर तणी सेवा करी सतोखियो बहुपेर,
गीत मगळ गाय सरवे थइ लीला लेहेर
पछी अश्व गज रथ पालखो शणगारीया वाहन,
वस्त्र आभूपण धरी ततपर थया सहु जन.
अयधपुरनी प्रजा सहु वेहेवारिया श्रीमत,
जवा जनकपुर थया ततपर जान शोभावत

वलण

शोभावत थइ जान सरवे वाजे बहु वाजित्रे,
सैन्य सकळ शणगारियु ते चळके चित्रविचित्रे

राग सामेरी

दशरथ राजा हरख्या अपार, जनकपुर जावा करियो विचार,
पडो वजडाव्यो पुरमोझार, जान जावा सहु थाओ तैयार.

ढाळ.

तैयार थाओ जवा जाने जनकपुर मोझार;
माटे जेने इच्छा होय ते नीकळो नरनार.
एवु साभळी पुरजन सकळ अतिहरख पाम्या मन;
वृद्धबाळक विनासरवे थया सत्वर जन.
गजउपर बेसाड्या प्रथम गुरु वसिष्टने तेणीवार;
रथमाहे बेठा राय दशरथ जोडिया हय चार.
अश्व उपर चढ्या बन्यो भरत शत्रुहन;
सहु राणियो बेठी सुखासन सगदासी जन
अनेक रथ हय गज पदाती सुखासन अपार;
चतुरग सेना नीकळी ते अवधपुरनी बहार.
बाजिंत्र बाजे अति घणा थइ रह्यो जयजयकार;
हणहणे केकाण कछी गज करे चीकार.
हस्ती उपर विप्र बेठा बदीजन बहुरग,
रघुकुळ तणी कीरति वखाणे पामे हरख उमग.
नेजा अबाडी ध्वजा झळके कनक मणिमय सार;
छत्रचामर चळकता झळकता तडिताकार.
वीरशूरा वेशपूरा चाल्या चढी केकाण,
आभूषण शुभ शस्त्र झळके रत्नजडीत पलाण.
शुभशुकन वदी नीकळ्या चाल्या जनकपुरनी वाट;
सरितवन आवे बहु ओळघता गिरिघाट
वाटे ज्या वासो रहे दशरथ सहित समाज;
सुरलोक जेवु स्थळ भजे जाणे भूपति सुरराज.
एवी शोभासहित आव्या मिथुल देशमो झार;
जनक पुरनी बहार उपवन उतर्या ते ठार.
नीशान नोबत गडगडे शोभासहित राजन;
रूपक बाधे तेतणु श्रोता सुणो एकमन.
पायदळ शम दम तणु माहे सदविवेक तुरग;
ते चाले आगळ मलपता रक्षा करे निज अग.

तेनी पुठे निजबोधना कुंजर विराजे सार;
रामनाम तणा मुखे करता घणा चीकार.
निजानुभवना दिव्यरथमाहे बेठा मोटा संत;
ते रामरूपने नीरखवा अनुभव चब्या माहानत.
प्रयाण प्रथमे जागृती पुरग्राम स्थूळ नीवास;
त्या रही दशरथ रामने संभारता सुखराश.
स्वप्ना अवस्था गामडा सूक्ष्म त्या नथी रेहेताराय;
अघोर वनवाटे घणा ते सुषुप्ति केहेवाय.
एम करता जनकपुरने आविया उपवन;
त्यां लक्ष करी रह्या राय जणाया रामप्राप्ति चिन्ह.
विदेहने तव खबर थइजे पधार्या महाराज;
सामा आव्या वाजित्र वाजते साथे घणा पृथ्वीराज.
गुरु वसिष्टने चरणे प्रथम नमीया जनकराजन;
पछी राय दशरथने मळया भेटिया अन्योअन्य.
भूपनी पासे पुत्र छे जे भरत शत्रुघन;
रायजनक तेने जोइने स्थिर थयाछे लोचन.
पड्या विदेह विचारमा बे पुत्र जोइने त्यांहे;
रामलक्ष्मण मुज घेरछे, शु रीसावी आव्या आहे.
एम तन बे तदवत जोइने, विचारे मन विदेह;
वसिष्टने पुछयु तदा, त्यारे निवरत्यो संदेह
घणु मान देइने जाय तेडी राय नम्रयोकार;
सुमते सेना सकळ, पछे उतरी ते ठार.
जनकपुरमा गया दशरथ, शोभानो नहि पार;
सहु लोक जोइ विस्मे थया, वळी गौरश्याम कुमार.
एक सुदर मंदिर शोभतु रहेवाने आप्यु त्यांहे;
सहु साथशु नरनाथ पोते उतर्या तेमाहे.
पछी राम लक्ष्मण मळ्या आवी लाग्या गुरुने पाय;
पिताने चरणे नम्या तव हरखिया जोइ राय.
राये चाप्या रूदेसाथे रामलक्ष्मण तन,
संतोष पाम्या रायजी जेम पामे धन निरधन.

कौशल्या केकै सुमित्राये बेसाड्या उत्छग;
रुदे चापी सुधे शिर जेम वत्स धेनु संग.
सहु सभा साथे राय दशरथ गुरु ब्रह्मकुमार;
ते मंडप जोवा चाल्या सीता स्वयंवर सार.
भूपने सरवे देखाड्या जे चापकेरा खंड;
आ जुओ नृप श्रीरामजीए भांगीयु कोदंड.
ते जोइ दशरथ थया विस्मय, अतिप्रचंड कठोर;
ए केम भाग्यु प्राणवल्लभ कोमळ राम कीशोर.
पछी विदेहे आदर करी, बेसाडिया आसन;
राय दशरथ पास बेठा, चारे पुत्ररतन.
वसिष्ट गुरु आदे सभा सहु बेठा थइ निश्चिंत;
अन्य पृथ्वीराय बेठा हरख पामी चित्त.
पुत्र चारे सहित दशरथ शोभता श्रीमंत;
ते सभे जनके मानिया भूपति भाग्यवंत.
पछे जनक राजा बोलिया, सुणो भूपति कहु पेर;
पुत्र चारे तमारा ते, परणावो मुज घेर.
वे कन्या छे माहरी, उर्मीला सीतानाम,
मालती श्रुत–कीरती वे, मुज बंधुनी अभिराम.
रामने सीता वरे उर्मीला लक्ष्मणवीर;
मालती भरतने श्रुतकीरती, शत्रुसूदन धीर.
एवु सांभळी सहु सभा हरखी, आनंद्या भूपाळ;
पछे सामा सामी रच्या मंडप अति विचित्र विशाळ.
वाजित्र वे मंडप विशे वाजता अति घनघोर;
गाय मंगळ गीत सुंदर, सुंदरी चित्त चोर.

वलण.

चित्त चोर चतुरा चोळे पीठी, वर कन्याने तेणी वाररे;
सहु करे भोजन भावता, मन पामे मोद अपाररे.

---

१ वसिष्ट २ शत्रुघन

राग धोळनी देशी.

शुभ महुरतमांहे लग्न लीधु, करी मुनीये विचार;
मार्गशिर शुद पचमी, शुभ जोग ग्रह चद्रवार.
गणपति पधराविया, जे सकळ मगळरूप;
गोत्रज केरी स्थापना, करी पुज्या दशरथ भूप.
चार कन्या चार वरने, पीठीचोळे अग;
स्नान विधिये कराविया, धर्या अलकार उमग.
राय जनकने घेरथी, आवी लेइ कलुवो नार;
ते गीत मगळ गायछे, आनद हरख अपार.
ते केवी शोभे कामनी, कवि उपमा दे सार;
जाणे शाति करुणा दया, क्षमा धृति उन्मनी अविधार.
सदबुद्धि सदविद्या तितिक्षा, समाधि श्रद्धा विनीत;
मुमुक्षुता तुरीया उपरती, सदगति सुनीत पुनीत.
एवी राममदिरमा प्रवेशी, सुदरी शुभ काम;
त्यारे वरघोडानो समे हवो, ततपर थया श्रीराम.
ते समे जनके तेडवा, मोकल्या निज प्रधान;
ते आविया श्रीराम पासे, सकल शोभा मान.
जाणे सदविवेकने बोध, आनद ज्ञान तप वैराग;
परमारथ निष्काम निश्चे, सतोषने अनुराग.
वररायने शणगारिया, जरकशी जामा अग;
तिलक मृगमदनां कर्यां, कुमकुम अक्षतसग.
मेश बिदु टीधा आख आजी, करमा श्रीफळ पान;
वर राय वरघोडे चड्या, ततपर थइ सहु जान.

वरघोडानी देशी.

ततपर थइने उघलिया श्रीरामजी, मुनिवरने लाग्यापाय.
रघुवरनो घोडे चड्या.
तोखो तोरग चालेरे नाचतो, नीज बधुसहित रघुराय. रघु०
अगोअगनी शोभारे शी कहु रे, जोतां लाजे कोटीक काम. रघु०
लक्षणवंता लघुवेशे वीराजता, त्रण बंधुनी आगळ राम. रघु०
तोरा कलगी मुगटपर झळकती, उपर मुगताफळना खुप. रघु०

थाके वरणवतां शेश सारदा, शुं विखाणुं सुंदर रूप. रघु०
शोभे दशरथ सहु जनसाथमां, ग्रही चाले गुरुनो हाथ. रघु०
जोइ शोभा चारेरे पुत्रनी, ब्रह्मानंद माने नृपनाथ. रघु०
मोड बांधी माताओरे चालती, ग्रही नामणदीवो हाथ. रघु०
गीत मंगळ मधुरां गायछे, चाले सरव राणीनो साथ. रघु०
वाजे वाजित्र नाना प्रकारनां, नाचे अप्सरा गांध्रवगाय. रघु०
बंदीजन बहु कीर्ति वखाणता, जयजयकार मंगळ धुनिथाय. रघु०
नभ देवोनां दुंदुभी गडगडे, सुर जोतां चढीने विमान. रघु०
देइ आशीश पुष्प वर्षावता, सुर अंगना करती गान. रघु०
जुवे नरनारी सर्वे नग्रनी, वधावे भरी मोतीडे थाळ. रघु०
हरखी नरखीने लेछे ओवारणां, घणु जीवजो दशरथ बाळ. रघु०
आगळ सविला सरवे शोभता, छेलछबील राजकुमार. रघु०
जरी.जीन मणीना मोहोरडा, रत्नजडीत पलाण तोखार. रघु०

चाल चातुरियोनी.

बरराय तोरण आविया ते अश्व उपरथी उतर्या;
मणि बाजठ पर उभा रह्या आव्या आचारज हरखे भर्या.
सुनेना राणी जनकनी, सुमतीने कुश केतु तणी;
ते बन्यो आवी पोखवा, गाय गीत गोरी अतिघणी.
शतानंद वसिष्ट कौशीक, आदे मुनिवर आविया;
विधिये करी पूजन कराव्युं, चारेवर पोंखाविया.
मधुपर्क विधि वेहेवार सरवे, आरती वरनी करी;
एम पुरुषोत्तमने पोंखिया, राणियो अतिहरखे भरी.
त्यां मंडपमां छे माहेरु, बाजठ कनक मणिना धर्या;
वर रायने पधराविया, आचार कुळरीते कर्या.
सहु भूपने बेसाडिया ते, मंडपमां आदर करी;
एक खंडमां मरजादथी, त्यांहां बेसारी सहु सुंदरी.
पुरजन पुरीजन ज्ञाति, गुरुजन बेठा मंडपमां मळी;
सहु लग्न रचना जुवेछे, वाजित्र बहु वाजे वळी.
कनक झारी जळभरी, लावी राणी सुमेधा वाहालमां;
पग पखाळ्या वरना विदेहे, कनक केरी थाळमां.

यज्ञोपवीत पेहेरावियां, ते वेदमंत्रे अनुसरी;
जनके ते वरने पूजिया, पछे षोडश उपचारेकरी.
लग्न घटिका साधे गणक, घडीयाळ बांधीने तदा;
पछे पधरावी अहां चार कन्या, शणगारीने सरवदा.
सावधान वाणी विप्र बोले, अंतरपट आडा धर्या;
मंगळाष्टक उच्चार करता, मुनीमन हरखे भर्या.
ज्यारे लग्नघटिका पुरण थइ त्यारे, वेद आचारज भणे;
मंगळाक्षत मंत्रीने कर, आप्या वरकन्या तणे.
कन्याकेरे शीश चरणे, वरे मुक्या ते जदा;
पछे वरतणे पदशीश अक्षत, कन्याये मुक्या तदा.
एम वेदविधिये लग्न थाय, कर्यो हस्तमेळाप;
स्वस्तिवाचन बोलता, वरमाळ घाली आप.
एम चार कन्या करी अरपण, जनक भूपे त्यांहि;
मंगळ तुरी वाजित्र जयजय, थाय मंडपमांहि.
रामसीता परणिया, उर्मीलाने लक्ष्मण वर्या;
शत्रुघन श्रुतकीरतीने, माल्वी भरथ हरखे भर्या.
मंगळफेरा फरेछे वर, कन्या हरखे अति घणुं;
शेष नाग न कही शके, अतिशोभा सुख ते समे तणुं.
मणिथंभमां प्रतिबिंब भासे, फरे वरकन्याय;
अलंकार अंगे झळकता, शी वरणवुं शोभाय.
जाणे चार अवस्था शोभिये, अभिमानी साथे जेम;
एम फेरा फरतां ते समे, वरकन्या शोभे तेम.
चार मंगळ वरतियां, जनके कर्यां बहु दान;
वळी जाचकने आप्युं घणुं, धन विप्रने देइ मान.
शाखोचार[1] करे परस्पर, आचारज तेणी वार;
कुळरीतथी वर कन्या वळतां, आरोग्यां कंसार.
होम हुताशनमां कर्यो, गोत्रज पूजा परसन;
एम वर कन्या परणी रह्यां, पछे कराव्युं ध्रुवदरशन.

---

[1] गोत्रोचार.

गुरु चरण नमिया भावशु, रघुवीर साथे भ्रात;
पछे पिताने पाये नम्या, पदवदना करी मात.
मिथुलापतिना कोड पोहोच्या, हरख्या दशरथ भूप;
वखाणे छे जन सकळ जोइ, वरकन्यानु रूप.

वलण.

वरकन्यानु रूप जोइने हरखे सहु नर नाररे;
दुदुभि वाजे देवना थइ रह्यो जयजयकाररे.

अयोध्याकांडमांथी.

हावे श्रोताजन सहुभावे सुणजो अयोध्याकाड विचार;
राज्य तजी रघुवीर नीकळ्या वनमा ए विस्तार.
श्रीराम लक्ष्मण भरथ शत्रुघन परणीने आव्या घेर,
उछवमा दिन जाय सरवना सहुने लीला लेहेर
त्रण वीर रघुवीरने सेवे भक्तिश्रद्धा सहित;
माता पितानी आज्ञा पाळे अधरम कपट रहित.
चार वधुनी चार वधु ते पाळे पतिव्रत धरम;
सुरपति सुखथी कोटी गणु सुखभोग भोगवे परम.
सासुतणी आज्ञामा रहेता कुळवधु धर्म समेत,
भेदरहित माताओ सरवे, सहुनु सरखु हेत.
एम घणा दिवस वीत्या महासुखमा, साचवता निजधर्म,
पितानी आज्ञा प्रमाणे करता, राज काजनु कर्म
हवे केकेकेरो बधु कहीए, सग्रामजीत एवु नाम;
ते एकसमे आव्यो पुर मध्ये, भूपति केरे धाम.
ते चार मास रही निजपुर जावा, थयो ततपर जेणीवार;
त्यारे केके साथे बोल्यो वचन, सग्रामजीत तेणीवार.
भरथ शत्रुघन बन्यो बाधव, मोकल मारी साथ;
थोडा दिवस हु राखीश माटे, वेनी साभळ वात.
त्यारे केके कहे हु शा कहुं, पण रायने पूछो पेर;
जो भूपति आज्ञा आपे तो, तेडी जाओ तमारे घेर.

त्यारे मामाए कह्यु महिपतिने, सुणो भूपति मुज वचन;
आज्ञा आपो तो तेडी जाउ, हु भरतने शत्रुघन.
मोसाळमाहे गया नथी कोई, दिन माटे मनोरथ मन;
एक मास राखीने वळता, सोंपीश तमने तन.
एवा वचन सुणीने दशरथ रायने, जळभरी आव्यु नेण;
भरत शत्रुघन पासे तेडावीने, राजा बोल्या वेण.
सुणो पुत्र आ मामो तमारो, आग्रह करेछे अपार;
माटे थोडा दिवस जइने रहि आवो, मोसाळमा निरधार.
जो ना कहीये तो तमारी मातने, दु ख लागे मनमाहे;
मामो तमारो रीसावे माटे, जइ आवो सुत त्याहे.
एवु कही राये ह्रदेशु चाप्या, गदगद थइ बहु पेर;
जावो बाप सुखे एक मास रहीने, आवजो पाछा घेर.
भरतने भाव जवानो नथी, मुकी रामलखणी सेवाय;
पछे मात पिताशु भरतज बोल्या, कर जोडी नामी पाय.
श्रीरामनी सेवा समागम पाखे, मुजने रुचे नहि अन्न;
राम विजोगे एक क्षणु ते, कोटी कल्प समान.
श्रीरामचद्र हु चकोर चातक, रघुपति जळधर रूप;
मुज मन कज सदा प्रफुल्लित, रहे राघव दिनकर भूप.
रामसुरभी हु वत्स कहोते, विजोग केम करी सहेशे;
कल्पवृक्षना विहगमते वळी, बबुल उपर नर बेसे.
एवु कही गदगद कठ थयाने, आसु आव्या लोचन;
त्यारे कैकैये कह्यु एक मास रहो, वेहेला आवजो तन.
त्यारे भरते मातपितानु वचन, ते लोपायु नहि त्याहे;
पछे सत्वर थइ ने वीरज आव्या, रघुपति बेठा त्याहि.
श्रीरामचंद्रने चरणे लाग्या, भरतने शत्रुघन;
त्यारे रामे उठीने ह्रदेशु चाप्या, दीधु आलिंघन.
मोसाळ जवानी आज्ञा लीधी, साथे घणी सेनाय;
मातुळसाथे रथमा बेशीने, भरत शत्रुघन जाय.
एम बन्यो वीर मोसाळ गया पण, मन रघुवरनु ध्यान;
रामलक्ष्मण ते घेर रह्या छे, वीर बन्यो बळवान.

चलण.

बळवान बन्यो रक्षा मंदिर, रामलक्ष्मण वीर रे;
नीति धरमने चलावेछे, धरम धोरीधर धीर रे.

राग सामेरी.

मोसाळमांहे गया बन्यो भरत शत्रुघन;
श्रीराम लक्ष्मण रक्षा मंदिर वरते निरमळ मन.
नित्य सेवता गुरुचरण पंकज धरम पथ पळाय;
वसिष्ट मुनिना मुखथकी सुणता पुराण कथाय.
सभा करी एक समे बेठा राय दशरथ भूप;
रंगमंडपमांहे बेठा गुरुसहित अनूप.
त्यारे जोवा विद्यानी परीक्षा तेडया लक्ष्मणराम;
पछे कळा जुद्धनी देखाडी सहु पोते पूरणकाम.
अस्त्र शस्त्र अनेक विद्या सफळ मंत्रज जेह;
मल्ल मेष महिषनु जुद्ध करी देखाड्यु तेह.
प्रसन्न थाय घणु रायजी जोइ पुत्रनो परताप;
त्यारे सकळ गुणसंपूर्ण जाण्या रघुवरने आप.
ए प्रकार आनंदमां दिन जायछे सुखमांहे;
रघुवीरने सेवता भावे जनक तनया त्यांहे.
एकवार बेठा मंदिरमां अजपाळनंदन जेह;
निजमुखने अवलोकता आदर्शमांहे तेह.
त्यारे करण आगळ केश शिरनो श्वेत दीठो राय,
उदाशी आवी अति घणी मनमांहे थइ चिंताय
जाण्यु जरा आवी यात कहेवा चेतावा नरदेव,
एम विचारी वसिष्टगुरुने तेडाव्या ततखेव.
गुरुने कहे हु छता हवे करे रघुवरराज;
संकल्प मारे मन थयो ते करो गुरुमहाराज.
अभिषेक रघुवरने करी शुभ लग्न जोइ आज;
रामने देउ राज करता थाय मारु काज.

---

१ दशरथ

गुरु कहे तमो रुडु विचार्यु घटे एमज भूप;
साहित्य सरवे करावो ए जथाजोग्य अनूप.
त्यारे दशरथे तेडावियो रघुवीरने एकांत;
पासे बेसाडीने कह्यु निज मन तणू वरतांत.
हे राम मुजने एम भास्यु कहु सत्य वचन;
थोडा दिवसमा जाणु हवे पडशे माहारु तन.
मुज मरण चिन्ह जणायछे माटे राम करय तु राज,
तमे तमारु सभाळो पुरदेश घरनु काज.
एहेवा वचन शुणीने भूप चरणे नम्या श्रीरघुराय;
माहाराज जे कहो ते करु शिर चढावी आज्ञाय.
पछी राजाये सहुने तेडाव्या पोताना परधान;
साहुकार सरवे नगरना ते बोलाव्या देइ मान.
दरबारना अष्ट अधिकारी आदे सरव सभाय,
ते सरव साभळता पछे बोलिया दशरथ राय.
भाइ सहु सभाजन साभळो मेहे मनविचार्यु आज;
माटे पच सहुने गमे तो रामने आपुं राज.
एहेवु सुणी सरवे हरखीया ध य धन्य हे राजन;
ए काज तो रुडु विचार्यु अरे रिपुनाशन
वसिष्ट आदे सरव ऋषिये महुरत आप्यु सार;
चैत्रसूदी सप्तमी शुभ गुरु पुष्य योग विचार.
साहित्य सहु ततपर कराव्यु वशिष्टे तेणीवार;
उपलक्षण आणि मेळव्या अभीषेकनो ऊपचार.
चारदतनो उज्वळ हस्ती श्वेत हय शुभ अग,
नविन सिंहासन कनकनु छत्रचामर सग.
सप्तपल्लव पचमृत्तिका च्यार समुद्रनु वार,
मोहोटा विमने जप करवाने बेसाड्या निरधार.
सहु नगरने शणगारियु घर चौटा शेरीपोळ;
नर नारी अति हरखे भरया थइ रह्यो रग झकोळ.
पेहेले दिवसे वशिष्ट गुरुये आज्ञा आपी तास,
श्रीराम सीता बनेजणने कराव्यो ऊपवास.

केकै कौशल्या सुमीत्रा मन हरखनो नहि पार;
सुखवंत सरवे राणीयो आपती दान अपार.
वारणे मंडप रोपियो गुणिजन करेछे गान;
बहुरंग तोरण बांधियां झळके विचित्र वितान.
एम करतां निशा थइने सुरज पाम्यो अस्त;
त्यारे कुशासनपर राम सीता पोढीयां थइ स्वस्थ.
सिंहासन उपर प्रभाते बेसशे रघुराय;
सौं लोक आनंद पामियां देवने थइ चिंताय.

रागसोरठनी चोपाइ.

शुणो श्रोता एकचीत्ते करी, थइ रजनी दिवस गयो अनुसरा;
त्यारे राजा दशरथ तेणीवार, आव्या केकैना भोवन मोझार.
दासी मंथराने पुछयुं कथी, क्यांहां गइ राणी देखाती नथी;
त्यारे कुबजा बोली रीसे चडी, ओ पेली तमारी राणी पडी.
राजा दशरथ आव्या पास, इहां केम बेठींछुं थइने उदास;
मीठे वचन बोलावे राय, तेम तेम राणी अवळी थाय.
हस्त स्परसवा मांड्यो जदा, राणीये कर तर छोड्यो तदा;
पछे रुदन करवा मांड्युं घणु, न जाण्युं कपट राये ते तणुं.
बोल साचुं तुंने माराशम, तुं रीसाइने रडेछे केम;
आंसुधाराये भींजे रुदे, रुदन करंती राणी वदे.
हुं नहि बोलुं तमारी साथ, जाओ शुं करवा आव्या नाथ;
हेत तमारुं जाण्युं राय, तमने हुं आपीश हत्याय.
त्यारे राजा केहे आवडुं कां करे, शामाटे दुःख मनमां धरे;
जो कोइये दुभी होय तुने, तो देउ दंड साचुं केहे मुने.
माग्य माग्य जे मागे तुंय, सत्य वचनथी आपुं हुंय;
हुं सरखो स्वामी ताहरे, नथी न्यूनवस्तु माहरे.
वळती केकै बोली वचन, क्येम जाओछो भुली राजन;
गया जुध करवा व्रशपरवा साथ, हुं तमसंग आवी नाथ.
त्यारे आप्यांछे जुगलवचन, ते आज मुजने आपो राजन;
राजा कहे मागी ले सुखे, सत्यवचन ना नहि कहुं मुखे.

त्यारे केकै केहे वनमा जाय राम, चौद बरस लगी रेहे ते ठाम;
माहारा भरतने आपो राज, ए बे वचन मागुछु आज
एवु वचन सुण्यु जेटले, व्याकुळ राय थया तेटले,
ज्यम व्रजवीजळी आवी अडे, ज्यम शिरपर पर्वत तुटी पडे.
ज्यम वेहेरे काळजु करवत धार, एम दशरथने दुख थयु अपार;
प्रलय अग्नि केकेनु वचन, बळी गयु रायनु आयुशवन.
पड्या भूपति पृथ्वीमाहे, आख्ये आसु धार चाली जाहे,
अग मोडीने बेठा थाय, खोळा पाथरी केहेछे राय
अरे प्रीये कइ बीजु माग्य, एविन आपु धरी अनुराग;
माहारो राम कोमळ सकुमार, शीद मोकले वन मोझार.
नहो करे रामराज वेहेवार, भरतने सोंपु सहु घरबार,
ए राज भरत करे सर्वदा, राम घेर नेत्री रेहे सदा.
ए बाळकने शीद काढे वन, छे घणु रामनु कोमळ तन,
एम दीनवचन कह्या राये जदा, त्यारे केकै घुरकी बोली तदा
शु अधरमी हो राजन, लागशे रवीकुळमा लाछन,
सत्यवचन नहीं पालो सार, तो पुरवज पडशे नरक मोझार.
केकैवचन ते वाग्यु बाण, भेद्यु हृदे जेम जाय प्राण;
मुरछीत थइने पडिया राय, नेत्रथकी जळ चाल्यु जाय.
एम स्त्रीवश राजा थया, वचनबधमा आवीगया;
अचेत थइ पडिया राजन, नव जाणे बीजु अन्य
रजनी ते महादुःखमा गइ, अरुण उदेनी वेळा थइ,
गुरु वशिष्ट वेहेला उठिया, सभामाहे सत्वर आविया
सुमतने कहे जा घरमाहे, वेडी लाव्य राजाने आहे;
सुमत चाल्यो तेणीवार, आव्यो केकैना भोवनमोझार.
दशरथ राजा पडिया ज्याहा, सुमत आवी उभो त्याहा;
प्रधाने चरण वद्या नृपतणा, दीठा रायने दुखिया घणा.
विकळवेश मुके निश्वास, नेत्रेजळ अतिवदन उदास;
मत्री बोल्यो करी विनती, सभामाहे चालो भूपति.
सरव साहीत्य तत्पर कर्यु आज, तमने बोलावे गुरु महाराज;
वचन सुमत तणा साभळी, राये रडया माड्यु वळी.

अरे सुमत सुण्य कहु आदीश, मारु मरण आव्यु छे शीश;
ते माटे उतावळो जइ आव्य, तु अही रामने तेडी लाव्य.
सुणी रायना शोक वचन, सुमतने दव लाग्यो तन,
पड्यो त्रास मुख उडी गयु, न जाणे रायने शु दुख थयु
चितातुर थइ मत्री एह, रामधाम भणी चाल्यो तेह,
जेम कळाहीन ग्रहणे रवी थाय, एम थइ निस्तेजने सुमत जाय;
ससार तापे तपियो जन, जेम आवे मुमुक्षु सत सदन

वलण

सत सदन आवे मुमुक्षु, आत्मप्राप्ति सुख काजरे,
एम सुमत आव्यो उतावळो, ज्या विराजे श्री रघुराजरे.

(વનમા જતી વેળાભાની મુલાકાત)

राग गोडी

त्यारे मात कौशल्याजी बोलीया, हो वालारे,
तुने नही जावा देउ वन   युवरजी कालारे
घणी कोमळ छे ताहरी देहडी,   होवा०
मारा लाडकवाया तन   कुवर०
तुने गुप्त राखु मारी वाडीमा,   होवा०
बीजु खबर न जाणे जेम   कुवर०
मेहे तो तुजविनारे रेवाय नहीं,   होवा०
मुने मुकीने जाशो केम   कुवर०
पाये ककर कटक खुचशे,   होवा०
नहीं चलाये वसमी वाट   कुवर०
वेठवी शीत आतप ने तृषा,   होवा०
केम ओळगशो गीरी घाट   कुवर०
व्याघ्र सिंह वनमा घणा,   होवा०
सर्प सौहरने वृक रक्ष   कुवर०
रजनीचर साथे ‍युध थशे,   होवा०
कोण करशे तमारो पक्ष   कुवर०
वनमा वनकुळ केम पेहेरशो,   होवा०

---

१ कुवर

तजी वस्त्र आभुषणसार   कुवर०
इहा जमता भोजन भावता;   होवा०
केम करशो वनफळ आहार.   कुव०
तजी सज्जा भमर पल्गनी;   होवा०
केम पोहोढशो पृथ्वीमाहे.   कुव०
ताहारे बाळपणामा वनकष्टु;   होवा०
मारु वचन मानीरहो आहे.   कुव०
मारे कीया जनमना करम हशे;   होवा०
ते आवीने नडिया आज.   कुव०
ते दैवे रगमा भग कर्यो,   होवा०
टर्यु वन तजीने राज.   कुव०
वात साभळी सब जना तणी;   होवा०
वेहेरे करवत काळजा माह.   कुव०
'दव लाग्यो मारा अगमा,   होवा०
हवे नाशीने जइए क्याय.   कुव०
मारो पापी प्राण जतो नथी;   होवा०
हशे कोण करमना भोग.   कुव०
एम कहीने रुवे रुदे फाटते,   होवा०
केम सेहेवाय पुत्रविजोग   कुव०
एवा वचन शुणी बोल्या रामजी, हो मातारे;
तमे धीरज राखो मन, शुणो सुखदाता रे.
पाछो आवीश थोडा दिवसमा;   होमा०
आपो आज्ञा हु जाउ वन   शुणो०
मारे आज्ञा पितानी पाळवी;   होमा०
रेहेवु चौद वरश वनमाहे.   शुणो०
अवध वीत्या पछी नहीं रहु;   होमा०
वेहेलो आवीश नीजपुरमाहे.   शुणो०
नव वचन मिथ्या करु तातनु;   होमा०
जो पश्चिम उगे सूर.   शुणो०
जे माता पिता गुरु देवनु;   होमा०

नव पाळे आज्ञा वचन. शुणो०
ते प्राणी जीवता मुवा जाणजो; होमा०
अजाकठे जेवो स्तन. शुणो०
तेनो मिथ्या धरम सहु आणजो; होमा०
जेवु कपटी केरू ध्यान. शुणो०
जेम अदातानु उचु मर्दार; होमा०
जेम लोभियानु तत्वज्ञान. शुणो०
एम मनुष्य देह तेहनो मिथ्या; होमा०
जेवो उदरमाहे क्रमीजत. शुणो०
जेणे मातपितानी आज्ञा पाळी; होमा०
शुभ पुत्र ते सुकृतवत शुणो०
ते माटे मेरे रेहेवाय नहीं; होमा०
जाय तातनु सत्यवचन. शुणो०
हवे आशिष देइ आज्ञा आपो; होमा०
निश्चे जावु मारे वन. शुणो०

वलण.

वनमा माहारे निश्चे जावु, आज्ञा आपो मातरे;
एहेवु साभळी कौशल्याये, करवा माड्यो आसुपात रे.

राग आशावरी.

श्री रामचद्र आव्या निजमदीर जोयु ज्यानकीये रूप;
राज्य चिन्ह काइये नव दीठा, उदासी त्रिभुवन भूप.
कमळनेत्र आरक्त थयाछे करमायु मुख गात्र;
पछे करूणावचने सीतानी साथे बोल्या जनक जामात्र.
सुणो साधवी केकैये माग्यु रायनी पास वचन;
ते माटे अमो वर्ष चतुर्दश जइने रहीशु वन.
पितानी आज्ञा पाळवी निश्चे मारो एज धर्म;
ते माटे तमो रेहेजो मदिरमा माता पासे पर्म.
सर्व मातनी सेवा करजो पाळजो धर्म अशेष;
केकै कौशल्या सुमित्रामा नव अतर गणशो लेष.

सदा काळ अहीं रेहेजो सुंदरी न जाशो सातने घेर;
एहेवां वचन सांभळी ज्यानकी वळतां रुदन करे बहुपेर.
अहो नाथ हु दासी तमारी विजोग नव सेहेवाय;
तमविना हु केम रहु एकली एक घडी जुग थाय.
जळविना जळचर केम जीवे जो करिये कोटी उपाय;
हुं छाया तमारा देहतणी प्रभु कहो केम अळगी थाय.
कनक कान्ती जेम दीपशीसा रवीरश्मि सदारहे पुरी;
ते कल्पान्ते विलक्षण न थाय जे परीमल ने कस्तुरी.
एम हु तमथी केम रहु वेगळी सुणीये श्री रघुराय;
जेम सदा विवेक साधुनु रुदे तजी कल्पांते नव जाय.
तमविना मदिरमा हु नहीं रहु स्वामी सुणो सुखराशी;
ते माटे मुने साथे तेडो सेवा करवा दासी.
त्यारे राम कहे तमो आव्येथी मने थाय घणो जंजाळ;
कोमळ चरणे चलाशे नहीं वळी वनमां सिंह ने व्याल.
आतप शीत वृपागीरी कंटक केम सेहेवाशे दुख;
सीता कहे तमने दुख स्वामी तो मारे क्याथी सुख.
मन मारु मधुकर छे ते तम चरण कमळ अनुराग;
जो स्वामी साथे नहीं तेडो तो हुं करीश देहनो त्याग.
सीतानां एवां वचन सांभळी संतोष्या मन राम;
अरे प्रिया तमो पुछो गुरुने जो आज्ञा करे अभिराम.
गुरु आज्ञाये तेडी जाउ तो कोइ न करे निंदाय;
लोकतणो अपवाद न लागे काज सिद्धी थाय.
त्यारे गुरुने कहाव्युं जनकसुताए आव्या ततक्षण मुन्य;
आसन पूजन चरणे नमीने सीता बोल्यां वचन.
हु स्वामी साथे वनमां जाउ छु करवा पतिसेवाय;
माटे आज्ञा आपो गुरु नाथ विजोगे में एकलां नव रेहेवाय.
एवुं सांभळी गदगद कंठे थया गुरु आंसु आव्यां लोचन;
पछे मुनि वसिष्ट रघुवरनी प्रत्ये बोल्या परम वचन.
अहो राम तमो तेडो निश्चे जनकसुताने साथ;
लक्ष्मणने पण तेडी जाओ निजसंगे श्रीगुरुनाथ.

(પછી ત્રણેજણને વનમાં મૂકીને સુમત નામે સારથી પાછો વળ્યો)

राग वेराडी.

सुमत सचर्योरे, मारगे करतो जाय रुदन;
रथ हाकी वळ्योरे, पस्ताय छे अति घणु मन.
अरे हु अभागियेरे, वनमा मुकीने आव्यो राम;
मुने जननीए जनम्यो वृथारे, करवा आवु निरदय काम.
देखशे रथ रामविनारे, पामशे मात पिता घणु दुःख;
ज्यारे मने पुछशेरे, त्यारे हु शुं देखाडीश मुख.
सुमत एम शोचतोरे, रोइ रोइ राता थयां लोचन;
अश्रु झरे घणुरे, पग पाछा पडे दुरबळ तन.
अवधपुर आवीयुरे, दीठी नगरी प्रेतसमान;
लोक सहु रुदन करेरे, जे ज्या ते त्या मुकी भान.
ज्यारे राम वन गयारे, पुरमाहे पडी छे हडताळ;
देह जेम प्राणविनारे, एम थइ अवधपुरी ते काळ.
प्रधान परवर्योरे, पुरमा ढाकी पोतानु मुख;
केकैने आगणेरे, रथ छोड्यो थयु अति घणु दु:ख.
मदिरमा मत्री गयोरे, ज्या छे दशरथ भूप सुजाण;
सहुसाथ विंटीवळ्योरे, रायना कठे आव्या छे प्राण.
सुमते त्यां जइरे, कीधो रायजीने परणाम,
भूपति बोलियारे, सुमत क्या मुकी आव्यो राम.
लक्ष्मण जानकीरे, प्राणवल्लभ मारो रघुवीर;
मारु सरवस धन गयुरे, हवे हु केम करी राखु धीर.
सुमत तें शु कर्युरे, रामने शीद मुकी आव्यो वन;
मदिर मारु ऊजड थयुरे, कोणे फोड्या मारा लोचन.
हु अधनी लाकडीरे, रामने चोरी गयु कोण आज;
दैवे दुःख दीधु घणुरे, में शा कीधा हशे कुडा काज.
मुने मुकी क्या गयारे, आवो मारा राम कुवर सुकुमार;
मारी आज्ञा कोण पाळशेरे, कोण चलावशे राजवेहेवार.
वैदेही क्या गइरे, सुदर चपकळी सुकुमार;
आवो मारी मावडीरे, में तने दीधु दुःख अपार.

हवे मुख नथी देखतोरे, लाडकवायो लक्ष्मण वीर;
आवो डाह्या दीकरारे, मारू तन मन धन रघुवीर.
हे विधि तें शु कर्युरे, लुटी लीधु देखाडीने सुख,
आवु कोने थाय नहिरे, हाहा दैवे दीधु घणु दु:ख
बाळक बाळपणेरे, मे पापीए काढ्या वन,
सुमत साचु कहेरे, क्या मुकी आव्यो प्राणजीवन.
क्या लगी सग कर्योरे, क्याथी तु पाछो आव्यो घेर,
रामे त्या शु कर्युरे, ते माडी कहे मुजने पेर.
सुमत थयो गळगळोरे, नेत्र सनळ थइ बोल्यो वाण,
महाराज मे घणु कह्युरे, पण पाछा न वळ्या पुरुषपुराण.
हु शृगवेल सुधी गयोरे, त्रण दिवस लगी रह्या निराहार;
मुने पाछो वाळियोरे, गुहके उतार्या गगापार.
दक्षिण दिशा भणीरे, गगा उतरीने गया राम,
तमने घणा करीरे, रघुपतिये कह्या छे प्रणाम
शुणी एवु भूपतिरे, रउरउ लाग्यो हुताशन,
गाढे स्वर थकीरे, राये कीधु शोक रुदन.
कठ मळीगयोरे, अग पछाडे अवनी माहे,
राम वियोगनोरे, अगे अग्नि लाग्यो साहे
आरत नादथीरे, पोकार्युं राये रामनु नाम,
देह मुकी दशरथेरे, प्राण गया कहेता हे राम.

वलण

रामराम रघुवीर कहेता, तज्या भूपे प्राणरे,
हाहाकार हवो तदा, सहु रूदन करे निरवाणरे

रावणसाथे युद्धनुं वर्णन.

राग सोरठ.

जीतवा रावण रायने रघुवीर, चड्या तेणीवाररे,
सहु कपि तणो सरदार सुग्रीव, सै यनो नहि पाररे.
हनुमत स्कधे राम चढिया, पाच शर ग्रही हाथरे,
जेम गरुडउपर श्रीपती, एम शोभता रघुनाथरे.

अंगद केरे स्कंध बेठा लक्ष्मणजी तेणीवार;
जेम ऐरावतपर इंद्र शोभे नंदीपर त्रिपुरार.
विशाळ वृक्ष उपाडीने कपीए ग्रह्या करमांहे;
ते छत्र करता रामने नव पल्लव चमर त्यांहे
जय बोलावी रघुनाथनी दळ चाल्यु दक्षिण देश;
चिं.कार करता चालता गिरिसम कपीना वेश.
भुभुकार नाद हुंकार करता कूदता बळवान,
करमांहे गिरि उछाळता, ते कुसुम गेंदसमान.
केटला कपिये वृक्ष झाल्या केटला पाषाण;
केटला कर नख दंत करडे करे महा बुवाण.
जय जय धुनी कही गर्जता पद प्रहार भुजे धर्ण,
सिंधुजळ उछळ्या सुरज थयो धुंधळ वर्ण.
दिग्गज डग्याने शेष सळक्यो भूमि न सहे भार,
एम चाली सेना रामनी कहेता न आवे पार.
जोजन दश विस्तार पोहळी कपी सेना जाय;
मारगतणा पाषाण तरु ते भग्गी भूको थाय.
एक एकना शिर विषे पग देइ कूदता कपीताश;
को पृथ्वी उपर हिंडता को उडता आकाश.
जयराम जयजयराम कहीने गर्जता महा वीर;
एम कपि सेनासहित आव्या राम सागर तीर.
दश योजनमां उतरी सेना शोर थाय अमीत,
भुभुकार व्याप्यो दश दिशा सिंधु थयो भयभीत.
ते खबर थइ लंका विशे ज्यां बेठो रावण राय;
श्रीराम आव्या सागर तीरे लेइ कपि सेनाय.
एवु सांभळीने दशानन तब चमकियो मनमांहे;
सभाविशे तेडाव्या सहु जे अधिकारी त्यांहे.
इंद्रजीत आदे पुत्रने वळी प्रहस्त आदि प्रधान,
ए विना अन्य असुर तेडाव्या सभामां देइ मान.
ते सरवसाथे विचारवा लाग्यो रावण भूप,
भाइ आपणे हवे शु करवु ते कहो समे अनुरूप.

दशरथतणा सुत आविया उत्तर्या सागर तीर;
कपी सैन्य ते साथे घणु हनुमततरखा वीर.
शत्रु सर्पने अग्नि-ग्रव्ये नव गणवा लघु एह;
करे विघ्न ते क्षणमात्रमा माटे धीरिये नहि तेह.
एक वानरे लंका प्रजाळी अक्षे आदि असुर;
ते हणी निरभे गयो पाछो मळ्यु कपीदळपूर.
तेमाटे पुछुं सर्वने कहो हवे करवु केम;
निश्चे विचार कहो सहु मुज कुशळ थाये जेम.
एवा वचन सुणी रावणतणा पछे बोल्या पुत्र प्रधान;
महा क्रोध आणी कहे वाणी करी मन अभिमान.
अरे राय शु चिंता करो ए रामना शा भार;
शु जुद्ध करशे कपी ए नर वानर आपणो आहार.
रामलक्ष्मण मनुष्य बे करी तप थया कृश काय;
कपी भालु रींछ मरकट तेयकी शुं थाय.
आज दैवे मोकल्युं घेर बेठा भक्ष आपणु एह;
तमे निरभे थइ रहो भूपति चिंता न करशो तेह.
एम शक्रजीत अतिकाय देवातक नरातकनी आद;
वज्रदृष्टि महोदर करता घणो बकवाद.
ते समे सभामा विभीषण बेठा हता ते ठार;
रामनी निंदा श्रवण सुणी जन थयो क्रोध अपार.
एवा विभीषण जे विचक्षण तेणे सुण्यो असुर वचन;
पछे सभामाहे बोलिया घणु क्रोध आणी मन.

वलण.

मनमाहे आणी क्रोध बोल्या विभीषण तेणी वाररे;
ते श्रोताजन सहु साभळो कहु संक्षेपे विस्ताररे.

राग विभास.

हे मुरख रावणे तुजने काढ्यो धनुष तळेथी जेणे;
सर्व नृपनो दर्प हरीने कोदंड भाग्यु तेणे.
ते रामने तु सीता सोंपी जइने चरणे लाग्य;
करी वीनती दीन वचनथी अभेदान तू माग्य.

शरणागत वासल छे रघुपति नहि जुवे अवगुण तारा;
माटे सुण रावण ए परम हितकारी बोल मानजे मारा.
जेम औषध कटु लागे पण टाळे मूळ रोग निरवाण;
एम हमणां कठीण लागे मुज वायक परिणामे कल्याण.
आ सरव मळ्याछे कबुद्धि तमने करशे विपरित पेर;
अल्या जाणी जोइने मुरख रावण शोद लायछे झेर.
एम घणां वचन विभीपणे कह्यां ते नीतिनां जेणीवार;
त्यारे प्रधान आदे इंद्रजीतने चढीओ क्रोध अपार.
अल्या विभीपण तुं बोल्य विचारी डाहापण ज्याण्युं तहारुं;
शुं करिये जो राजबंधु छे नीकर हवडां मारुं.
अल्या वाहालो थइने वेर वधारे जा तुं तारे घेर;
जीवतो मुकिये जाणीजोइने नहितो हणिये ठेर.
रावणने कहे जुओ तम बंधु केवळ कहेछे कुडुं;
शत्रुनी पक्ष करीने बोले आपणु इछे भुंडुं.
त्यारे कहे विभीपण तमे सर्व मळीने रावणने कर्यो भ्रष्ट;
राज बोळवा बेठाछो उपजावी कबुद्धि स्पष्ट.
अल्या प्रधान रायने नियमे राखे गजने अंकुश एक;
मंत्र नागने ज्ञान चतुरने ज्ञानीने विवेक.
स्त्रीने लज्जा साधकने गुरु समुद्रने मरजाद;
एम रायने नियमे राखे निश्चे प्रधान रहित प्रमाद.
हवे तारुं राज नहि रहे रावण निश्चे साचुं मान;
तुने संगी सर्वे दुष्ट मळ्या जेम भ्रकनी पासे श्वान.
एवां वचन सुणीने रावण उठ्यो क्रोध करी निरधार;
डावा पगनी पाटु मारी विभीपणने तेणीवार.
अल्या मुरख रामनी पक्ष करे तो जा तुं तेनी पास;
वांधो मारो एवुं कहीने देखाड्यो बहु त्रास.
त्यारे तेणे समे मुकाव्यो आवी रावण केरी मात;
अरे पुत्र तुं राम शरण जा नहि तो करशे घात.
त्यारे रावण कहे जा अहींथी तारुं नथी अमारे काम;
चडावी लाव जे सैन्य जा शुं करशे तारो राम.

एवुं सांभळी विभीषण उठ्या ततक्षण तेणीवार;
चार प्रधान पोताना संगे लीधा ते निरधार.
रावणने कहे विभीषण तुं छे मारो भ्रात;
माटे तुज आज्ञाथी अमो जाउछु राम शरण साक्षात.
एवुं कही विभीषण चाल्या लेइ पोताना प्रधान;
जेम काया छोडी पंच प्राणते जाय जथा अवसान.
कल्पांते महाभूत मळे जेम स्वरूपमां निरधार;
एम विभीषण त्यांथी उठी चाल्या साथे मंत्री चार.
जेम वायस केरा मेळामांथी उठी जाय मराळ;
खळ निंदक केरी मंडळीमांथी उठे साधु दयाळ.
एम चार मंत्रीशुं चाल्या विभीषण राम शरण निरधार[1];
उरध पंथ उड्या पांचे जण आव्या सिंधु पार.
पृथ्वी उपर उतरी उभा सेना तणे प्रदेश;
पंचे राक्षसने जोइने भय पाम्या कपी अशेष.

वलण.

अशेष वानर भय पाम्या जोई राक्षस देह दीरघ घणी;
पछे विभीषण कर जोडीने उभा करे विनति कपिवरतणी.

ढाळ.

एवां विभीषणनां वचन सुणी थया चकीत कपीवर मात्र;
ततकाळ आव्या खबर कहेवा ज्यां छे शामळगात्र.
समुद्र कांठे सभा करीने बेठा श्री रघुवीर;
अष्ट जूयपति सुग्रीव आदे सुमित्री रणधीर.
महाराज रावण तणो बंधु कनिष्ठ विभीषण जेह;
अति दीन थइ करे वीनती तम शरण आव्यो तेह.
एवुं सुणी जोयुं सुग्रीव सामुं रघुवीरे तेणीवार;
विचार करी रघुवीर साथे बोल्यो अर्ककुमार.
ए रावणबंधु कपट करी अहीं आव्यो होय आज;
कांइ दगो आपणशुं करे त्यारे शुं करिये महाराज.

---

१ सुग्रीव.

जांबुवान कहे प्रभु शरण आव्यो शुद्ध चित्ते नेह;
त्यारे पोतानो तेने करोछो वर्द तमारुं एह.
अंगद कहे ए वात खरी पण तेडावो एने पास;
एने बोलावी ल्यो परीक्षा पछी करो चरणनो दास.
सुषेण कहे समो कठिण छे माटे करो विचारे काम;
ए राक्षस रावण तणो बंधु आव्यो आणे ठाम.
एम करवा मांड्या तर्क बहु बुद्धि तणे अनुसार;
पछी शेवटिये करी गरजना त्यां बोल्या पवनकुमार.
हनुमंत कहे हुं गयो हतो लंकामां एने घेर;
आचरण शुभ छे एतणां हुं जाणु सरवे पेर.
तमो असुर देखो उपरथी मांहे परम साधु इष्ट;
जेम फणस कंटकनुं भर्युं अंतर मधुर स्वादिष्ट.
श्री रामचंदरे करी आज्ञा अंगदने निरधार;
त्यारे तेडी लाव्या विभीषणने कर ग्रही तेणीवार.

युद्ध कांडमांथी.

राग बीलावर.

सभा करीने रघुपति बेठा पासे लक्ष्मण हनुमंत;
सुग्रीव विभीषण पासे बेसाड्या जे राजनीति गुणवंत.
श्री रामचंद्र छे चतुर शीरोमणि समरथ राजधीराज;
राजनीतिनो धर्मज पाळे लोकतणा हितकाज.
सुणो विभीषण युद्ध कर्याविण रावण ते नहि माने;
ए रामजी सीता नहि आपे माटे विलंब करीए शांने.
त्यारे विभीषण कहे महाराज सुणो कंइ धीरज मनमां धरिये;
साम दाम दंड भेद करीने शत्रुने वश करिये.
साम ते शत्रुने समजावी वात न्यायनी कहिये;
कोइ शाणा पासे शीखज कहावी धीरज ग्रहीने रहिये.
ते न माने तो दाम देखाडी करिये लालचथी लाचार;
ते लोभ थकी वैर जाय वीसरी वश वरत्ते निरधार.

ते दाम थकी वश थाय नहि तो करिये कंइ छळ-भेद
ते माया जाळमां मोहज पामे शत्रु वश थाय वेद.
एम कशी वातमां केद न आवे त्यारे देइये दंड;
ते माने नहि पछे मारविना जे मुरखलंपट लंड.
सभा जीते जेम पंडित तेवी जुक्तिनुं बळ धरिने;
पाषाण नीचे कर आवे ते काढिये कळे करीने.
माटे साम भेद करीने समजावो रावणने निरधार;
वष्टि वरवा मोकलो जे होय चतुर शिरोमणि सार.
वायक एवां सुणी विभीषणनां राघव थया प्रसन्न;
पछे सुग्रीव सामुं जोइने बोल्या प्रेमे हेत वचन..
अरे सुग्रीव जुवो आपणा साथमां होय चतुर गुणवंत;
ततक्षण तेने खोळी कहाडो जे जाणे कळा अनंत.
लंकामां तेने मोकलीये शिष्टाइ करवा धीर;
एकलो जइने पाछो आवे एवो छे को वीर.
जेम हनुमंत सिंधु ओळंगी सीतानी शुध लाव्यो;
अनेक विघ्न टाळीने वाटे रथी मुख उपर आव्यो.
एम वष्टी करी रावणनी साथे तुरत आवे आ ठार;
आपणा साथमां होय एवो तेने देखाडो आ वार.
पछी सर्व परस्पर जोवा लाग्या वानर रहेता जेह;
त्यारे विभीषणे दीठो वाळी पुत्रने अंगद बेठो तेह.
जेम रत्नपरीक्षक खोळी कहाडे भारे हळवुं नंग;
तेने जोइने विभीषण बोल्या सांभळिये श्री रंग.
अंगदने मोकलो सर्वथा शिष्टाइ करवा त्यांहे;
ए बळ लक्षण गुण संपुरण छे जाणे नीतिमांहे.
जेम नवग्रहमां दिनकर तेजस्वी शस्त्रमां सुदरशन;
विषधरमां धरणीधर जेवो खगमां हरीवाहन.
एम वानर मांहे चतुर छे अंगद निश्चे जाणो राम;
विभीषणनां एवां वचन सांभळी हरख्या पूरणकाम..
पछी अंगदने आज्ञा करी पोते उठयो तेणीवार;
रघुवरसनमुख कर जोडीने वचन बोल्यो निरधार.

मुने रावण साथे वष्टी करवा मोकल्योछो ते ठाम;
प्रभु एमा ते शु मुजने बताव्यु भारे मोटु काम.
महाराज रजा आपो तो बाधी लावु रावणने आहे,
लका उखेडी उधी करीने नाखु सागरमाहे.
त्यारे श्री रघुवीर हशीने बोल्या थइ चित्तमाहे प्रसन्न;
रावण पासे वष्टी करवा जा तु वाळीतन्न.
जो माने रावण तो सारु केहता नीति विचार,
नहि तो जुद्ध करीने मारीशु अते ए निरधार.
एवु साभळी अगद चाल्यो वदि रघुपती पाय,
ओचितो लकामा आव्यो वाळीपुत्र महाकाय.
सभा करीने रावण बेठो त्या आव्यो बळवत;
अगदने जोईने सहु सभा खळ भळी शु आव्यो हनुमत.

वलण.

हनुमत जाणी भय पाम्या सरवे रावण डर्प्यो मनरे,
सभा स्थभ पुठे राखी अगद करी बेठो पुछासनरे.

राग आशावरी.

रावण केरी सभा मधे आव्यो वाळीकुमार;
ते जोइ सहु भय पामिया करे माहोमाहे विचार.
छत्र मुगट एके पाड्या बाळ्यु नगर हनुमत,
वळी आ को त्रीजो वानर आव्यो दीसेछे बळवत.
त्यारे अगद कहे अल्या परजन आवे मळवाने विख्यात;
ते सभा मुरख जाणजो जे न पुछे आदर बात.
एम कहीने रावण सनमुख बेठो वाळीतन,
स्थभ पृठे राखीने कर्युं गोळ पुछासन.
रावणना करता उचे आसन बेठो थइने धीर;
तृणमात्र लेखवतो नथी ए असुरने महावीर.
त्यारे रावण हशीने बोलियो कहे कपी छे तु कोण;
कोणे मोकल्यो तु केम आव्यो सभामा निरवाण.
वाळीसुत कहे दशाननने मुज नाम अगद आज;
हु दूत श्रीरघुवीरनो आव्यो वष्टी करवा काज.

हवे सीता आपी रामने जो मळो लकाराय;
मृत्यु तमारू उगरे ने राज नीरभे थाय.
हे दशानन आ देह पामी वरते निरमळ मन;
विस्तार पामे जगतमा जश तेनु जीवत धन.
सदबुद्धिए सदविवेके धरिये ते अतर ज्ञान;
सतपुरुषनो सग करीए टाळीये अज्ञान.
नव कहिये कोइने दुष्ट वायक न करिये हेलन;
सरवेनु रुडु चीतविये जेम सुखी होय जन.
पराया गुणने वदिये वळी करिये परउपकार;
आतमा जोइए एक सहु करिये सारासार विचार.
परनिंदा परहिंसा सुपने चीतविये नहि मन;
परदारा परधन विशे चित नव राखिये राजन.
सदगुरु वचन विश्वास धरिये राखिये सदभाव;
सतसमागम नीत सेविये भवसिंधु तरवा नाव.
क्लेश काळ दु ख आवे पण नव मुकीए स्वधर्म;
यथा न्याये राज करिये राखिये शम दम.
दया क्षमा उपरति शाति भक्तिज्ञान वैराग;
आनद सदविद्या समाधी राखिये अनुराग
विद्या धनतन रूप यौवन न करिये अभिमान;
काळे करीने भोग सरवे नाश थाय निदान.
कोइ समे महासुख पामीये त्यारे गरव न करिये वीर;
कोसमे दु:ख दरीद्र आवे मुकीए नहि धीर.
ते माटे हो लकापति मुज वचन मानो सत्य;
रघुनाथ साथे करो प्रीति एज साची मत्य.
हे राम केवळ गुणनिधि वळी दीन वत्सळ एह;
गुण दोष शरणागत तणा मन लावशे नहि तेह.
माटे करो मैत्री सरळभावे धरी मनमां धीर;
एक बाणने एक पत्निव्रत एक वचन श्रीरघुवीर.
ते माटे आपो जानकी करो रामसाथे प्रीत;
नीरभे थकी वरतो पछे भोगवो राज अमीत.

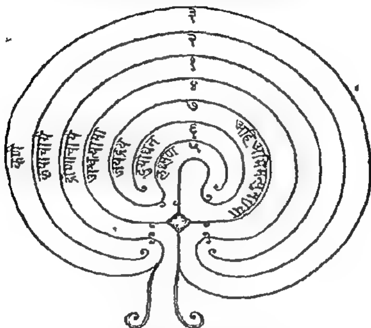
एवां वचन सुणी अंगदतणां बोलियो रावणराय;
अल्या कपी हुं सर्वज्ञ छुं मने शी करे शिक्षाय.
घणी रामनी मोटम करी नुं वखाणे शुं कीश;
पण त्रिभुवनमां मुजसमो कोण छे बळियो ईश.
में वेर बांध्युं राम साथे लाव्यो सीता नार;
हवे जइने हुं मळुं तो करे सहु धिकार.
कहेशे डर्यो ए रामथी जइ मळ्यो रावण राय;
जो पश्चिम उगे सूरपण कपी काम ए नव थाय.
जेम दंत गजना नीकळ्या न चोटे फरी ठाम;
में वेर कीधुं राम साथे शीश साटे काम.
जेम कृपणधन भोरींग मणि सिंहमुछकेरो वाळ;
ते जीवतां कर नव चढे एम जाणजे कपीवाळ.
जइ कहे तारा रामने करगरे नहि थाये काम;
हुं जीवतां सीतातणुं मुख देखशे नहि राम.

वलण.

एम नहि देखे मुख सीतानुं हुं जीवतां निरधाररे;
एवां वचन सुणी रावणतणां पछे बोल्या वाळीकुमाररे.

कवि लज्जाराम.

अमदावादनो ओदिचब्राह्मण.



अभिमन्युना आख्यानमांथी.

पाडवो दुर्योधन साथे जुगटु रमता राज्य वगेरे बधु हार्या पछो छेलो ठराव एवो कर्यो के १२ वर्ष वनमा रहेवु अने १३ मु वर्ष गुप्त रहेवु. जो १३ मा वर्षमा कोइने मालूम पडे तो वळी बीजी वार तेटला वर्ष वनमा रहेवु. एवी सरतमा पण हार्या एटले चार वर्ष सूधी वनमा रह्या अने तेरमे वर्षे वेश बदलीने वैराट नगरना राजाना दरबारमा कोइ ओळखे नहि तेवी रीते रहेवानो विचार कर्यो ते विषे.

कडवुं ९ मुं.

वैशपायन एणी पेर बोल्या, शुण जनमेजय राय;
विस्तारी तुजने सभळावु, भारतनो महिमाय.

अर्जुन वाणि बोलिया, साभळो धर्मकुमार;
तमेज कहो क्यम छाना रहेशो, त्रण लोकमोझार.
देश देशना राजा आवी, नमे तमारे पाय;
तमे कोइने नय नमो, अनम्र तमारी काय.
धर्म वाणी एणी पेर बोल्या, साभळिये अर्जुन;
में मारि जे वात विचारी, तमने कहु वचन
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वर्णने, उपवीतनो अधिकार;
ब्राह्मण वेश धरीने रहीशु, राजसभा मोझार.
सर्व लोक ते मुजने नमशे, दउ सउने आशीश;
मुज शिर अवरने नहि नमे, में पूज्या श्री जगदीश.
कंक नाम प्रसिद्ध हु कहावु, रायतणु मन रजु;
मन गमती सा करू वारता, सभारंड हु भजु.
एणी पेरे हु दिवस निर्गमु, तारु दुख अर्जुन;
रथे बेसारी लाड लडाव्या, सारथी देवकीतन.
शीश नथी नाम्यु ते कोइने, एक विना भगवत;
पराधीन थइ पेटज भरवु, ए दुख नाव्यो अत.
वचन सुणी वडवीर तणारे, कहे अर्जुन सत्य वाणी;
धर्मधुरधर दु ख न आणो, समर्थ प्रभुने जाणी.
वर्ष एक आ व्यंढळ थाशु, सगीत विद्या जाणु,
वैराट रायनी पुत्री भणावु, विद्या सर्व वखाणु.
भीम अर्जुन मळीने बेठा, बोल्या माहोमाही;
बहु अहारी छे भीम महा भड, कहो ते रहेशे क्याही.
अटक बोलो क्याइ गमे नहि, सारे नहि एक बोल;
पराधीन थइ पेटज भरवु, नहि बळ बुद्धि तोल.
वात करे ने सामु जुए, वृकोदर रह्यो विचारी,
आगळ आवीने बोल्यो, शी वात करोछो मारी.
बहु अहारी जे कहोछो मुजने, ते मनमा नव धरशो,
सुखे दाहाडा अमे निर्गमु, चिंता कोइ न करशो.

१ युधिष्ठिर २ नाजर अथवा खोजो, जनानखानानो चाकर ३ भीम

प्रभुये ज्यारे वेळा पाडी, सघळुं क्यांथी सुख;
दुर्योधने पुठ नमेली तो, अर्द्धो वेठिश भुख.
वैराट रायनो थाउं रसोइयो, अन्न सर्व सां रांधुं;
सऊने जमतां शेष रहे, ते अन्न जमुं हुं बाधुं.
ए रिते हुं दिवस निर्गमुं, चितातुर न थाशो;
घडो घडानो ठामज करशो, पेट भर्मेशो सांतो.
भीम भड कही रह्या सांसता, तव पुछ्या सहदेव;
तमे कहो केम छाना रहेशो, पर घेर करवी सेव.
वण पुछे कोइने नव कहेवुं, एह लोक शुं जाणे;
माग्या पाखी मात न पीरसे, तम दुःख को उर आणे.
विमासीने कहो गति मननी, पराधीन थइ रहेवुं;
भुख तरश ने सुख दुख सहेवुं, वचन कवचन वहेवुं.
एवां वचन शुणीने बोल्या, सहदेव तेणीवार;
जे रीते जगदीश राखशे, विश्वतणो आधार.
एक अमो मन घात विमाशी, ते तम आगळ कहिये;
जे रीते सुखे दिन लइये, चरण तमारे रहिये.
वण पुछे उत्तर नव देयो, ते एहज काम करीशुं;
जोश विचारुं गोधन चारुं, एमज पेट भरीशुं.
वंध्या प्रसव वृषभ चिन्ह जाणुं, वण मागे वृत्ति आपे;
कहीश गोप हुं पांडव केरो, गोपालक करी थापे.
सहदेव कहीने रह्या सांसता, कहो निकुळ शी पेर;
गति तमारि कोइ नव जाणे, जइ रहेवुं पर घेर.
पर भूमि पर भूपति आगळ, परगमतुंज कहेवुं;
पर ओशियाळे पेटज भरवुं, परने दिल न देवुं.
विनय वचन शुणीने बोल्यो, निकुळ वचन महाशूर;
शामाटे दुःख मारुं आणो, वर्जु कठण गति क्रूर.
मन शुद्धेयी सेवा करशुं, जेवी तमने गमशे;
तमे जाणो सदा सुखी तन, एवडुं दुख वयम खमशे.
विकट अश्व हुं करु पाधरा, खरा खेलवी जाणुं;
अश्व शास्त्र आवडेछे मुजने, हुं शुं आप वखाणुं.

तुरी तणाजे सकळ रोग छे, औषध एनां करशु;
वैराट रायना घोडा फेरवु, एणी पेरे पेट भरशु-
एवु काज करीशु भाइ, तेम कोइ नव जाणे;
दैव तणी तो गति कठण छे, दैव दया नव आणे.
समाधान सतोखी वेठा, निकुळ तेणीवार;
धर्म तणु मन विस्मय पाम्यु, उपन्यो वळी विचार.
द्रुपदिने देखीने राजा, आणे आंसुपात;
घडा जेवडु माणेक माननी, क्यम रहे छानी जात.
पुरुष तणी सउ वात पाधरी, ज्यम सप करी निर्वेहेशे;
परभूपतिवश पडी प्रेमदा, केइ पेरे दिन लेशे.
अमो अणछता अळगा रहीशु, नहि बोलाये वाण;
कदर्प कोटी कळा कामनी, मुख शोभा शशि भाण.
ते दुखमाहे वळी दुख मोटु, छानि केम रहेशे;
सुजे तेम कहे लोक बहिरमुख, कपट बोल केम सहेशे.
एवु जाणी दुःखज आणि, मुक्यो मुख निश्वास;
नयणे धारा निरखी राणी, आव्यां रायनी पास.
कर सपुट करी उभी नारी, केम थया उदास.
दासिरुप थइने रहेशु, सैरिंघ्री मुजनाम;
राणीने शणगार पेहेरावु, कहु एटलु काम.
एवु शुणीने पाचे उठ्या, पाडु तणा कुमार;
शत्र आकारे शमिये बाध्यां, आयुद्ध तेणीवार.
केडा मोरे चारी आव्यां, पुर वैराट मोझार;
अछता थइने त्यो रह्यां, तेनो कोइ न जाणे पार.

साखी.

जे युधिष्टिर यज्ञ करी, दिधा कनकनां दान;
ब्राह्मण थइ आशिश दे, रुठ्या त्यारे भगवान.
निकुळ घोडा फेरवे, सहदेव चारे गाय;
भीम उदरने कारणे, रह्यो रसोडामांय
चद्र सूर्यने वश करे, नाम जेनु पाचाळी;
दासि थइ दिन निर्गमे, वेठाये दद वाळी.

सकळ छत्रपति वश कर्या, जीत्यो जरासंध राय;
नर फीटी नारी थयो, कर्मगति कहेवाय.
सुख केडे दु:ख पामिये, दुःख केडे सुख होय,
सरखा दिन आवे नहि, वृक्ष छाय सम जोय.

त्रणतालनी चोपाइ.

वैशंपायन बोल्या वचन, शुण जन्मेजय राजन;
त्यार पुठे निपन्यु जेह, तुजने संभळावु तेह.
वैराटपुरमा पांडव रह्या, द्रुपदी सुद्धा सुखिया थया;
दूत कौरव केरा जेह, हींडे पांडवने खोळता तेह.
दुर्योधन मन हरख अपार, राजे हस्तिनापुर मोझार;
सभा भरी बेठो राजन, हरख पाम्यो पोताने मन
भीष्म करण द्रोण पावन, अश्वत्थामा आदि महाजन;
सुभट शकुनि ते त्या होय, शत भ्रात पोताना सोय.
देशदेशना राजा जेह, सभामाही बेठा छे तेह,
जोइ सभा हरख्यो राजन, एवे आव्या नारद मुन.
दूर थकी दीठा जेटले, प्रणम्यो राय जइ तेटले,
अमपर कृपा करी महाराज, घणे दिवसे पधार्या आज.
वळती बोल्या नारदमुन, तु तो सांभळरे राजन,
मास सात तो वहीने गया, समाचार सें तो नव लह्या
वर्ष पुरु एक ज्या थशे, छता थइने पांडव आवशे;
सभा जोइ शु रीझ्यो आज, लेशे वेगे तारु राज.
भीम भड सामो कोण भडे, सेना तारी तो रडवडे;
अर्जुन शु लेशे कोण राड, एवो जोद्धो एक देखाड
निकुल सहदेव धनुष सहाय, छे कोइ जोद्धो जे सामो थाय,
ते माटे तु गर्व मा आण, देख सेन तारु निर्वाण.
मेळी धाडे तो न सरे काज, खोइ बेसशो वेगे राज;
शुणी नारद केरा वचन, जुए सेन पोते राजन.
चेत चेत कहे नारद मुन, तु तो दुर्योधन राजन;
जोचरावो जे छे किये गाम, तो तो थाय तारु काम.

फरि भोगवे ते वनवास, सुखे राज करो आवास,
तेणे सेव्या छे भगवान, गाज्या नव जाय ते राजान.
कदी रहे जीवता ते राय, दीवस चार वेगे वही जाय;
खोळी कदावो करीने भाळ, नहि कर जाणजे तारो काळ
पोतानो माटे तुजने कहु, नहितर मनमा जाणी रहु;
एम कही पाम्या अंतरधान, पड्यो विचारमा राजान.
हवे करु तेना उपाय, जे थकी तेओ प्रगट थाय.

ढाळ.

वैशंपायन एणी पेर बोल्या, शुण जन्मेजय राय;
त्यार पुठे जे नीपन्यु, हु कहु तेनो महिमाय.
राजा वळतो बोलियो ते, हरख धरिने मन;
कर ग्रहीने बिडु मुकियु, सभामाहि राजन.
को छे लेनार तेहनो, पण पाळीने जाय,
पांडव केरी शुद्ध ए्इ आवे, सभा माहरिमाय.
राज तेहने अर्द्धु सोंपु, हय गज रथ कहेवाय;
नरपति सघळा रह्या निहाळी, कोइ न बेठो थाय.
बिडु एहने बधे फेरव्युं, को न करे उचो हाथ,
करण आदिक योद्धा बेठा, मळीने सर्वे साथ.
एवामां जीमूर्ते आव्यो, ज्या बेठो छे भूप;
भीम समान पराक्रम बळियो, तेवडु तन स्वरूप.
आवी उभो रह्यो आगळे, नृपने नाम्युं शीश;
कोना उपर धर्यु छे बिडु, राय चढावी रीश.
मल्ल केरा बोल्य थकी, ते हरख्यो राय अपार;
कटक मारामाहे जोद्धो, तुज दिसे सार.
शत्रु पांडव गया महावन, वर्ष वही गया बार;
नट चरचा जइ रह्या छे, कोण देश मोझार.
छता थाय जो तम थकी तो, निर्धन कीने रान;
तेर वरश पुन भोगवे वटी, सरे अमारु काम.

१ एक मल्लनु नाम छे

कह्यु रायनु शुणी महामल्ले, अहियु बीडु पाण;
कठ भीडीनें उभो रह्यो वळी, उचर्यो मुखथी वाण.
गुफा गिरि शोधु नवखडे, नगर पुरा ने गाम;
सरोवर सरिता सिंधु शोधु, अगम्य अगोचर ठाम.
राय अति रळियात थयो, जव सुणिया मल्लवचन;
विश्वास तारो छे मुजने, मान्यु मारु मन.
तु निश्चे एनी सुध लावीश, वीर वहेलो जाय;
बहु पसाय करी शिख दीधी, चलावियो क्षणमाय.
अवनितळ पड साते शोध्या, आव्यो अवनीमाय,
पश्चिम दिशमा परवर्योने, जोया राणा राय.
उत्तर दक्षिण पुरव चाल्यो, अनत पृथे एह,
पर्वत पोटा राय जीतियो, अभग कहावे देह.
सघळी पृथ्वीमध्ये पेख्या, नगर देश परमाण;
उदयाचळथी अस्ताचळ, जहा लगी भोगवे भाण.
एम फरता आवी कीधो, वैराट[1] विशे विश्राम;
एकाते रही लोकने पुछयो, पाडवकेरो ठाम
पछी पुरपतिने जइने मळियो, कीधा मुख वचन,
देशो देश विशे हु फरियो, जोया कइ राजन.
एवु सुणीने राजा बोल्यो, तें कहियु ते सत्य;
भूमि भड सर्वे जोया, बोहोतेर देश अधिपत्य.
क्याहा वसोछो कोने शरणे, कहो तमारु नाम,
पृथ्वी सकळ वळ्यो तु खोळी, कोण सगाते काम.
मल्ल जीमुत नाम मारुरु, धर्यु बिडु में पाण;
पाडुतन वन गुप्त रह्या छे, नष्ट चरचा जाण.
दुर्योधन मुख वचनशुणी में, जोत्या बोतेर देश,
कही न लाध्या मुजने ते तो, जोइ तुज सभा नरेश.
हार्यो कहे तो पुतळु आपो, नहि तो तु कच्छ वाळ;
सभामाहेथी बोल्यो सौळो, बोलतां मुख सभाळ.

---

[1] वैराट राजानो साळो कीचक

मुज संघाते प्रथम लडीने, महाबळ तुज देखाड;
अवर मल्ल छे पोटा ते शुं, मळीने करजे राड.
एम कहीने धाइ वळग्यो, मल्लनें ते जोध;
ऊंट कोटे अजा थाझी, करी शके शुं क्रोध.
घडी बेघडी जुद्धज कीधुं, झुंट्यो रूंध्यो तेह;
पछी पकडीने भिड्यो तेने, कचर कीधो देह.
वळती राये कंकने पुछ्युं, शि करवी हवे पेर;
बोतेर तेम आपणने जीत्या, वधायुं तें शुं वेर.
एवुं शुणीने कंकरूपी कहे, तेडाव्य बालुओसार;
कोठार तारा कीधा खाली, नित करी बहु अहार.
तां वैराटे कह्युं रुषिजी, ए शुं बोल्या आप;
पर भूमिमां वात जशे, परोणाये मराव्यो साप.
एम कही मोकलियो सेवक, बालुआ केरी पास;
तमने नृप वैराट तेडे एक, मल्लने करवा नाश.
कहेतां ते ततखेव उठियो; वडो वृकोदर वीर;
मुख पखाळी पाघ बांधी, पीधुं शीतळ नीर.
जीमुत केरु नाम सांभळ्युं, चढियो क्रोध अपार;
वेगे धाइने आवियो ते, राजसभा मोझार.

सामेरी रागनी चोपाई.

वीरसभा भणी सांचरियो, रीसे पृथ्वी उपर पग धरियो;
रखे वे पद थाये एक, भूमि भार लागेछे वशेक.
चाली सभा समीपे आव्यो, राय वैराटने मन भाव्यो;
महामल्ल ए प्रौढज दीसे, सर्वे सभातणुं मन हीसे.
आव्यो दिसेछे वन्हिसमान, तन मेघ छे शामलवान;
वीर भुजा दंड भला सोहे, कर चरण देखी मन मोहे.
भला योद्ध रह्या वळ कळीया, वीर आवी सभामांहे मळीया;
आवी कंक पाये शिर नाम्युं, पछि जोयुं जीमुतना सामुं.
आ योद्ध ते क्यांथकी आव्यो, क्यांथी पूतळां बांधी लाव्यो;
सारे वैराट राय एम बोले, नथी वळियो कोइ एने तोले.

एणे बोतेर देश वश कीधा, जितीने जश मोटा लीधा;
पछी आणी सभाए पधार्या, कैयो कीचक मोकम मार्या.
देश जोवा दुर्योधने मोकलिया, एने पांडव कांहि नव मळिया;
तेने मल्ल हींडेछे जोतो, मोटा महीपतिनी पत खोतो.
एवुं सांभळतां चढी रीस, पगथी ज्वाळा लागी शीश;
तुं तो घणे ठामे जीती आव्यो, क्येम अहींथी जाइश फाव्यो.
पगे पुतळां छोडी नंखावुं, कहेशे बीजीवार नहि आवुं;
त्यारे जीमूत बोल्यो वाणी, भड तारी वात में जाणी.
घणीवार तुं आप वखाणे, मल्ल विद्या ते तुं शुं जाणे;
घणुं खाइ तें तन वधार्युं, ते तुं जाणजे सुख पधार्युं.
आवी उभो रह्यो शुं त्राडे, शुं महीप आव्यो छे भाडे;
अमे जोध मोटा वश कीधा, मोटा राय जीती यश लीधा.
कैया कीचकने पुछो वात, जेणे दिठा छे मारा हाथ;
तुं श्रण विधाणो शुं जाणे, हजी हाथे तुं न चढ्यो आणे.
वकारतां तो वीर रीसाव्यो, हो हो कहीने ते सामो आव्यो;
हाथे मुष्टिका ग्रही मुकावे, मुखे फोशिया कही बोलावे.
मल्ले लीधुं दुर्योधन नाम, वालुओ कहे वैराटनुं काम;
एम कहेतां बेउ भड भडिया, घट कोठे कोशीसां पडियां.
पग प्रहारे पृथ्वी धुजे, उडे रज रवि बिंब न सुझे;
गडदा पाटु कोणी वाजे, ते देखी कायर चित भाजे.
माथा मेंढा तणी पेरे मारे, मरडी भागतां कांइ तजगारे;
जाणे जेम गज मत्त आफळिया, लोक जोवाने टोळे मळिया.
भड वढतां जेनी दिश जाय, भाजे लोक नाशानाश थाय;
वाजे ढोल निशान बे पास, तेनो शब्द गाजेछे आकाश.
वढतां वीर वालुओ थाक्यो, मल्ल जीमूतने ताणी वांध्यो;
भीमे कीधो मनमां विचार, हवे मारुं एने आ ठार.
एम कहीने भेलीने दोट, झाली मल्लतणी तो कोट;
माथे फेरवी भूमि पछाडे, वळतो आसला आकारे त्राडे.
मल्ले विचारियुं ते ठाम, आ तो भीमतणुं छे काम;
मोत मारुं छे एने हाथ, एम विचार्युं हृदया साथ.

हवे प्रगट लेउं एनुं नाम, मरतां करूं एटलुं काम;
ए तो पाछो भोगवे वन, राज-भोगवे दुर्योधन.
एवुं जाणीने बोले ज्यारे, भीमे झाल्यो तेने गळे त्यारे;
भकार मुखथी निकळ्यो उच्चार, मकार भूलि गयो तेणीवार.
पछे वाल्लुए कीधुं काम, मल्ल मारि नाख्यो ते ठाम.

ढाळ.

ठाम ठाम ते वातो चाली, वेगे तेणीवार;
हस्तिनापुरमां जइ सेवके, कहियो सर्व प्रकार.
अनुचर चार दिशाथी आव्या, तेणे शुद्ध कही सारी;
पांडव अमे न जाण्या कांहिं, पण सांभळ वात अमारी.
वैराट नगरमांही हवो छे, एक मोटो उतपात;
जीमूत मल्ल मार्यो महामल्ले, एकजणे साक्षात.
शुणतां दुर्योधन चमक्यो, पांडव काम प्रमाण;
धडक्यो वीर कटक सज कीधुं, वजडाव्यां निशान.
भीम वण जीमूतने कोण जीते, शत कीचक रण मार्या;
शुं करिये वर्ष थयां पुरण, दैवे दीन न उगार्या.
हवे सां जइ गोधनवाळुं, करिये एह प्रकार;
पांडुतनं ए पर्तन हशे तो, मुकावे निर्धार.
सेन लइ दुर्योधन आव्यो, वैराट केरे गाम;
पछी तेहनी गायो वाळि, कीधुं मोटुं काम.
वार वरसथी अधिक कहावे, पुरुष जे कहेवाय;
सहुको राजा साथे चाल्या, संग्रामे ते जाय.
कंक रूपिने वाल्लुआने, तंतीपाल गोकर्ण;
सउ कोने संघाते लीधा, जेनां रूडां आचर्ण.
सेन लइने राजा चाल्यो, शोधी बांधी सार;
नरपतिनुं गोधन मुकाव्युं, वाल्लुए तेणीवार.
पुर्व दिशाथी गोधन वाळ्युं, वळि दुर्योधन राय;
राजकुंवर लइ वारे धायो, अर्जुन बंढेळ काय.

---

१ इरेर. २ पैसानो गरज, निठुर. ३ मांने नमस्कार, हइहेव.

धनुष त्राण करमाही धरीने, कीधु रूडु जुद्ध;
गोधन मुकावीने आव्या, नगर वात थइ शुद्ध.
कुवरने अर्जुन केहेछे, न लइश माह नाम;
दिवस हवे थोडा रहेवु छे, अमारे तारे गाम.
राजकुवर आविने नमियो, पिता केरे पाय;
ओवारणा लीधा मातायें, हइडे हरख न माय.
एम करता ते वात विती, दिन पुठे दिन जाय;
वरश एक परिपुरण थयु ने, रीझ्या ह्रदया माय.

राग सामेरी.

वैशंपायन बोल्या वचन, सुण परीक्षत केरा तन;
त्यार पुठे निपन्यु जेह, तने कही समळावु तेह.
वरस एक ज्या पुरण थाय, पछि विचारीयु मनमाय,
एवे निशा पडी छे ज्यार, उठया पाचे पाडुकुमार.
साथे तेडी द्रौपदी नार, आव्या कोटकने निर्धार;
पछे निकळ्या नगरथी बहार, आव्या शमी वृक्षने ठार.
ध्यान ईश्वरनु धरी मन, आयुध उतर्या पावन;
पेरी वस्त्र ने तत्पर थाय, एने उलट अग न माय.
काने कुडल हीरे जडिया, तेना मूल न जाये गणीया;
कठे मुक्ताफळनी माळ, दीसे ओपती झाक झमाळ.
हीरा साकळीने सोना दोरो, केडे बाध्यो सुदर कदोरो,
पोंची जडीत्र सोना साकळिये, वेढ विंटियो छे आगळिये.
पहेर्या आभरण ओपता सार, उपर बाधिया छे हथियार;
माथा भिडिया छे कटिसाय, धनुष गदा झाल्छि हाथ.
सुदर किधो चोतरो एक, माडी पाटच त्या करी विवेक;
विजया दशमी केरे दन, कीधु शमी तणू पूजन.
पछी जोइने शुभ लगन, पट्टाभिषेक कीधो राजन;
अर्जुन धरे शिरपर छत्र, देवता वजाडे वाजित्र.
राज बेठा युधिष्टिर राय, पुष्पवृष्टि करे देवताय,
वन नष्टचर्या पुरि थाय, सौने उलट अग न माय.

एटले गोवाळिया त्यां आव्या, चारवाने गोधन ल्याव्या;
सुभट बेठा दीठा ज्याय, त्रास पामिने नाठा त्याय.
दोड्या राजद्वारे आव्या, राजा वैराटने जगाव्या;
करि मजरो ने बोल्या वात, राय साभळो ने साक्षात.
कंक व्यंडल ने पाककार, ततीपाळ गोकर्ण ने नार;
ए तो तमारे घेर हता जेह, वनमा राजा थइ बेठा तेह
छत्र चामर ढोळे वाय, एवो नव दीठो कोइ राय;
बेठा आयुद्धधारि ते योध, कह्यो एवो एणे प्रतिबोध
एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा विस्मय पाम्यो त्यारे;
त्यारे कुंवर बोल्यो वाण, राजा प्रत्ये जोडी पाण
ए तो पांडव कहेवाय जेह, हता आपणे घेरज तेह;
मार्यो जीमूतने तो ठाम, ते तो भीमतणु छे काम.
कंक रुपि युधिष्टिर राय, व्यंडलरूप अर्जुन कहेवाय;
निकुळ ततीपाळ ततखेव, गोकर्ण थया सहदेव.
सैरंध्री द्रुपदीनु नाम, सेवक थइ कर्यां छे काम;
कौरवे गायो वाळि ज्यारे, तेतो वारे धाया त्यारे.
नहितो महारथ ते त्या शु जोर, केम मुकावी लावु ढोर;
एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा वैराट उठयो त्यारे.
दडवत करतो चाल्यो धरण, जइने साह्या रायना चरण;
मस्तक मूक्यु जइने खोळे, वचन दीन थइने बोले.
हु तो तुजो तमारो राक, क्षमा करो अमारो वांक;
नव ओळख्या मारा स्वाम, सेवक जाणी कराव्या काम.
त्यारे बोल्या युधिष्टिर राय, धन्य धन्य तमने कहेवाय;
अमो रह्या तमारे घेर, सुख पामिया महिपेर.
बार वरस तो काढ्या वन, एक वरस तमारे भवन;
हवे पुरण थयो वनवास, ईश्वर पुरशे अमारि आश.
माटे जाओ तमारे घेर, सुख पामजो महिपेर;
एवी वात ते सांभळि ज्यारे, राजा वैराट बोल्यो त्यारे.
दासपणु कराव्यु तमने, मोटो दोष बेठोछे अमने;
माटे गुण ओशिकळ थाउ, मारी कन्या आपी घेर जाउ.

उत्तरा कुंवरि आणी जेह, मुकी अर्जुनने खोळे तेह;
त्यारे अर्जुन बोल्या वात, राजा साभळ तू साक्षात.
पुत्रिने में भणावी सार, माटे केम करूं अंगीकार;
ए पुत्रि नहि परणीए अमो, एक वात कहुं मानो तमो.
सुभद्रातन अभिमन्यु सार, तेने परणावो ए नार;
एवी वात ते साभळी ज्यारे, राजा वैराट हरख्यो त्यारे.
हांजी राय ए कारज करो, पुत्रि मारी ए पेरे वरो;
अभिमन्यु वेरे विवा कर्यो, श्री फळ रुपैयो करमां धर्यो.
जय जय शब्द बोल्या ते ठाम, त्यार पुठे शु कीधु काम.

પછી લગ્ન તેડાવીને અભિમન્યુને પરણાવ્યો.

ढाळ.

अभिमन्यु परणि उठयाने, वर्त्यो जेजेकार;
जन्मेजय नृप साभळो हवे, पछिनो कहु प्रकार.
युधिष्टिर कहे वैराटने, तमे सांभळो महाराज;
उत्तरा कुंवरी तेडावशु ज्यारे, अमे बेशिशु राज.
एम कहीने पांडव चाल्या, हस्तिनापुर मोझार;
बार दिवसमा फरीने आव्या, क्षणु न लागी वार.
आवी वाडिमा उतरिया, पाडु रायना तन;
तेणे समे सभारिया त्या, वसुदेवना नदन.
युधिष्टिर कहे कृष्णने. तमे जाओ दुर्योधन पास;
विष्टी जइने करजो वेगे, बोल्या मुख प्रकाश.

(कृष्णे जइने दुर्योधनने कह्यु के)

अर्द्ध राज्य जे एनु छे ते, एने आपो सोय;
एना बापनु राज भोगवो, मन वीमासी जोय.

(दुर्योधने कह्यु के सोयनी अणी जेटली पण पृथ्वी आपु नहि

एम करता जो मागे करगरी, आपु गाम बे चार;
पण क्षत्री वटथी पृथ्वी नव, पामे पांडु कुमार.
आदला दाडा वन रडवडिया, क्यां गइ हती सगाइ;
वढशु के वेचीने लेशु, ए छे अमारा भाइ.

कृष्ण त्यांथी परवरिया, ज्यां पांडु रायना तंन;
वढ्या विना पृथ्वी नहि आपे, राजा दुर्योधन.
युधिष्टिर कहेछे फरिने, जाओ करो एटलु काम;
पांच गामडां अमने आपे, रेवा केरो ठाम.
त्यारे बोल्या भीम भड तमे, एशुं बोल्या वीर;
एम आपणी बुद्धी बावली, कायर थया अधीर.
कइकतणी रांडो रंडावुं, कइ भागुं घर सूत्र;
दुर्योधनने उभो गळुं तो, पांडु रायनो पुत्र.
कृष्णनी यत्ती सफळ थइ नहि ने लडाई चाली.
कुरुक्षेत्रमां युद्ध मंडाणु, क्षोणी कटक अढार;
सात क्षोणी धर्मकने, अधर्मांकने अगियार.
दश दहाडा तो युद्ध कर्युं छे, गंगा केरे तने;
पांच दहाडा द्रोणे वळतुं, युद्ध कर्युं पावन.
त्रण दाडा तो गया द्रोणना, निपन्यो कोण प्रकार;
चक्रव्यूह रचना करि वढियो, अर्जुननो कुमार.

એવામાં એક બીજી વાત થઈ તે એ કે.

राग सामेरी.

आवी ब्राह्मणे कीधो पोकार, कोइ क्षत्री करो मारिवार;
अमने रेवाने आपो ठाम, एह दुष्टनो फेडो ठाम.
त्यारे कृष्ण त्यां बोल्या वचन, कोण दुष्ट छे ते राजंन;
जालंधरनुं लीधुं नाम, कोप्या अर्जुन तेणे ठाम.
मारी दुष्टनुं तोडुं गाम, करुं ब्राह्मण केरुं काम;
कृष्ण ने अर्जुन बे गया, समाचार दुर्योधने लह्या.
दुर्योधन कहे साधु काम, अभिमन्युने मारु ठाम;
संजय शकुनी विष्टिये गया, जुधिष्टिर पासे जइने रह्या.
कहे जीतो चक्रागढ पास, नहीकर जाओ पाछा वनवास;
राजाये अर्जुन पुछिया, गया सांभळी विस्मय थया.
वाणे तो जुद्ध करशु सही, एवुं परठीने उठिया तहीं;
राये तेडाव्या त्रणे भ्रात, पासे बेशीने पुछी वात.

---

१ भीष्म पिता.

सहदेव कहे अविधार, मैं जोग्यणी जीती संसार;
जाणु चारे वेदना भेद, चक्रागढ नव्य जाणु छेद.
त्यारे बोलिया निकुळ वचन, सांभळो युधिष्टिर राजन;
पूर्व पडने पश्चिम करूं, पश्चिम पडने पुरव धरु.
कोठा सात तणो जे मर्म, नव जाणुं हुं राजा धर्म;
तत्क्षण भीम महा भड भणे, शीव जीत्या मे पराक्रम घणे.
गदाये करी पाडु ब्रह्मांड, चक्रागढ नव जाणुं खंड;
दुर्योधनने उभो गळु, पृथ्वी वाधीं परले करु.
कोठा सात तणो जे मर्म, नव जाणुं हुं राजा धर्म;
त्रणे भाइ एम कही रह्या, राय युधिष्टिर दुखिया थया.
हवे शो करवो उपाय, शोकातुर थइ बेठा राय;
चिंतातुर थया जेटले, अभिमन्यु आव्यो तेटले.
उठी कुंवर सभा संचरे, पग मुके धरति थरथरे;
चाली सभा मध्ये आवियो, मान दइ नव बोलावियो.
सउको नीचु निहाळी रह्या, आवकार न कोइए कह्या;
क्रोधे भराणो तेणीवार, सउने मारु आणे ठार.
नथी घेर पिता अरजुन, नव बोल्याव्यो तो राजन;
पिता घेर होय जेवारे, लाड लडावे सौको त्यारे.
पिता पण नव बोलावे हशी, एवी वात तेने दिल वशी;
दृष्टि भरी सभा सामुं जोय, करमायां मुख दीठा सउ कोय.
करी विमासण पाछो फर्यो, भीमसेने जइ कर धर्यो;
केम रीसाइ जाओ तंन, पुछ न मुके दुर्योधन.
कहे जीतो चक्रागढ पास, नहिकर पाछा जाओ वनवास;
चक्रागढ नव जाणे कोय, ते माटे चिंतातुर होय.
वळती बोल्यो ते अभिमन, काका सांभळो मुज वचन;
छ कोठा हुं जाणुं सार, सातमानो न जाणु पार.
सातमानु न जाणु नाम, त्यां मरवानो छे मुज ठाम;
सातमो कोठो आवे ज्यांय, मुजने संभाळजे तुं त्यांय.
जो न जाणिये तेनो सार, मारी गदा ने नीसरीये बहार;
एवी वात नकी करी ज्यारे, सभामां भीम लइ गयो त्यारे.

जुधिष्टिर आगळ ते गयो, कर जोडीने उभो रह्यो;
हु पुछु काकाजी आज, शामाटे दुखिया महाराज.
त्यारे मुखथी बोल्या वचन, सु तो साभळ मारा तन;
वसमी वात आवी छे आज, नथी सुजतु काम के काज.
कोठा जुद्ध तणु छे काम, को न जाणे आणे ठाम;
त्यारे अभिमन्यु बोल्या हशी, एतो वात मारे मन वशी.
छ कोठा तो हु जाणु सार, सातमानो न जाणु पार;
त्यारे जुधिष्टिर पुछे वात, साभळ ने भाइ तु साक्षात.
भेद छे छ कोठा तणा, कहो भाइ तमे क्या भण्या;
त्यारे मुखथी बोल्यो वात, साभळो काका साक्षात.
हु भण्यो तु माने पेट, छ कोठानी विद्या ठेठ;
मामे मने भणाव्यो सार, छ कोठाना जाणु पार.
सातमो कोठो आवे ज्यारे, मारु नव चाली शके त्यारे;
त्यारे भीम तो बोल्यो गाजी, सातमो कोठो नाखु भाजी.
सातमो छाण माटीनो होय, ते तो भागी हु नाखु सोय;
एवी वात तो साभळी ज्यारे, जुधिष्टिर मन हरख्या त्यारे.
धनधनरे बावन वीर, ते राख्यु सभानु नीर;
एम कही पोते ततकाळ, कठे आरोपि छे रणमाळ.
राजा सउको विस्मय थया, रणमाळा पहेरी घेर गया,
मावडी घेर करे पोकार, कठ दीठी ज्यारे रणमाळ.
पिता जाळधर हणवा गयो, वाळुडो रण वाधियो;
मोढे आवेछे थान धावण, क्यम आगमशो सुत रण.
वसमा छे कौरवना पुत, क्यम आगमशो नाना सुत;
जेटला तरण धरती जाण, तेटला घा पडे निर्वाण.
ते माटे कहु वारवार, छाडो अभिमन्यु रणवट माळ;
तु छे लाडकवायो तन, अलगो नथि कर्यो एक दन.
तुज विना रहिश हु केम, टोळा वछुटी हरणी जेम;
सिंह देखी पशु पामे त्रास, त्यम साभळी हु थइ निराश.

खोळे बेसारीने हु वाळ, भोजन करावु ततकाळ;
आखर्थी अळगा थाओछो वाळ, प्राण हरी जाओछो ततकाळ.
फरी शु कहेवरावे तुय, रणे नहि जावा देउ हुय.

पद राग मेवाडो.

माने वाल्डो न कहेशो मारी मावडीरे. टेक.
मा वाळे काने जळमां पेशी नाथ्यो काळी नागरे;
मा वाळो बीछी केटलो, नथे अगे उठे आगरे वा०
मा वाळो मेघज केटलो, ते तो नीर भरे नवखडरे;
मा वाळो वखज केटलो, ते तो पर्वत करे शत खडरे. वा०
मा वाळो दीनकर केटलो, नथी अधकार पामे नाशरे;
मा वाळो सिंहज केटलो, तेथी हस्ति पामे त्रासरे. वा०
मा वाळो मकोडो केटलो, ते तो खीजो करडी खायरे;
मा मुकाव्यो मुके नहि, ताण्यो तुटी जायरे. वा०
मा वाळो हीरो केटलो, पण तेतो एरणने वेधेरे,
मा वाळो नोळज केटलो, बडा वशियरने ते छेदेरे. वा०
मा वाळो अग्नि केटलो, ते तो दहे नाधु वनरे;
मा वाळो ते नव जाणिये, जे आखर क्षत्री तनरे. वा०

साखी

अति स्नेहीने बहु रणी, जेने वेर घणाय,
सुखे न सुए मावडी, ते तो त्रण जणाय.
निर्धनने वळी बहु धनी, जेने वेर घणाय;
सुखे न सुए मावडी, ते तो त्रण जणाय.

चोपाई ३ तालनी.

न सुए चाकर न सुए चोर, न सुए घन गाजंते मोर;
न सुए जेने पुत्रियो घणी, न सुए ने नारिनो धणी.
न सुए निर्धन ने धनवत, न सुए राजा राज करत;
न सुए जेने सुत नहीं घेर, न सुए जेने माथे वेर.
न सुए जेनो गयो आत, न सुए रणथी पड्यो त्रास;
सुखे सुए मणिधर साप, सुरो सुए जेने माथे बाप.

सुखे सुए जोगी अवधूत, सुखे सुए राजानो पूत;
सुखे सुए गुफामा सहीं, सुखे सुए चिंता जेने नहीं.
आज घेर नथी अरजुन, सुखे सुए क्यांथी अभिमन.

टाळ.

सुभद्रा मुख वाणि बोल्या, साभळ मारा तनरे;
तुजने जाया नहि दउ, मानो मुज वचनरे.
एक पुत्र माता हतो ते, कालुडे सर्पे साधीरे;
अरजुन गयो जाळंधर जीतवा, वालुडे रणवाट साधीरे.
वाळो भोळो तु नानडियो, तु रणवाट केम झालेरे;
रणशुर केरा शब्द साभळी, पेसण परदळ पाळेरे.
कोमळ काति काया मनोहर, मुखडु पुन्यम चदरे;
ते रणमा जइ केम घा समशे, माता करे आक्रदरे.
उष्ण सजाये ज्यारे पहोडतो, उभा थता त्यारे रोमरे;
ते जुधे जइ केम घा समशे, कठण छे रण भोमरे.
दश मासवाडा गर्भ धर्यो तो, में तो मोरे पेटरे;
पाळी पोपी मोटो कीधो, ते मरवे उठी बेठेरे.
तारे हाथेथि मीढळ नथी छूट्यु, नथी आवी घेर नाररे;
तेने मों जोयानो रहेशे ओरतो, साभळ मुज कुमाररे.
युधिष्टिरने शु थयु जे तने, मोकले रणमोझाररे;
भीम निकुळ सहदेव बेठे केम, जाशे मुज कुमाररे.
घरडा थइने काइ न जाणे, शि किधी ए पेररे;
जुद्धे मारा पुत्रने मोकले, पिता नथी एनो घेररे.
त्यारे अभिमन्यु एणो परे बोल्यो, साभळ मारी मातरे;
दुर्योधने कोठा जुद्ध रचियु, मने कह्यु साक्षातरे.
ते जुद्ध तो कोइ नथी जाणतु, तुजने कहु निर्धाररे;
जाणेछे मुज पिता ते तो, गया रणमोझाररे.
छ कोठानु जुद्ध हु जाणु, घालो छे में हामरे;
सातमो तो भीम भागी नाखशे, राखु पितानु नामरे.
त्यारे सुभद्रा एणी परे बोल्या, साभळ मारा तनरे;
तें तो जवानी हामज घाली, उत्तरा नथी भवनरे.

उत्तरा उत्तरा शुं कहे माडी, सांभळ तुं निर्धाररे;
तेडाववी होय तो तेडावजे, रही छे आडी सवाररे.

साखी.

उत्तरा उत्तरा शुं करे, सांभळ मारी मात;
रणमां ज्यारे घा पडे, त्यारे नहि दे उत्तरा हाथ.
उत्तरा उत्तरा शुं करे, घेली थइ मुज मात;
दैवनु तेडुं आवशे, नहि आवे उत्तरा साथ.

राग कालिंगडो.

सुभद्रा वळती चाली आव्यां, युधिष्टिरनी पासरे;
कुंवर माराने युद्धे मोकलो, तेडावो उत्तरा वासरे.
राजसभामां राजा बेठा, रायकडा तेडाव्यारे;
रतनो, रूपो, राजो, काजो, रायकडा सउ आव्यारे.
शुं छे राजा शुं छे राजा, शुं छे अमारूं कामरे;
शाने काजे शुं करवाने, तेडाव्या आ ठामरे.
वळती राय युधिष्टिर बोल्या, रायका प्रत्ये वाणीरे;
कोइ एक पहोरमां तेडी आवे, अभिमन्युनी राणीरे.
राजो रायको एणीपेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
चार हजार खांडेरुं मारे, कहेतां नावे पाररे.
स्वामी सुरजने परतापे, पिये पाताळनुं पाणीरे;
कहो तो चार पहोरमां तेडी लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
त्यारे काजो रायको बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
आठ हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.
ते उछळी आकाश शुं चाले, पिये पाताळनुं पाणीरे;
त्रण पहोरमां तेडीने लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
रूपो रायको एणी पेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
बार हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.
स्वामी सुरजने परतापे, पीए पाताळनुं पाणीरे;
बे पहोरमां तेडीने लावुं, अभिमन्युनी राणीरे.
रत्नो रायको एणीपेर बोल्यो, राजाजी अवधाररे;
सोळ हजार खांडेरुं मारे, कहेतां न आवे पाररे.

स्वामी सुरजने परतापे, पिये पाताळनु पाणीरे;
एक पहोरमा तेडीने लावु, अभिमन्युनी राणीरे.
राजाये तेने आघो तेड्योने, दीधा आदर मानरे;
सुदर वाघा पहेरण आप्या, आप्या फोफळ पानरे
सांढ ल्इने साचर्यो ते, पवन वेगे जायरे;
तेणे समे उत्तरा राणीने, स्वप्नु केवु थायरे.
आजनो दाडो धुधळो दीसे, अवळा वहे नदी नीररे,
आज स्वमामा पड्यो दीठो, जोद्धो बावन वीररे.

स्वप्ना दोहलारे टेक.

हवे स्वप्नापछीनी वात.

राग कालिंगडो

सांढे चडीने रायको आव्यो, पुछे समाचाररे,
पाडव राजा कुशळ कहाने, कुशळ अर्जुन कुमाररे.
त्यारे रायको मुखवाणी बोल्यो, साभळने तु नाररे;
कौरव पाडवने युद्ध मडाणु, हस्तिनापुर मोझाररे.
अभिमन्यु राजा रणवट साधरे, तेडावी पुत्री तमारीरे;
रायका केरा वचन सुणीने, धरणी ढळी ते नारीरे.
मारी उत्तरा नानु बाळक, वयम जाशे अवताररे;
मोटाना राड्या बेठया दोहला, कुवरी छे सुकुमाररे.
उत्तरा कुवरि वाणि बोल्या, साभळ मारी मायरे,
मारा करमना काळा उघड्या, हवे रोये शु थायरे.
सवालाखनो सासर वासो, करती रुदन करे माडीरे;
अधलाखनो सासो रही जाये, आगळी रहे उघाडीरे.
उत्तर कुवर एणी पेरे बोल्यो, साभळ मारी मायरे;
दीकरियोना न पडे पुरा, ल्खेशरी जो थायरे.
उत्तरा त्याथी परवरी, ते पवन वेगे जायरे;
अर्द्ध पथ तो त्यारे पोत्या, चिंतातुर बहु थायरे.
अभिमन्यु मुखथी बोल्यो, तु साभळ मारी मायरे;
उत्तरा तो आवी नही मारे, जुद्धनी वेळा जायरे.

मारे दुर्योधन जीतवो रणे, चक्र हवुं चकचुररे;
उतावळ अधकी करो मारे, रणमां थाय असुररे.
त्रांबा कुंडी नळ भरीने, नाय अभिमन्यु वाळरे;
सोना केरो बाजठीयोने, रूपा केरी थाळरे.
खाजां लाडु अने जलेबी, मगदळ अने मोतीचूररे;
घृत विशेष मुके मांहि माता, करमल्डो ने कुररे.
त्यारे अभिमन्यु मुखथी बोल्यो, सांभळ मारी मातरे;
छेली वारनुं भोजन कीजे, पासे बेशी साक्षातरे.
त्यारे सुभद्रा मुखथी बोल्यां, सांभळ मारा तनरे;
पुत्र जातां नीर न भावे, क्यम जमुं भोजनरे.
छेली वारना हाथे कोळिया, करी जमाडे मायरे;
वींजणलो करमांही ग्रहीने, माता ढोळे वायरे.
जमी करीने उठया अभिमन्यु, रथे थया अस्वाररे;
ते आठ पइडे चालतो तेणे, अश्वो जोड्या चाररे.
शस्त्र थकी भेदाय न एवुं, बखतर पेर्युं शरीररे;
भभकादार त्यां भाथा भीड्या, जोद्धे बावन वीररे.
छत्रिश आयुद्ध भरी कशीने, रथे थयो अस्वाररे;
तेने सुभद्रा वळाववा चाली, नेत्रे जळनी धाररे.
सुभद्रामुख वाणी बोल्यां, सांभळ मारा तनरे;
लाडकवाया क्यारे आवशो, कहोने मुज वचनरे.
अभिमन्यु मुखथी एणी पेर बोल्यो, सांभळ मारी मातरे;
जुद्ध करवाने सांचरु राय, दुर्योधन संघातरे.
माताजी दुर्योधन जीतवो, चक्र हवुं चकचूररे;
दुधनां कुंडां भरिने मुकजो, आवुं आथमते सूररे.

ढाल २ जो.

त्यांथी आज्ञा मागवाने जायरे, ज्यां हुतां कुंती मायरे;
कुंतीजी बोल्यां वाणरे, कुंवर मानजे परमाणरे.
तारे संग्रामे सिद्धि थायरे, घेर कुशळे आवो रायरे.

ढाळ १ नी देशी.

हवे रायको कहे राणीने, हेठा उतरो धर्ण;
पेला तमारी सासु उभा, जइ नमोने चर्ण.
उत्तरा कुवरी हेठा उतरी, नम्या सासुने पाय;
द्रौपदीजीने वेगे नमिया, नमिया कुंता माय.
सुभद्रा कहे वहुअर मारी, ओ पेलो भरथार,
मारो बार्ये नव रहियो ते, चडियो रणमोझार.
हाव भाव कटाक्ष करती, मनाव तु स्वामीन;
उत्तरा त्यांथी परवरी ज्या, उभो छे राजन.
अभिमन्यु कहे धन्य पुरुष, जेनी हशे आ नारी,
का राजा तमे नथी जाणता, वैराटनी कुमारी
उत्तरा कुवरी कहे धन्य नारि, जेने आ भरथार;
का राणी तमे नथी जाणता, अर्जुननो कुमार.
उत्तरा तेने आवी मळीने, बोली मुखथी वाण;
मारा स्वामी रण विचरो तो, इश्वरनी छे आण.

राग परजनी साखी

उत्तरा मुखथी उचरीरे, साभळ मुज भरथार;
जो तमे रणवट साचरो तो, मारो मुजने ठार.
उत्तरा मुखथी उचरारे, साभळ मारा नाथ;
तमे तो रणवट साचर्या, मने सोंपी केने हाथ.

राग वेराडी.

तमे चालो तो रावजीनी आणरे. हो सुभद्राना जाया;
तमे चालो तो काढु मारा प्राणरे, हो सुभद्राना जाया टेक.
वैराट मारो पिता कहिये, सुदर्शना मारि मात,
में तो तमने ओळखिया,ज्यारे झाल्यो चोरिमा हाथरे. हो सुभ०
अर्जुन सरखो ससरो मारे, सुभद्रा सरखा सासु,
कृष्ण समा मामोनी मारे, रणवट चालो ते फासुरे. हो सुभ०
अर्जुनना तनज कहावो, वसुदेवना पुत्रीज;
कृष्णना भाणेज कहावो, भीम तणा भत्रीजरे. हो सुभ०

सोळ कळानो चंद्र शोभे, तेवी शोभा तमारी;
जेवुं हस्तिनापुर वेसणुं तेवी, हुं अर्द्धांगा नारीरे. हो सुभ०
राजहंस तमने जाणी में, कर्यो तमारो संग;
जो जाणत-बग बापडो, तो केमे न अरपत अंगरे. हो सुभ०

राग वेराडी देशी बीजी.

गोरी मेलो घोडीलानी वागरे, कुंवरी रावतणी;
खसो रथ तणो दो मागरे, कुंवरी रावतणी. टेक.
मारुं मांस शियाळ नखायरे, कुंवरी०—
गोरी हवे रहुं केम जायरे, कुंवरी०—
हुं तो अर्जुन केरो तनरे, कुं० केम युद्धथी फेरवुं मनरे; कुं०
मारो लाजे अर्जुन तातरे, कुं० मारी लाजे सुभद्रा मातरे. कुं०
मारे शुकने कोइ न जायरे, कुं० गोरि लोक हसारत थायरे; कुं०
मारी जाणत आवी नाररे, कुं० नव जात हुं रण मोझाररे. कुं०
एकवार लावे जगदीशरे, कुं० हुं तो छेदुं मामा केन शीशरे; कुं०
मने खोटी कही ती नाररे, कुं० आपण मळशुं पेले अवताररे. कुं०

राग परजियो.

मने मारीने रथडा खेडरे, वाळा राजारे.
मने युद्धे साथे तेडरे, वाळा राजारे.
आपण सरखा सरखी जोडरे, वा० मने युद्ध जोयाना कोडरे, वाळा०
लावो हुं धारूं हथियाररे, वा० करुं कौरवनो संहाररे, वाळा०
छांडी युद्ध वळो घेर आजरे, वा० मारा बापनु अपावुं राजरे, वाळा०
नारिकेश समुळा कहाडरे, वा० रथउपर देह पछाडरे, वाळा०
मारुं जोबनीयुं भरपुररे, वा० मने मेलीने चाल्या दूररे, वाळा०
मे तो शोरे कीधो अधर्मरे, वा० मारे किया जनमनां कर्मरे, वाळा०
मे तो वेलो[1] बाधतां तोडीरे, वा० मे तो धावतो धेन वछोडी रे, वा०
मे तो वेती नीके दीधो पागरे, वा० लीला वनमां मेली आगरे, वा०
मे तो सुतां गाम बळाव्यांरे, वा० मे तो कुडां कलंक चडा...
बळती बोल्यो अभिमनरे, घेली राणीरे;
तमे वात विमांसो मनरे, घेली राणीरे.

---

[1] कोइना वंदानो वेलो बधतो तोड्यो. [2] कोइनी आजीविका बंध करी.

ढाळ.

उत्तरा कुवरी वाणी बोली, साभळ मुज भरथार;
तमे युद्ध करवा सचरोठो, चक्रव्यूहमोझार.
मरजो के मारजो तमे, नव देशो पुठ लगार;
सहियर मेणा मारी कहेशे, कायरनी आ नार.
अवनीपर जे अवतर्यो तेने, मरवु एकज वार;
मोतथकी डरिये नहि, तेमाटे भरथार.

राग कालिंगडो.

उत्तरा त्याथी साचरीने पछी, आवी सुभद्रा आवासरे;
सज थइ अभिमन्यु चाल्यो, जुधिष्टिरनी पासरे.
सभामध्ये चाली आव्यो, कुवर थइ सावधानरे;
अभिमन्यु आवतो देखी राये, दीधा आदर मानरे.
कर जोडी मुखवाणी बोल्यो, काका केरे साथरे;
छ कोठा हु हवणा जीतुं, मानो साची वातरे.
आगळ हु काइ नथी लेतो, सातमा कोठानो मर्मरे;
ते थानक मारू मृत्यु जाणजो, वेगे काका धर्मरे.
भीमसेन मुखवाणी बोल्यो, घाली मुछे हाथरे;
सातमो कोठो हु भागी नाखु, हु छु तारे साथरे.
मुज छता दुख पमाडे, तेना तो लेउ प्राणरे;
गदा लेइ एक मेरथी आवी, करू कचर घाणरे.
एवुं साभळी अभिमन्यु लाग्यो, युधिष्टिरने पायरे;
आज्ञा मागीने निसरियो, त्या बोल्या धर्मरायरे.
कुवर मारा जोइ विचारीने, सग्राम करजो त्यायरे;
अर्जुन आवी पुछे अमने, उत्तर शो दइए ह्यायरे.
त्यारे त्या अभिमन्यु बोलियो, राखशे श्रीजगदीशरे;
एम कहीने साचरियो पछी, वेगे नमावी शीररे.
रथउपर आवीने बेठो, पार्थनो कुमाररे;
चतुरंगी सेना सज थइ तेनो, गणता न आवे पाररे.
मतवाला मल्ल पता हींडे, मुख चाव्या तंबोलरे;
मद माता ने हींडे धाता, रंगे राता चोळरे

आभरण पेर्यां ओपता ने, माथे राती मोळरे;
सार्थी दीसे शोभता तेने, वर्ष थया छे सोळरे.
छुट्टे शूरा रणे पुरा, चाले अटपटी चालरे;
धनुष बाण करमा धरिया ने, ढळकती मुकी ढालरे.
कटारी केडे वाकडीने, वळी करमा बाण कमानरे;
साग फरशी खजर गुप्ती, दीसे शोभायमानरे
भाया खडग कटिमा धरिया, तरकस ताता तीररे;
छत्रीस आयुध अगे सजिया, जोद्धा बावन वीररे.
हाथी घोडा रथ पालखी, कहेता नावे पाररे;
इरानी कछी मुल्तानी, शोभिता हय साररे.
खुरासानी ने विलायती वळी, बगाळी कहेवायरे;
पाणी पथाने पाखरिया, उज्वळ जेनी कायरे.
देववशी ने दानववशी, उत्पन्या ओळा ओळरे;
रीला धोळा काळा काबरा, रगे राता चोळरे.
वाकडिया वेडागे चडिया, सजी सर्व हथियाररे;
ठामठामथी जोद्धा चाल्या, कहेता नावे पाररे
युद्ध करवाने अभिमन्यु चाल्यो, हइडे हरख न मायरे,
धजा फरके ने नेजा झळके, नीशाने घळीया थायरे.
अभिमन्यु कहेछे सारथीने, रथ हाक मारो त्यायरे;
चक्रव्यूह गढ भेदवो छे ज्या, द्रोण गुरु छे त्यायरे.

चोपाई त्रण नाळनी.

अभिमन्युने आवतो जोय, सौ कौरव विस्मय होय;
माहोमाह्य करेछे वात, आव्यो अर्जुन ए साक्षात.
चक्रव्यूह तणो जे छेद, तेनो सउ लेछे ए भेद;
आपण सर्वने एतो सहारे, बढता कोइने नव उगारे.
पछी जुए धारीने चित, धजाये न दिसे हनुमत,
एतो अर्जुन सरिखो दीसे, कोइ आवेछे बळियो अतीशे.
कर्युं छे त्या अद्भुत काम, कोठा सात छे तेणे ठाम,
द्रोण गुरु छे बळिया जेह, प्रथम कोठे मुक्या तेह.

बिजे कृपाचार्य त्या होय, त्रिजे कोठे कर्ण जोय;
चोथे अश्वत्थामा सार, पाचमे कोठे लक्ष्मण कुमार.
बीना बळिया राजकुमार, सुत दुःशासननो चार; .
छठे छे दुर्योधन राय, सातमे जयद्रथ कहेवाय.
अग्यार क्षोणी जोद्धा जेह, गढने कागरे उभा तेह;
पच शब्द वाजित्र बजाडे, अभिमन्यु उपर ते त्राडे.
गुर्ज गुप्ती गदा छे हाथ, फरशी त्रिशूळ मूशळ साथ;
खडग काती कटारी पाश, देखी शत्रु पामे त्रास.
नग्न आयुध ते त्या करी, उभा जोद्धा करमा धरी;
एवे आव्यो अभिमन्यु जोध, आणी अत.करणमा क्रोध.
प्रेर्या अश्व चारने सग, जाणे पडिया दीप पतग.

साखी.

पडे दीप पतग तेम, अभिमन्यु रण गाजी रह्यो;
नमस्कार गुरुने कर्यो, तेणे आशिरवाद हेते कह्यो.

ढाळ.

गुरु द्रोण मुखथी बोलिया, साभळ अभिमन्यु वात;
रीसाइने शु आवियो, घेर वाट जुए तुज मात.
माते मोकल्यो आवियो, हु कहावु अर्जुन तन;
गुरु जाणीज पितातणा, करवा आव्यो पूजन.
वैशपायन एणीपेर बोल्या, शुण जन्मेजय राय;
विस्तारी तुजने समळावु, भारतनो महिमाय.
पेहेले कोठे चाली आव्यो, अर्जुन केरो तन;
साथे साथी एवा चडिया, जाणे चडियो वन.
दुयाधनना जोद्धा सर्वे, धारे चिता मन;
शके अर्जुन आवियो, के अर्जुन केरो तन.
द्रोण गुरुने सन्मुख आवी, उभो अभिमन;
पारथ सुतने जोइने पछी, बोल्या द्रोण वचन.
तु बाळकने जोइ दया, आवे ओसरु मनमाय;
युधिष्टिरने शु थयु, जे तने मोकल्यो हाय.

---

१ दुर्योधननो पुत्र २ दुयाधननो भाई

जारे बाळक बाडुआ तुं, मोकल तारो तात;
अहिं रमतनु काम नहि, हु करीश तारी घात.
एवी वाणी साभळतामा, कोप्यो अभिमन;
बालक तो नव जाणिये हु, क्षत्री केरो तन.
कौरवरूपी काष्ट केरा, वृक्षो उग्या वन;
तेमा हु अग्निरूप थइने, सर्वे करु दहन.
ते माटे हु तमने कहुछु, साभळिये महाराज;
हु ब्राह्मण जाणी ओसरूछुं, नहिकर लोपु राज.
पहेलो घाव करो मुजउपर, हरख आणी मन;
द्रोण गुरु कहे केम करु हु, तु छे नानो तन.
अभिमन्युए एक बाण काढ्यु, जोता तेणीवार;
मंत्र भणी गुरु उपर मेल्यु, आणी हरख अपार.
बीजु बाण वेगे काढीने, मेलियु रणमाय;
द्रोणे वळतु छेदियु, ते क्रोध आणी त्याय.
द्रोणे वळति बाण मेलिया, वेगे काढी चार;
आवता ते छेदीने नाख्या, पारथने कुमार.
अन्यो अन्य वढे बे एपण, कोइने न वागे वाण;
समर्थ त्या जोद्धा उभा, आश्चर्य थया निर्वाण.
वैशपायन बोलिया तु, शुण जन्मेजय राय;
अभिमन्युए सभारी त्यां, कृष्ण तणी विद्याय.
क्रोध करीने करमा लीधां, वेगे सातज बाण;
मंत्र भणि रण मध्ये मेल्या, पारथ पुत्र सुजाण.
गर्जना करता ते आव्या, क्षण नव लागी वार;
आवी रणमा भेदिया छे, तेणे जोध अपार.
अश्व गज रथ छेदिया त्यारे, द्रोण कोप्या मन;
दश बाण काढीने मेल्या, रक्त करी लोचन.
अभिमन्युना सारथिने, रथ सहित कर्यो पतन;
बिजो रथ मगावी बेठो, पारथ केरो तन.
तेणे समे त्यां अभिमन्युने, चढी अतिशे रीस;
कोप करीने बाण मेल्या, वेगे काढी वीश.

बिजे कृपाचार्य त्या होय, त्रिजे कोठे कर्ण जोय;
चोथे अश्वथामा सार, पाचमे कोठे लक्ष्मण कुमार.
बीजा नळिया राजकुमार, सुत दुःशासननो चार;
छठे छे दुर्योधन राय, सातमे जयद्रथ कहेवाय.
आगार क्षोणी जोद्धा जेह, गढने कांगरे उभा तेह;
पंच शब्द वाजित्र बजाडे, अभिमन्यु उपर ते नाडे.
गुर्ज गुप्ती गदा छे हाथ, फरशी त्रिशूळ मूशळ साथ;
खडग काती कटारी पाश, देखी शत्रु पामे त्रास.
नग्न आयुध ते त्यां करी, उभा जोद्धा करमां धरी;
एवे आव्यो अभिमन्यु जोध, आणी अंतःकरणमां क्रोध.
प्रेर्या अश्व चारने संग, जाणे पडिया दीप पतंग.

साखी

पडे दीप पतंग तेम, अभिमन्यु रण गाजी रह्यो;
नमस्कार गुरुने कर्यो, तेणे आशिरवाद हेते कह्यो.

ढाळ.

गुरु द्रोण मुखथी बोलिया, सांभळ अभिमन्यु वात;
रीसाइने शुं आवियो, घेर वाट जुए तुज मात.
माते वोळाव्यो आवियो, हुं कहावुं अर्जुन तन;
गुरु जाणीज पितातणा, करवा आव्यो पूजन.
वैशंपायन एणीपेर वोल्या, शुण जन्मेजय राय;
विस्तारी तुजने संभळावुं, भारतनो महिमाय.
पेहेले कोठे चाली आव्यो, अर्जुन केरो तन;
साथे साथी एवा चडिया, जाणे चडियो घन.
दुर्याधनना जोद्धा सर्वे, धारे चिंता मन,
शके अर्जुन आवियो, के अर्जुन केरो तन.
द्रोण गुरुने सन्मुख आवी, उभो अभिमन;
पारथ सुतने जोइने पछी, बोल्या द्रोण वचन.
तुं बाळकने जोइ दया, आवे ओसरु मनमांय,
युधिष्टिरने शुं थयुं, जे तने मोकल्यो ह्यांय.

---

१ दुर्योधननो पुत्र २ दुर्योधननो भाई.

मार्यु अर्द्ध चद्र ते बाण, कीधा शत्रु कचरघाण;
बाध्यो जुद्ध विषे अभिमन, कृपाचारज ओसर्या मन.
गद बीजो लीधो तेणीवार, गाजी रह्यो अभिमन्यु कुमार;
कोठा बेयनु कीधु काम, आव्या त्रीजा केरे ठाम.
कर्ण उभो दीठो ते ठार, कुवरे कर्यो नमस्कार;
तमो अमारा पूज्य छो स्वाम, घटो अर्जुन केरे ठाम.
प्रहार पहेलो करोजी तमो, घणु शु मुखे कहिये अमो;
पछे जो माने मारु मन, तो हु सेवा करु राजन.
कर्ण कथन एवा साभळी, अतःकरण गयु परजळी;
कर्णे बाण मेल्यु थइ क्रूर, अभिमन्युए कीधु चूर.
अर्जुनसुतनी करवा घात, कर्णे बाण मेल्यां पछि सात;
पारथसुते साचव्यो देह, कर्या रजरज कटका तेह.
बाण काढी मेल्या पछी सोळ, अभिमन्युए जोयु जोर;
आवता ते अभिमन्यु छेदे, एके बाण तेने नव भेदे.
बोल्यो अभिमन्यु त्यां ततकाळ, नुकवी मे तारी त्रण फाळ;
हवे जाजे पराक्रम मारु, वृद्धपणु उतारु तारु.
एम कहीने मेल्यु बाण, आव्यु कर्णउपर निर्वाण;
कर्ण उछळीने पड्यो धर्ण, जाणीये तेतो पाम्यो मर्ण.
पाछो सावधान ते थइ, अभिमन्युसामो उभो जइ;
आव्यु नेत्रविषे बहु क्रोर, बाण मेल्यु रुडीपेर.
आवी भेदियु अश्वने काय, त्या रुधिर खरके जाय;
बाण ते समे मेल्यां कर्ण, अश्व चार पमाड्या मर्ण.
वाहनविना अभिमन्यु कीधो, प्राण सारथीनो त्या लीधो;
अर्जुन सुतने चडी त्यां रीस, बाण मेल्या छे त्यां वीस.
मार्यो कर्ण तणो मातग, रथतणो त्या कीधो भग;
कर्दम रुधिर चर्ण चपाय, देखी कायर नाशी जाय.
कुडे फरे अर्जुन कुमार, देतो शत्रुउपर मार;
कीधी बाणतणी त्या वृष्ट, कर्ण पामियो मनमा कष्ट.
कृष्णतणी जेने विदाय, केम ए थकी हार्यो जाय;
कर्ण गयो नीसरी त्याय, अभिमन्यु गयो गढमांय.

द्रोण कीधा आकळाने, दीधो छे ओसार;
अभिमन्यु आवी भडियो, ते करतो मारोमार.
शोणितनी सरिता वहेने, हय गज पाडे चीस;
हाथेथी हाथीने ठेले, छेदे जोधनां शीश.
तेणे समे दुर्योधन आवी, नम्यो द्रोणने पाय;
कहो गुरुजी केवी रीते, करशुं शो उपाय.
द्रोण कहेछे जयद्रथने तमे, तेडावो ने ह्यांय;
जयद्रथने तेडीने लाव्यो, एक पलकनी मांय.
सामासामु जुद्ध मंडाणुं, केतां नावे पार;
अश्वे अश्वने गजे गज त्यां, कोइ नव दे ओसार.

राग चोपाइ त्रण ताळनी.

प्रथम गढ करीने हाथ, बोल्यो भीमसेनने साथ;
काका जुओ पराक्रम मारुं, गुरुजीनुं तो मान उतार्युं.
भलो भलो तुं अभिमन, नाम राख्युं तें अरजुन;
एम कहेतां चाल्या त्यांय, आव्या बिजो गढ छे ज्यांय.
रह्या कृपाचार्य ते ठाम, करवा मांड्यो त्यां संग्राम;
आव्यो दुर्योधन त्यां राय, कृपाचार्यने लाग्यो पाय.
बोल्यो मुखथकी ते वचन, तमो करजो ए बाळ पतन;
गढ द्वार पासे ततकाळ, मुक्यो जयद्रथने रखवाळ.
पछे बीजे कोठे राड मांडी, कोप खसे नहि जाग छांडी;
मांहोमांही देछे मार, कोइ दे नहीं त्यां ओसार.
मेल्युं अभिमन्युए एक बाण, लेवा शत्रु केरा प्राण;
कृपाचारजे आवतुं छेद्युं, बाणे तो कोइने नव भेद्युं.
रुधिये करी क्रोध अपार, काढी मेलियां त्यां बाण चार;
अभिमन्युए ग्रही शर पाण, आवतांज कर्यां निर्वाण.
पछे चक्रने फरशी साही, आव्यो अभिमन्यु त्यां धाइ;
पग प्रहारे जोद्धा नासे, अभिमन्यु तणो धरि त्रासे.
कृपाचार्य अभिमन कुमार, मांहोमांहि त्यां देता मार;
योद्धा कइक कर्यो पृथ्वीपात, ते तो चालिया जम संघात.

मार्यु अर्द्ध चंद्र ते बाण, कीधा शत्रु कचरघाण;
बाध्यो जुद्ध विषे अभिमन, कृपाचारज ओसर्या मन.
गढ बीजो लीधो तेणीवार, गाजी रह्यो अभिमन्यु कुमार;
कोठा बेयनु कीधु काम, आव्या त्रीजा केरे ठाम.
कर्ण उभो दीठो ते ठार, कुवरे कर्यो नमस्कार;
तमो अमारा पूज्य छो स्वाम, घटो अर्जुन केरे ठाम.
प्रहार पहेलो करोजी तमो, पणु शुं मुले कहिये अमो;
पछे जो माने मारु मन, तो हु सेवा करु राजन.
कर्ण कथन एवा सांभळी, अतःकरण गयु परजळी;
कर्णे बाण मेल्यु थइ क्रूर, अभिमन्युए कीधु चूर.
अर्जुनसुतनी करवा घात, कर्णे बाण मेल्यां पछि सात;
पारथसुते साचव्यो देह, कर्या रजरज कटका तेह.
बाण काढी मेल्यां पछी सोळ, अभिमन्युए जोयुं जोर;
आवतां ते अभिमन्यु छेदे, एके बाण तेने नव भेदे.
बोल्यो अभिमन्यु त्यां ततकाळ, चुकवी मे तारी त्रण फाळ;
हवे जाजे पराक्रम मारु, वृद्धपणुं उतारु तारुं.
एम कहीने मेलियु बाण, आव्यु कर्णउपर निर्वाण;
कर्ण उछळीने पड्यो धर्ण, जाणीये तेतो पाम्यो मर्ण.
पाछो सावधान ते थइ, अभिमन्युसामो उभो जइ;
आव्युं नेत्रविषे बहु झेर, बाण मेलियु रुडीपेर.
आवी भेदियु अश्वने काय, त्यां रुधिर खल्के जाय;
बाण ते समे मेल्यां कर्ण, अश्व चार पमाड्या मर्ण.
वाहनविना अभिमन्यु कीधो, प्राण सारथीनो त्यां लीधो;
अर्जुन सुतने चडी त्यां रीस, बाण मेल्यां छे त्यां वीस.
मार्यो कर्ण तणो मातग, रथतणो त्यां कीधो भग;
कर्दम रुधिर चर्ण चपाय, देखी कायर नाशी जाय.
कुंडे फरे अर्जुन कुमार, देतो शत्रुउपर मार;
कीधी बाणतणी त्यां वृट, कर्ण पामियो मनमां कष्ट.
कृष्णतणी जेने विद्याय, केम ए थकी हार्यो जाय;
कर्ण गयो नीसरी त्यांय, अभिमन्यु गयो गढमांय.

ढाल.

त्रीजो गढतो हाथ आवियो, गयो ते चोथे ठाम;
रथविना अभिमन्यु पाळो, करे महा संग्राम.
भीमसेन पाछळ थको ते, रक्षा करे निर्वाण;
एनी दोटमा जे चडि आवे, तेना ते ले प्राण
एम करता चाली आव्या, चोथा गढने द्वार;
अश्वत्थामा देखी कुंवरे, कीधो नमस्कार.
वृद्ध जाणी दया आणी, बोल्यो मुखथी वात;
ब्राह्मण जाणी मन ओसरु, केम करु मेहेली घात.
अश्वत्थामा कहे अभिमन्यु, शो करे विचार,
बालक माटे ओसरूछु, नहिकर करु प्रहार
एम कहीने बाणज मेल्यु, अभिमन्यु उपर एक,
आवतु ते छेदियु, अभिमन्युए करी विवेक
पार्थपुत्रे बाण मेल्या, काढीने त्या त्रण;
कइकनी छेदी नासिकाने, कइना छेद्या कर्ण
हाथ चरणविना कया कइ, मुखथी पाडे चीस,
उजाता मारग धसे की, धडविनाना शीस.
अश्वत्थामा कहे अभिमन्यु, रहेजे आणे ठार,
दश बाणो काढीने मेल्या, वेगे तेणीवार
आवता अभिमन्युए दीठा, चढी अतिशे रीस,
पार्थपुत्रे छेदिया कांइ, बाण मेली वीश.
अश्वत्थामा ओसर्याने, करे ते चिंता मन;
चोथे गढ ते गाजियो, अर्जुन केरो तन.

चोपाइ त्रण खाळनी

गढ चार अभिमने लीधा, शत्रु शीरपर पायज दीधा
घणा मृत्यु पमाड्या जोध, अंत:करणमा आणी क्रोध.
पछे पाचमे गढ ते आव्यो, सेनसहीत रुडेरो भाव्यो;
दुर्योधनसुत ते ठाम, लक्ष्मण कुंवर छे नाम.
महा पराक्रमी बळियो कहावे, अभिमन्यु सामो ते आवे;
मळ्या सरखासरखी जोड, पोत्यां मनडा केरा कोड.

देखी जोद्ध करे हुंकारा, मद माता करे खुंखारा;
नेन रक्त कर्यां बहु रीसे, करडे दांत अधर बहु पीसे.
बोल्यो लक्ष्मण मुखथी बाण, अभिमन्यु छेदिश तारो प्राण;
तु तो जोजे मनमां विचारी, हवणां तने नांखुं मारी.
एकलो आव्यो आणे ठार; केम जाइश अहिंथी बहार;
हवणां बाणे मारी पाडु, जमपुरी तने देखाडु.
तु तो जीत्यो चारे कोठा, त्यां तो हता वृद्ध मोटा;
मनमां जाणी नानो बाळ, मुकियो जीवतो तत्काळ.
हवे आवियो मारे साथ, केम मुकु आणे हाथ;
तु तो जोजे पराक्रम मारुं, भीम सहित तने संहारुं.
त्यारे बोल्यो अभिमन्यु जोध, आणी अंतःकरणमां क्रोध;
तुं ते शुं रह्यो आप वखाणे, हाथ नथी चढ्यो तु आणे.
कौरवरूपी काष्ट छो तमे, तेमां यमकुठार ते अमे;
खोदी काढु हुं सौनां मूळ, सात कोठामां उडाडु धूळ.
कौरवरूपी काष्ट अंगार, बाळी भस्म करु निर्धार;
हस्तीनापुरने मोझार, राज करशे पांडुकुमार.
पापी जाणजे सुख पधार्युं, हवे तारुं तो मान्य उतारुं;
एवी वात ते सांभळी ज्यारे, लक्ष्मण कोप्यो तेवारे.
करमां लइ धनुष ने बाण, मेलियां छे त्यां निर्वाण;
बाण मेलियुं करमां साइ, अभिमन्यु उपर आव्युं धाइ.
अभिमन्युए आवतुं छेद्युं, तेणे कोइने नव भेद्युं;
लक्ष्मण उपर मेल्युं एक, अभिमन्युए करी विवेक.
ते तो आवियुं गर्जतुं बाण, तेणे काइकना लीधा माण;
लक्ष्मण कोप्यो मन साथ, पांच बाण लीधां नीज हाथ.
ते तो आवी सेनामां भेद्यां, कै जोधतणां शीर छेद्यां;
अर्जुन पुत्रे लीधां सात, करी शत्रु उपर घात.
जोधा काइकनां छेद्यां शीशे, अभिमन्यु बहु चढ्यो रीसे;
रीसे थयो छे रातो चोळ, कर ग्रह्यां बाण त्यां सोळ.
ते तो धनुष चढावी मेल्यां, मोटी नदी तणी पेरे रेल्यां;
पछि लेइ खडगने धाय, कइ जोधा नाठा जाय.

कइ कीधा पृथ्वीपात, ते तो चाल्या जमने साथ;
कइ पड्या मृतक थइ रुप, ते तो गणे त्रास मन भूप.
कइ शीश विना रडवडता, ते हींडे घणु आथडता;
कइ कायर थइ नासे, ते तो मरिया इइडे श्वासे.
एम जुद्ध थयु ते ठार, जोधा पडिया अपरम पार;
पगपाळे अभिमन्यु धसे, लक्ष्मण पर महा झेर वसे
रीसे रक्त थया लोचन, कर्या लक्ष्मण कुवर पतन;
थयो गढमा हाहाकार, नाठा जोद्धा तेणीवार.
पछी चढी अभिमन्युने रीस, छेद्या दुर्योधनपुत्रना शीश.

साखी.

पुत्र केरु मृत्यु जाण्यु, दुर्योधन राजन,
त्राह्य त्राह्य मुखथी बोले ने, घणु करे रुदन

ढाळ.

हायेश हइयु हणे, कुटे पोतानु शीश;
कुवर मारो मृत्यु पाम्यो, शु थाशे जगदीश.
अभिमन्युए बाण मार्युं, क्रोध करीने त्याय;
दुःशासननु रुदय भेदीने, गयु ते पृथ्वीमाय.
पछि तेणे अभिमन्यु उपर, पाच मेल्या बाण;
आवतां कटका कर्याते, खड्ग ग्रहीने पाण.
चार बाणे अभिमन्युए, बाळ्यो रणसहार,
पाचमे गढ ते गाजीयो, अर्जुननो कुमार.
पाचमे गढ अभिमन्यु गाजे, कृष्ण चिंतातुर थाय;
रखे गढ साते जीतीने, आवे जीवतो ह्याय.
जदुपतिए मनमा विचार्युं, भीमसेन छे पास;
त्यार सुधी ते अभिमन्यु तो, नथी पामवो नाश.
एवु धारी परवरिया, ज्या पाडुकेरा तन;
मदोमत्त मातग वळियो, छोडियो पावन.
पुरमा जइने छोडियो, मातग वळियो जेह;
प्रजा लोकोने पीडिया रहो, भवनं भाजे तेह.

हाहाकार थइ रह्यो त्या, लोक नाठा जाय;
को बळियो जोद्धो नहिजे, गजने जइने साहाय
युधिष्टिर कहे भीम होय तो, वेगे एह झलाय;
सेवकने दीधी आज्ञा त्या, भीमने तेडवा जाय.
अभिमन्यु कहे काका मारा, शु हशे सेना माय;
सबळ सोर त्या थइ रह्यो, आक्रद करे सौ त्याय.
सेवक त्याथी परवर्यो ते, आव्यो भीमसेन पास,
स्वामी तमने तेडे छे त्यां, युधिष्टिर आवास.
अभिमन्युने भीमसेन कहे, कहो हवे केम कीजे;
युधिष्टिरे तेडु मोकल्यु, शो उत्तर त्या दीजे.
अभिमन्यु कहे काका मारा, रह्यो छे कोठो एक;
सातमो तो हु नथी लेतो, तमने कहु विवेक
माटे कुवर कहे काकाजी, पडशे हवे तमारु काम;
वेगे जइ वेला आवो अहीं, थशे महा सग्राम.
त्यारे वृकोदर कहे कुवरने, आवीश क्षण एक माय;
निश्चे करीने मानजे तु, मारो प्राण छे त्याय.
आज्ञा मागी निसरियो, भीमसेन तेणे ठार;
कृष्णे एम प्रपच करीने, काढ्यो तेने बहार
छठे कोठे चाली आव्यो, अर्जुननो कुमार;
दुर्योधन त्या सामो आव्यो, करग्रही हथियार
सामासामु युद्ध मडाणु, क्षणु न लागी वार;
सेन सहित सबळो वढे त्या, कौरवनो कुमार.
अभिमन्युए काढी मेल्यु, क्रोध करी एक बाण;
दुर्योधननी सेना माहे, कर्यो ते कचर घाण
दुर्योधन सुत बोलियो, तमे साभळो सउ वात,
अर्जुनसुत छे एकलो, तमे करोने एनी घात.
एवी वाणी साभळीने, योध धश्या चोपास;
अभिमन्यु उभो नथी गणतो, ह्रदये कोनो त्रास.
चोपासेथी सबळ मारे, कुवर बचमा एक;
सर्वे मळी कौरवो चड्या पण, न गणे कोने छेक.

कुवर सर्वने पडियो पुरो, समुद्र पेरे जाण;
आवता सर्वे चुकावे, फरीने मारे बाण.
शल्य मूर्छित थइ पड्यो, ने पडियो तेनो भात,
अभिमन्युए बाण मेलीने, कीधी तेनी घात.
त्रणवार सामो धस्यो ते, आणिने मन रीस;
खड्ग लइने अभिमन्युए, दुष्टनु छेद्यु शीश.
अभिमन्यु भेदायो थको पण, उपन्यो महाक्रोध;
बाण त्या असख्य मेलीं, नसाड्या सर्व जोध.
धशीने अतकनीपेरे, प्राण लेछे एह;
सहींथकी जेम शेरे नासे, तेम नासे तेह.
अश्व गज रथ सारथी, चोपास नाठा जाय;
सर्वे सुभट ते जाय नाठा, अभिमन्यु पुठे धाय.
नीरसहित ज्यम कमळ शोभे, पड्या पृथ्वीमाय;
तेम मस्तक रडवडेछे, मुगटसहित त्याय.
वैशपायन बोलियो, तु शुण जन्मेजयराय;
देशदेशना नृप हता ते, सर्वे पथ पळाय.
पारथ पुत्रे सेन सहार्यु, कर्यो ते अवनी रोळ;
रुधीरनी त्या नदी चालीने, गीध करे कल्लोल
सातमे गढ कुवर आव्यो, करे महा सग्राम,
सुभट सर्व रह्या छाना, कोइ न घाले हाम.
मस्तक मुगट ढळी पडे, हथियार न थभे पाण;
शरीरनी शुद्धि विसरीने, मुखेथ्न बोले बाण

सार्खी

सर्व वखाणे त्या कने, अभिमन्यु गाजी रह्यो;
दुर्योधन ते देखीने, क्रोध मन साथे ग्रह्यो

चोपाइ

छ कोठा कीधा छे हाथ, पछी आवियो सातमा साथ;
भीमसेन तणो जुए वाट, मन साथे करे उचाट.

---

१ वाघ

छ कोठानी हु लेतो वात, ते तो जीवा करी मे घात;
काके आप्यु तु वचन जेह, सातमो तो आव्यो तेह.
एवो करेछे चित्त विचार, दुर्योधन आव्यो ते ठार;
दीठु दुर्योधने दळ पात, तेड्या पोताना शत भ्रात.
अरे वीरा सउ आ समे, करो युद्ध एकठा थइ तमे;
सोळ वर्षनो बाळक एह, रण जश लइ जाशे तेह.
ग्रही गदा ने मारो प्रहार, नहितो राज गयुं आणे ठार;
शत बाधव रणमा रही, युद्ध करता अधर्मे सही.
विकारे दुर्योधन राय, लाव्या कुवरने व्युहमाय;
अरजुनसुत मेले दोट, करे कौरव उपर चोट.
पड्या सुभटना हथिआर, लइ अभिमन्यु मारे ते ठार;
प्राण तजिया ने पडिया शरीर, चारे पासे नाठा वीर.
पट् जोद्धा छे महाबळी, तेणे घेया अभिमन्यु वळी;
छुटा प्रहार गदाना करे, एकी वारे सो सो पडे.
अभिमन्यु कहे पापी साभळो, तमे सो अने हुं एकलो;
एवु सुणी दुर्योधन राय, मारे गदा अभिमन्यु काय.
पड्यो मूर्छा थइ शुद्ध टळी, पड्यो मुगट माथेथी ढळी,
शत बन्धु दुर्योधन तणा, पापी ते तव मारे घणा
स्वप्न हतु उत्तराने जेम, अभिमन्युने त्या हतु तेम,
वळी उठ्यो अर्जुन कुमार, धरी क्रोध ते अपरम पार.
सर्वे कौरवना हरू प्राण, करू मारीने कचरघाण;
तेनो मनमा आणीने त्रास, कौरव कोइ न आवे पास.

राग मारु.

सातमे गढ अभिमन्यु आव्यो, जुए भीमनी वाट;
शामाटे आव्यो नहि, एम करे उचाट. काका आव्यनेरे. टेक.
वचन दइ मुजने गया, जुधिष्ठिरनी पास,
सातमे गढ मने घेरियो, त्या हती तारी आश काका०
माताये मने वारियो, वार्यो घरनी नार;
घेर हतु शु काका मारा, लाव्यो आणे ठार. काका०

युधिष्टिरे ना कही, कही नीकुळ सहदेव;
वचन दइ उठाडीयो, भीम बळो तुज टेव. काका०
कोण जनमनु वेर हतु जे, मनमा राख्यो आटो;
एकलो मूकीने गया नाशी, कढाव्यो मारो काटो. काका०
काल जालधर जीती आवशे, पीता मुज अर्जुन;
त्यारे तमने पूछशे, क्या गयो सुत अभिमन. काका०
त्यारे त्या शो उत्तर देशो, मने मरावी ह्याय;
आवी तमने पूछशे जे, कुवर मारो क्याय. काका०

साखी.

काका काका कही रुए, मुके मुख निश्वास;
पड द्वारे जडे नहि, जीव्यानी शी आश.
कुडु कीधु भीमडा, मने नाख्यो अरिदळ पास,
वचन दीधु फरमाहरे, अति अहारीनो शो विश्वास.
अहारी व्यसनी आळसु, लपट हरामी जेह;
परदु खे दाझे नहि, तेने वालो निज देह.

चोपाइ त्रण ताळनी.

अभिमन्यु करे विचार, गढमध्ये तेणीवार;
नीकळवाने घणु तरफडे, मध्य कोठानु द्वार न जडे.
अरोपरो थइ शोधे द्वार, देखे नहि जे नीसरे बार;
अकळायो मेली मन आश, हवे भीमनो शो विश्वास.
मे तो जाण्यु वेलो आवशे, आम शु ए डाट वाळशे;
केम गम्यु काका तने, सत्य वचन आप्यु जे मने.
वळी मनशु आणी धार, बाध्या आयुध बावन वीर;
चक्रागढ तलपवानु करे, पोंचे नहीं जे उगलु भरे.
कृष्णे एनो मर्म नव कह्यो, अभिमन्यु गुचाइने रह्यो;
भीम भीम कही पाडे साद, कौरव घणा वजाडे नाद.
जोरे भीम साभळशे एह, तो त्या वारे धाशे तेह,
शरे नथी आपणनो ठार, करे कौरव एवो विचार.
पच शब्द वजाडे सही, कान पड्यु सभळाय नही;
दु.ख पामियो मनमा घणु, हवे बळ कशु विजा तणु.

पोतानाविना जूठी आश, एवुं कही मेल्यो निश्वास;
पछे घालीने मनमां हाम, अभिमन्यु उठ्यो ते ठाम.
धनुषबाण लेइने हाथ, वढवा उठ्यो कौरव साथ;
धर्यो अवनीमां अवतार, मरवु छे एकज वार.
हवे थनार होय ते थाय, शे अर्थे आवे आ काय;
सुरो थइने जे सामो मरशे, तेने इंद्रनी अप्सरा वरशे.
एवी घालीने मनमा हाम, अभिमन्यु करे संग्राम;
सामसामां बाण त्यां मारे, कौरव जोधाने संहारे.
नासे घालीने दांते तर्ण, जोद्धा जाणे जे आव्युं मर्ण;
अभिमने मार्युं मोह बाण, कौरव मोह पाम्या निर्वाण.
हता दुर्योधनना शत भ्रात, पड्या मूर्छाये पृथ्वीपात;
जोद्धा ज्यां त्यां नाठा जाय, अभिमन सामो कोइ न थाय.
कौरवने नसाडी त्यांय, अभिमन्यु उभो गढमांय;
आ गढ फेरो नव जाणुं मर्म, न भाग्यो भेद ने पड्यो भर्म.
अरे दैव हवे शु करुं, क्यां थइने बार नीसरुं;
एवो मनशुं विचारज करे, वाट न सुझे चिंता धरे.
धनुष एक छेडो मेल्यो धर्ण, बीजो ग्रीवा आगळ कर्ण.

એવામાં દૈવયોગે ધનુષ્ય તૂટી તેથી ધનુષ્યનો છેડો ગળામાં પેશી ગયો તેથી અભિમન્યુ મરણ પામ્યો.

जयद्रथ केरुं प्रेरायु मन, आव्यो खड्ग लइ ज्यां अभिमन;
तेणे मनमां आणी रीस, छेद्युं अभिमन केरुं शीश.
दुंदुभि नाद हवो ते दन, हरखो मन दुर्योधन;
कळो विशेश कोठामां थयो, सांभळी भीम धाइ गयो.
गदा लइ आव्यो गढमांय, दीठो नही ते वढतां त्यांय;
वात शुणी अभिमन्यु तो ढळ्यो, दीगमूढ थइ पाछो वळ्यो.
आव्यो भीम युधिष्टिर पास, शुणी वात मूक्यो निश्वास;
स्वामि सुतनो आव्यो अंत, कहेतां मांही कर्यो कल्पांत.
जुधिष्टिर दुख पाम्या घणु, शुणी मर्ण अभिमन्युतणु;
वांक नहि ते कुवर तणो, चढ्यो दोष आपणने घणो.

हाथे करीने मराव्यो बाळ आप्यो बोल न लीधी संभाळ,
चारे वीरा कुताना तन, दु:ख आणीने करे रुदन.

ढाळ.

वैशंपायन बोलिया, शुण जन्मेजय राजन;
सुभद्रा कुंता आविया, ज्या पडियो अभिमन.
उत्तराये साभळीयु जे, रण ढळियो भरथार,
शरीरनी शुद्ध विसरीने, चाली तेणीवार
रुदन करती साचरी, अबळा ते बाळे वेश,
आक्रंद करे अवनी ढळे, ने काढे समूळा केश.
त्राह त्राह मुखथी करे, आवी अभिमन्यु पास;
म्रतक शव पडियु देखीने, मुके मुखनिश्वास.
नगर समीपे अर्जुन आव्या, शब्द सुण्यो ततकाळ,
वात शुणी अभिमन्यु ढळियो, उठी अरजुनने झाळ.
उतावळो धशीने आव्यो ज्या, हतो पोतानो तन;
अर्जुन दुख पाम्यो घणु, जोइने करे रुदन.
मूर्छा शु अवनि ढळ्यो, नहि शुद्ध शरीर लगार;
हाथे शु हइयु हणे, ने रुदन करे अपार
पुत्र पुत्र मुखथी करे ने, अवनी पछाडे अंग;
आळोटे अवनी विषे ने, थयो छे मतिभंग.
रुदया साथे चापीने, आक्रंद करे अपार,
शामाटे नथी बोलतो, मुज प्राणतणा आधार.
काळ चढ्यो अर्जुनने. रह्यो पर्ण करे सौ माय;
आज हणु ए दुष्टने हु, सध्या पेलो स्वाय
नहीकर मारी देह प्रजाळु, अग्निमा केवाय;
उगते दीन सध्यासुधी, जो दुष्टने नव मराय.
जयद्रथने मारु नहितो, नव बाधु हथियार;
अर्जुने त्या एम कहीने, पण कर्युं ते वार.

---

१ प्रतिज्ञा.

चोपाइ.

दिठो दिवस घटिका चार, अर्जुने बांध्यां हथिआर;
विकार्यो जयद्रथ रणमांय, फरि युद्ध मंडाणुं त्यांय.
अर्जुने मन आणी रीस, मेल्युं बाण जई छेद्युं शीश;
दुंदुभि नाद हवो पावन, हरख्यो युधिष्टिर राजन.
सुभद्राये कीधुं स्नान, प्रतिज्ञा पाळी भगवान.

ढाळ.

वैशंपायन एणी पेर बोल्या, शुण जन्मेजय राय;
विस्तारी तुजने संभळाव्यो, भारतनो महिमाय.
आद्य कवि मोटा रुषियो, हुं तेने नमु कर जोड;
अक्षर के पदबंध नव लहुं, कोइ न देशो खोड.
उदीच्य ब्राह्मण सहस्त्रज्ञाति, अमदावाद नीवास;
सुखराम सुत लजाराम, कहावे हरिनो दास.



शामळभट.

श्रीगोड माळवी ब्राह्मण.

भमदावाद पासे वेगणपुर जेने हाल गोमतीपुर कहेछे त्यांनो.

संवत् १७८१ सने १७२५ मां हतो.



तेना प्रसिद्ध ग्रंथ.

सिंहासनबत्रीशी, शिवपुराण, शुकबहोतेरी, रणछोडजीना श्लोको, रेवाखंड, वैताळपचीशी, मंदबत्रीशी, वगेरे.

समश्याओ विषे छप्पा.

साठ नारिये नेर, नार आठे नेर जाणुं;
आठ नरे नर एक, पुरुष ए त्रीश प्रमाणुं.
बार पुरुषे बळवंत, एक नर नरपति नेवो;
एवा नर दशसहस्र, क्षत्रिपे भोगव्य तेवो.
स्वामी जे सर्वांगिनो, कश्यप सुत सुख जोगवे;
शुभ आशिष शामळभट भणे, भूपतीनुं सुख भोगवे.
पैळ, घेडी, पैहोर, दिवसे, मासे, संवत्सर, चंद्र, सूर्य.

त्रण अक्षर निज नाम, पग विना छे पांगळियो;
वे छे बाहु विशाळ, अंगमां नहि आंगळियो.
शीश विना छे शरिर, मोज शाखेरी महाले;
अवनीथी अतरिक्ष, चरणविना ते चाले.
छे सूख करण संसारमां, लक्ष वसा शुभ लाज छे;
दाता आपे जन दीनने, कष्टनिवारण काज छे.

उत्तर—डगलो.

वृक्ष एकनां डाळ, बार भलि भात भणीजे;
पांखडि त्रणसें साठ, गुणीजन जोइ गणीजे.
चतुर जुओ चोवीश, सरस फळ तेने फळियां;
एकविस सहस्र छसें, पैत्र कविलोके कळियां.

पण चोथ भाग ए पत्रनो, गृहस्थ शिर शोभित घणो,
ते आपे मागणने अधिक, वेणिदास रखियल तणो

उत्तर–पाघडी

वैर्घ, महिनो, दिवेस, पखवाडिया, घडी, पाघडी

भातभातना रग, लिलो पीळो के रातो,
लोह लकड वृक्ष वेल, राव रक दुर्बळ मातो
कनक कथिर मणि रत्न, मेर मोटम तुछ तरणा,
जीव जतु पशु पक्षि, सिंह नर हस्ती हरणा
बळि जड चैतन नर नारियो, शायक जन लेखी लियो,
शामळ कहे चेतो चतुर नर, एक रग सौनो कियो

उत्तर–पडछायो •

तरुणी अक्षर त्रण्य, पातळी सोटा सरखी,
रसमय रुडु रूप, पडिते प्रीते परखी
सपुत त्रण्य सतान, देवने दुर्लभ दीठा,
त्रण्य लोकमा तत्व, महोना अमृत माठा
माननि मन माने ते थकी, आण आणरे आ घडी,
शामळ कहे सहेजे समजनो, कहेशो कामनि शेलडी

शेलडी

नव ग्रहमाही नाम, काम काशदनु करतो,
पूरण जश परताप, तापनी हरकत हरतो
भाग्यशाळिने भोग्य, रोग दु ख दाझे देहे,
सारग नाम सरदार, सारगपर वाहन येहे.
तेने नामे जे नाम छे, ते आव्याथी दु ख जशे,
ए शीघ्र स्वामीनी लावजो, तो वळती सोळे थशे

चादरो

कण रुडा कहेवाय, जमे नहि जन पण कोइ,
मरद वधारे मान, माननी रहे मन मोही
सार गणे ससार, भूप पण गणे भरथार,
अतिशे उज्वळ अग, सग शोभीत सादार.

गोळाकारे गुणवत छे, प्रसन्न मन पूरण करे,
जो स्वामी शाघ्र ते लावशो, शामळ कहे सोळे सरे

मोती

नार मळी दश वीश, पुरुष परठाणो जेनो,
सुरपति वाहन जात, तात जाणे सउ तेनो
नाम एक नर दोय, आवरदा बेनो सरखो,
वसे वेगळे वास, पडिते पूरे परख्यो
ते तालेवत तरुणी तणे, हस्तक रुडो नर हशे,
पड्याजी पेहेलो लावजो, आरपछी सोळे थशे

चूडो

सपुत तणु छे नाम, सभामा शोभे सेहेलो,
रजना केरु रुप, पूजन शिव करता पेहेलो
नेह करे नर नार, देह शुभ आपे दाखे,
तस्करने मन ताप, भला जन तो शुभ भाखे
ते नरना तनथी नीपने, करुप कहेछे कामनो,
शामळ कहे स्वामी लावशो, तो भजशो शुभ भामनी.

दीवानुं काजळ अथवा मेश

साठ नारिये नार, नार आठे नर जाणु,
आठ नरे नर होय, पुरुष जो त्रीश प्रमाणु
चार नरे नर नाम, भाग त्रीजो ए तेनो,
अन्न मध्य ने आद्य, अमल जोरावर जेनो
हरघडि तेने हरनार छे, दुःख टाळे जे देहनु,
वळि जे माटे कौरव हण्या, तरत काम छे तेहनु

चीर.

काया कृष्ण स्वरुप, सुघड पण सारो सउथी,
भोगी नरने नाम, रिझे ते वेहेक वहूथी
पातळिये परवेश, करे अतरिक्षथी आपे,
पक्षी गूण गणाय, पाय खटनी छे छापे

ए नर जेने अडके नहि, भाव धरीने नर भजे,
ते लाव कथ लेखाविना, तो सुदरि सोळे सजे.

चंपाना फूल.

त्रण अक्षर तरतीब, तेर गुण शोभा सारी,
राजद्वार सनमान, मान दे नर ने नारी
नपुसक छे निज नाम. पुरुष बे शोभे सगे,
काम वधारण काय, रजित तें सौंने रगे
फळ फूल विना छे फूटडु, कथ ल्याव कहे कामनी,
तो शामळ कहे सोळे सजे, जोख करता जामनी

तांबुल

शरस सरोवर एक, भर्युं छे निर्मळ नीरे,
पिये नहि कोइ पथि, हस नव बेसे तीरे.
ते सर समिप जाय, बुडे जन जोता शाशा,
दु ख न पामे देह, रहे तरतीबे ताजा.
कवि शामळ कहेछे कारसु, होंशी जनने हित हशे,
स्वामी ल्यावो सोहामणु, तो सोळे पूरा थशे.

दर्पण

चद्र बिंब आकार, नाम त्रे अक्षर नारी;
स्त्री शृगार शोभीत, बहू गुणनी बलिहारी
मुख मडन महारुप, अनूपम दीसे देहे,
तेथी शोभे नार, कान शुणी नर नेहे
लक्ष्मी खरची ते लावजो, ए वण अडवु दीसशे;
शामळ कहे शामा जो सजे, तेथी हइडु हीसशे.

काननी झाल

चार पुरुष परमाण, नेहे परण्या बे नारी;
तेने बे नपुसक तन, वपूए जुओ विचारी.
ए आठेनो ठाठ, पुरुष परमाणो एके,
नारे बिध्यो नरदेह, सुखे नीहाळो नेके.

ते लाव कथ कोडामणा, थिर थावर निस थोभशे;
कवि शामळ भट साखु कहे, सोळ सज्या ते शोभशे.

पलंग.

बाळा अक्षर बेज, नार नीची ने नानी;
नहि करपद नहि नेन, सरवकोने मन मानी.
नारि साथे नेह, रहे नारिने सगे,
उदर एहने गर्भ, राचे सौ तेने रंगे.
ते नारी नारीने गळे, तो दश रूडी दीपशे;
शृंगार सोळमा शोभशे, तो जश तारो जीतशे.

वींटी हिरा सुधां.

सरोवर सुंदर सार, नीतमे नीर भर्यु छे,
नहि आरो नहि पाळ, स्थार पण ठाम ठर्यु छे.
वनस्पति स्थिर थेल, विना पग मृग चरेछे,
विना धनुष ने बाण, विना कर चोट करेछे.
ते मारनार नथि दीशतो, मृग तेने मारी मरे;
ते लाव्य कथ कहे कामनी, देरी मन मारू ठरे

दीवो पवनथी ओलवायछे, ते

काळी नार कुरूप, अनुपम ओपे शाशी;
मोंघी मोंघे मूल, त्रणे पल तेनी ताजी
नरथी उपजी नार, अरण्यमा एतो नरशी;
महिप सभामा मान, पवित्र पडिते परखी.
छानी राखी जो छळ करी, प्रसिद्ध पोते थायछे,
शामळ कहे स्वामी लावजो, ए राया शिर राय छे.

कस्तूरी.

जीवविनानो साप, नेय पासेथी सरखो,
जराय मुरा नहि झेर, पडिते तेने परख्यो.
नर नारीनो कमर, रहे वींटी ते थारु;
वस्त्र तणे वैवेक, सुशोभा सघळी सारु.

बे दर तेनां बे पास छे, बहार गयो दीठो बहु;
शामळ कहे समशा सेंहेल छे, शुण्या थकी समजे सहू.

नाडुं.

एक नार मुख दोय, भूप सभामां भाळुं;
गौर वरण मुख एक, एक कुरूपी काळुं.
नहीं हाथ पग नहीं, घणेरी तरतिब तोले;
मारे महोकम मार, बूम पाडी ते बोले.
वळि भुंडुं अन्न भावे नहिं, काचुं कच्युं भख करे;
डाह्या दाता मनमां धरे, महिपति केरां मन हरे.

पखाज.

वाहन वृषभ वहंत, पराक्रम अधिकुं ओटे;
रुंढमाळ विशाळ, कारमी दीठी कोटे.
मस्तक गंग तरंग, चहूपासे ते चाले;
करती हणहणकार, भूप सउ नजरे भाळे.
ए समशा छे पण शिव नहिं, समजूने मन सेहेल छे;
जो वाटे घाटे दश दिशी, महिपति केरे मेहेल छे.

पाणीनी घटमाळ.

चो मुखवाळा चार, पुत्र पराक्रमी परख्या;
न को उंच के नीच, शोभिता चारे सरखा.
चार बचे बे नार, प्रीतनी रीते परण्या;
बेय नपुंसक तेन, आठ ए बेगे वरण्या.
थाय एके अळगुं आठमां, तो साते नहि कामनां;
नर एक थाय ए आठथी, कहो अरथ ए नामना.

पलंग.

नामे कहिए नार, अधर अवनीथी सांधी;
वनिताने वण वांक, स्नेहने पाशे बांधी.
मानवि जण बे चार, चडी हृदयापर बेसे;
आघी पाछी जाय, ठरी ठेकाणे पेसे.

चीसो पाडे चारे मुखे, दया न आवे देहमां;
शामळं कहे पंडित पारखो, नर नारीना नेहमां.

हिंचोळाखाट.

गुणमय गोळाकार, अधिक अमृतनो भरियो;
स्त्रीमों सहस्त्र दश वीस, कबुल ते नरने करियो.
जो कोइ पासे जाय, नार दुःख तेने देछे;
अहो निश आठे जाम, अधर रस तेनो लेछे.
ते नरने मारे पारधी, रुधिर सरव जन खायछे;
शामळ कहे मांस रुधिर सदा, चौटामां वेचायछे.

मधपूडो.

मोतीने अनुमान, पृथ्वीपर आवी पडियो;
को जाणे केनो माल, कंथ माराने जडियो.
सोंप्यो मारे हाथ, भला भोजनमां भळियो;
चोरि गयो को चोर, कोइ नर नारे गळियो.
फरि कोटि जतनथी नव जड्यो, लखजन जोतां लीजीए;
शामळ कहे शोध्यो नव मळे, तो शो उत्तर दीजीए.

पाणीनो करो.

अचरत सरखुं एक, सांभळ्युं छे सौ करणे;
जता दिठा जशवंत, तोलथी जन तो त्रणे.
खट पग ने खट हाथ, नेत्र बे दैवत देखे;
बे चरणे चालंत, ललित लक्षणथी लेखे.
ते कानने नामे नाम छे, सतवादी शोभित सदा;
कपि शामळ कहे शोधी जुओ, जूड अवय न जडुं कदा.

श्रवण कावडवाळो.

वृक्ष नही नहि वेल, नही पत्रे नहि फूले;
नही बीज यावेत्र, कहे कण अती अमूल्ये.
गुण जश अपरमपार, देश नाथामां दीठो;
देव दनुज नृप रंक, गणे अमृतथी मीठो.

छे मोंघा गुण मोती थकी, सौंघामां सौंघो सदा;
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कोइए नव तजियो कदा.

लवण अथवा मीठुं.

नारी निरखी नीच, जुओ लक्षण कहुं जेनां;
अंगे उनळी आप, बाप मा काळां तेनां.
नहीं हाथ नहि पाग, कुलक्षण तेनी काया;
मुख नासा छे नेण, नहि ममता के माया.
ते नहि पशु पक्षी मानवी, नहि जीवा जोनी जदा;
शामळ कहे सुमति सलक्षणा, ते शोधी जोशे सदा.

सर्पनी कांचळी.

एक बाळ बे मूख, एक उपर एक हेठुं;
उपर पातळुं छेक, केडथी पहोळुं पीठुं.
तळे मुख तेमां जीभ, तेह बोलाव्युं बोले;
हलावतां हालंत, वळी डोलाव्युं डोले.
इश्वर आगळ अधिकुं रहे, गुणवंता जनने गमे;
शामळ कवि कहे ते ऊचरे, जगत लोक तेने नमे.

देवनी घंटा.

रथ दीठो समरथ्य, अधर अवनीमां चाले;
अला नामे नाम, मंदिर तेनामां माले.
अपरमपार अपार, मजा पेदा त्यां थाय;
बेठे अग्नि आंच, मार पण शाशो खाय.
आवे अमुल्य कामे अरथ, मूल अल्प माटे मळे;
शामळ कहेछे शोधी जुओ, कवि रुडा ते तो फळे.

कुंभारनुं चाक.

नीच घेर छे नार, देश वाघामां दाखे;
मुखमां मोटी जीभ, रीशथी बाहार राखे.
नहीं हाथ नहि पाग, शीशविना मुख बोले;
फरे छत्र ते शीश, जमे कण अधिक अतोले.

घरधणि तो गीतो गायछे, पवित्र नर पुठे फरे;
शामळ कहे एहु एहनु, मोटा जन मस्तक धरे.

घाणी.

चालुर नर तु चेत, एक अचरत में दीठु;
सुंदर रूप स्वरूप, अधिक अमृतथी मीठु.
काया उपर हाड, हाडपर नाळ भणीजे;
नाळ उपर छे रुधिर, सुगुण तेनाज गणीजे.
खरि ते उपर तो खाल छे, खाल उपर वाळज नथी;
वळि मुखमांथी अमृत झरे, शामळ कहे कही कथी.

केरी.

प्रमदा एक प्रचंड, अधर अवनीपर रावे;
उपर उभा वे चार, जेम नचवे तम नाचे.
ज्यम होय जेठी मल्ल, जोर झाझेथी झूझे;
बोले बोल बलवंत, धरा नाधी त्या धूजे.
पाणी तो तेह पिये नही, अन्न अलेखे खायछे;
वळि चरण नथी पण चाच छे, एहु एनु सी चहायछे.

जे वडे पुंवा खंडायछे ते ढींकणी.

भर्युं नारिमा नीर, पुरुष एक पीवा साध्यो;
ने नारिये बळवंत, अबळा सबळो बांध्यो.
अवनीथी अंतरिक्ष, नार नचवे त्यम नाचे;
नारु उत्तम वश, रिद्धि रुडीथी राचे.
परभाति राग रुडे स्वरे, गुण रुडेरा गायछे;
शामळ कहे घेर श्रीमतने, जरुर एह जणायछे.

वलोणु.

कहु वरतुळ आकार, छत्र जेवी छत छाजे;
शत्रु सरीखा साल, भामनी देखी भाजे.
वस्त्राभरण विवेक, फूल भरिया भली भाते;
मोंघी छे महामुल्य, जोइ जोरावर जाते.

शूरामांहि शूरी घणी, सौथी आगळ संचरे;
अरिगंजण रक्षण देहनी, अर्थ कवी शामळ करे.

ढाल.

मस्तक पाली मूल, दिठो में तेनो डंमर;
शुंढाळो समरथ्थ, हस्ति नहि काळो भंमर.
प्रौढुं दीसे पुंछ, लांबि एक पासे चोटी;
मेह समोवड मान, मूल मर्यादा मोटी.
आहार अन्न ओपे नहि, पेट भरी पाणी पिये;
शामळ कहे व्रत घणां करे, कहो अरथ कारण किये.

पाणीनो कोस.

चतुर चेत मुख चार, नहीं ब्रह्मा ब्रह्माणी;
वृषभारूढ वाहंन, नहीं रूद्रे रुद्राणी.
जळ पूरण जशवंत, नहीज नवाण नवाणी;
सेवक शोभे साथ, नही राजा के राणी.
ए अकलवंत अंतर धरो, शुं वळि वळी वखाणिये;
छे समशा कवि शामळ तणी, जशवंता जन जाणिये.

पाणीनी पखाल.

रतनधी रूडो अमुल्य, फूल फल सफळे फळियो;
करे कथिरनुं कनक, बहू गुण तेथी बळियो.
साग शिशम वृक्षवेल, भार अढारे भारी;
अमृतफळ सहकार, तेथी शुभ शोभा सारी.
छे लाज रखण सौ लोकनी, चहाय देव ने दानवी;
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, महासुख देयण मांनवी.

कपास.

पांखाळो परतापि, नही पंखीमां पूरो;
धंध मचे त्यां धाय, नही शामद के शूरो.
गाजंतो गंभीर, मेहमां कोइ न प्रमाणे;
छे पातळियो छेक, जुए ते तो जन जाणे.

लाडकडो ते रिपु लोकने, जे छे जमकिंकर जसो,
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कहो अरथ ए ते कशो.

तीर.

सुके काट फळ लाग, तेनि शोभा छे सारी,
त्रण अक्षरमा तोल, नाम कहेताना नारी
लाबि पातळी लाठ, कल्क कायामा कुडी;
जुवानिनु छे जोर, बहु जन कहेछे बुडी
आशु ते फळमा झेर छे, चपळ लोक शु चायछे,
शामळ ते फळ आरोगता, जन जमलोके जायछे

वरछी

लाजड पुठ ल्याय, नहीं यादर दूकडियो,
राती माजर शोश, नहीं मानड कूकडियो
अतिशय झेरी अग, नहीं योठी नहि तापे,
वृटि समे याधत, तरुण तो थाये तापे
बनमा वसतीमा पण वसे, तोल काइ तेमा नथी,
कवि शामळ कहे जे समजशे, कहु डाह्यो तेने कथी.

कावडो.

नारी एक अनूप, सरस शोभती सेहेली,
बे अक्षरमा नाम, मूढ हृदयामा मेली
उदर वचे एक शाग, एक आले दिल देखे,
पवित्र सग पीसाय, डाहि दुनिया पुर पेखे
ते मुखथी जळ माशन करे, शिंगेथी आले झरे,
कवि शामळ कहे शोभे तहा, ज्या वरने कन्या वरे

झारी

छेल कुदतो छेक, एक कहे ए तो धोरी,
शिंग नथी ते शशि, कहे सारे तो तोरी
पीठे नथी पलाण, सारे तो मेडक माणे,
नथि रहेतो ते नीर, जरूर कोइ शशलो जाणे.
पण शशलाने पग चार छे, पग विण आतो परवरे;
शामळ कहे अर्थ सहेल छे, रूडा जन रुदये धरे.

चाचड.

पुण्य सुपात्र पवित्र, कूल एवानी कन्या;
किधो पितानो काळ, एह पण मोटो अन्या.
वरी वडाउवा साथ, जात रूडो ते जाणी;
काइ न चड्यु कलंक, वडा लोकोए वखाणी.
कहो कवण नार पीता कवण, कवण वडाउवाने वरी;
वळि कवण कूळ पेदा थइ, शामळ कहे ते सुंदरी.

छाश.

नही नपुंसक नार, नकी नरने छे नामे;
अमृत तुल्य आहार, फरता न ठरे ठामे.
निर्मळ नीर शरत, पूर्ण गुण अपरम पारी;
दुर्लभ जाणे देव, सकळ गुण शोभा सारी
छे तरा तेह त्रण लोकमा, भाग्यशालि जन भोगवे;
शामळ कहे तेथी नीपजे, जे जर गाठे जोगवे.

कोल, शेलडी पीलवानो.

जळमा रहि जीवत, नही मेडक नहि मच्छी;
चारे दिश चालत, नही पशु के नहि पक्षी.
पग विण वहे प्रवाह, पवन पण वहि नहि पाणी;
लक्ष्मी लीला लेहेर, नही राजा नहि राणी.
छे तत्व तोल तारण तरण, बुडताने तारे बहू;
वळि पार उतारे पलकमा, शामळ कहे समजो सहू.

नाव.

एक मात संतान, नपुंसक ने एक नारी;
ते बेना संतान, अलेखे अपरम पारी.
नपुंसकना संतान, अरथ अधिके नव आवे;
वडे मूल वेचाय, भूप जेवाने भावे.
बाळक जे तेनी बेहेनना, सर्व अरथ तेथी सरे;
शामळ कहे पण सोंघा सहु, कोडि कोडि करता फरे.

सोनुं अने माटी.

शामा छे शामळी, स्वरूपे पण शोहती;
भमराळी भरपूर, मरद मोटम मोहती.
वपु वरणागणी वेश, वळी वळवाळी वकी,
दुशमन गजण दाख, सार शोभित सिंह एकी
ते नार वडे नर शोभशे, ते विण मुख रुजामणा;
कहे शामळ ए समझा कहो, भलि रीते लेज भामणा.

मूछ.

पखणि एक प्रमाण, कोडथी नारि कहावे,
ज्या मोकलिये जाय, आप तेडावी आवे.
ऊडे ते आकाश, नही समळी नहि गरजण,
सूत्रसहित शोभत, नही दाइ के दरजण
गभीर घोषथी गरजती, धजा फरुके बारणे,
शामळ कहे शाणा समजजो, कवण नार ते कारणे.

पडाइ

प्रतापवतो पुरुष, जनोइ अग धरेछे,
मोढ पेखिये पेट, शिग एक शीश सरेछे.
चरतो साते चाच, कोटिघा नृत्य करेछे,
बाळक तेज्यु बाह, ठामने ठाम ठरेछे
फरि जाणेछे ते फूदडी, घोर स्वरे गुण गायछे,
शामळ कहे तेना सगथी, वधते मुर पेचायछे

रेशमनो रेंटियो.

अचरत एक अपार, वपू जोता वाकडियु;
पाठळ पुठ विशाळ, शोभतु मुख साकडियु
रूप बहू बहु नाम, धणी वावत मुख बोले,
छत्रिश गगनि उद्य, दशे दिशामा ते डोले.
सोलाव्यु बोले नीच घेर, उच अमिरने वश करे,
शामळ कहे समशा शोभती, धारक रुडा मन धरे.

दारणाइ, नूर, बणगुं

निरखी नहानी नार, काइ उजळी काइ काळी;
कपटी कूड कल्क, पडमा पोठी पाळी.
पग लागा बे वाहु, बंध बांधी छे वेडी;
अनमी नर अहकार, टेक रासती टेढी.
ते भामनि भोंडक भोगवे, भूपतिनी पासे भजे;
दुशमन तेने देखी डरे, शामळ कहे शोभा सजे.

कटारी.

शीश विनानी नार, मूख मोटु सुख माणे;
भीरिंगनो जे भक्ष, जमा ते शाशु जाणे.
पलक न राखे पेट, वळी ऊठे वळि बेसे;
पातळु थइने पेट, तेह पृथ्वीमा पेसे.
वाका कडुणने वश करे, वळताने वाळे वहू;
समस्या केडे तो सेहेल छे, शामळ कहे शोधो सहू.

धमण.

नौतम निरखी नार, जुल्मवाळी झळकती;
नही हाथ नहि पाग, लाड शाखे ल्ळकती.
मंदिरमा माल्त, ओपती ओढी पेहेरी;
नासे थइ निरमाल्य, वाद करतो जे वेरी.
छे नारि जात निरबळ नही, काळि करूप काया थकी;
शामळ कहे शाणा समजशे, कहु डाह्या तेने नकी.

तरवार.

आव्यो सोदागर एक, माल लालेणो लाव्यो,
गरथ कमावा काज, भलो सउ जनने भाव्यो
हय हाथी सुखपाल, लक्षधा लाखे लेखे;
जेने जेनु काम, दृष्टिए दुनिया देखे.
पुछि तेज घडीने ते दिवस, रह्यो न पैसे रोकडो;
हुडी पत्री तो होयशी, दिशे न गाठे दोकडो.

मार्टीनां रमकडां पड्याथी भांगी गयां.

नही पुरुष छे नार, निहाळी जोता नामे;
चंद्रबिंब आकार, नथी ते ठामे ठामे.
राजद्वार रहत, अधर अवनीथी बाधी;
ज्योतिष विद्या जाण, समय देखीने साधी.
ते मार खाय महोकमपणे, बूम पाडी बोले बहु;
नाना मोटा नर नारियो, शामळ कहे शुणे सहु.

घडियाळ.

एक नारि निर्माण, प्रमाणिक जने प्रमाणी,
बीश पुत्र बळवत, त्रिविध शु कहु वखाणी.
तेने सुत चश्चार, सुता बे बे वळि तेनी;
पुत्रीनो परिवार, जगतमा शोभा जेनी.
चचल सुत तो चश्चार छे, तेह सवाया शेर छे;
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, महिमा मोटो मेर छे

वीश मणनी खाडी.

पुरुष एक वयवृद्ध, खरि तेने खट नारी;
तेने बे बे तनुज, तनुजने सुदारि सारी.
एक श्वेत एक शाम, पुत्र पछि तेना आशा;
पदर पदर प्रमाण, तेह वळी कहिये ताजा.
ऐ नाममात्रनो नाश छे, कोड शास्त्र कहेछे कथी;
पण शामळ ए परिवारनो, नाश काइ काळे नथी.

संवत्सर अथवा वर्ष.

पुरुष एक पवित्र, पराक्रमि दीठो पोढो;
चचळ चारु चाल, जाण जशवतो जोडो.
राजमारगे रोज, मोज आशेरी माळे;
जर विद्यानी जोस, चहि चोखुटे चाले.
नर एक नारि बे निरखिये, अधर उपाडीने लिये;
छे नाम एक बे नारनु, कहे शामळ कारण किये.

पावडीनो जोडो.

व्यडळ मळी दश वीश, नपुंसक टोळु कीधुं;
सीयक नानी नार, बधने बांधी लीधुं.
नवराव्युं धरि नेह, रुदेशा राखि रमाड्युं,
परमेश्वरथी प्रथम, जुगतथी तेने जमाड्युं.
तेनुं जूठूं सौ को जमे, गुण तेना पण सउ गणे,
शामळ ए समश्या शोधशे, घटमां जे डहापण घणे

पत्राळुं.

नारि छे नव रंग, नहि मा बापनि सृष्टी;
नही बीज वावेत्र, नही निपजावे वृष्टी.
नहि अवनी आकाश, नही कोई तेनुं जोडुं,
छे मुख नासा नेण, पुठ पण परठ्युं पोढुं.
ते नारि नारिये नथि जणी, स्वरुप उजळे सांचळी[१];
परजो तो पेहेरो पाघडी, नही तो पेहेरो कांचळी.

सर्पनी कांचळी.

अतिशय मोटूं मुख, बेय पासाथी सरखुं,
एकज सींग अनूप, विना पाणी ते परख्युं.
लक्ष हजारो लोक, सौ रहे तेने शरणे;
निरमळ साथे नेह, चाल चाले पण चरणे.
समश्या छे सागर जेवडी, अकल्पवत कहे आवड्युं,
शामळ कवि कहेछे शीखवुं, नकी कहो जो नावड्युं.

नावडुं.

नहि नर के नहि नार, नपुंसक सरखुं नामे;
देश देश प्रवेश, घणा गुण गामे गामे.
ज्योतिष विद्या जाण, शास्त्र वनवानी बूझे;
खट् शास्त्रो भणनार, तेने पण तेथी सूझे.
अजवाळु एथी अवनिमां, जे भविष्य जाहेर करे;
आवरदा ओछो एहनो, वर्षे जीवि वळती मरे.

टीपणुं.

---

१ सांचळी—सांची—खरेखरी.

गोळ पुरुष गुणवंत, दिठो मे गामे गामे,
दशशिर मळतु नाम, नही रावण ए ठामे.
ए थाए असवार, धरे वाहन शोभाते;
चतुर चूकवे न्याय, पूछे जो मानव जाते
या कोइनु मही राखे नही, लांच कोइनी नव लिये,
शामळ कहे ते सतवादियो, देखे तेवु कहि दिये.

दशशेरो

खट पुरुषे एक नार, नार त्रणे नर जाणु,
सोळ नरे नर होय, पराक्रमि ते परमाणु
बे पुरुषे एक पुरुष, भाग द्वादशने नामे,
करी वायदो कथ, गया गुणवंता गामे
पथता तो बीशक नही गया, बह्या तहा के वाटमा,
शामळ कहेछे ते सुंदरी, अति दीठी ऊचाटमा
(छ चोखानी रती त्रण रतीनो वाल सोळ वालनो
गद्रियाणो बे गद्रियाणानो तोलो तोलानो
बारमो भाग मासो. एटले महिनो)
खट पग तो छे खरा, भमर तो नहि ते भाइ,
एक नासो बे शीश, कहु शी तेनी कमाइ
विधि बने गम नाक, नाथ घाली घणि मोटी,
जुओ करमना जोग, चोटि वासा वच मोटी.
ताजु कहेछे सौ तेहने, छे जुनु जो जोसमा,
शामळ कवि कहे सदा वसे, साहुकार घेर शोसमा

ताजवु

अंतरिक्ष नार अनूप, तेह डोलावी डोले,
महोकम खाये मार, बहु बकवा करी बोले.
मुखविण मोटु शीश, जनोइ कठे घाले;
बांधेली बळवंति, मोज मदिरमा माले
ते हस्त प्रहारे जेहने, ते शोभावे सर्वने,
शामळ कहे ए शमशा कहो, के मूको मन गर्वने.

पींजारानी तात

मस्तक मोटु होय, मूख तेनु नव दीठु,
अन्न नीर नव खाय, वदे अमृतथी मीठु.
पोढा पग ने पेट, प्रीतथी पच प्रमाणे,
राजद्वार रहत, कदी मोटा परमाणे
सारग नाम शोभीत छे, वरसे सारग वाणिये;
समजे समशा शामळ तणी, ते जशवता जाणिये.

तंबुरो.

वसे हाथनी नाळ, कहु शी तेनी करणी;
पाच हाथनो पुरुप, प्रीतथी तेने परणी.
कामनि वश करि कथ, बळ करी बाधी लीधो,
स्वरे पाम्यो मान, कबुल सउ लोके कीधो.
नर नारि बिजा ते भोगवे, ल्पट कोइए नव कहे,
कवि शामळ भट साचु कहे, रुचि सौकोने नित्य रहे

खाटलो अने भरवानी पाटी.

एक नार खट चरण, पातवाळी रस राचे,
जात जोरावर जाण, नदनथी अमृत साचे.
उत्तम अधम अहार, उच नीचे नइ पेसे;
दिवसे ते देखत. निशा अधी थइ वेसे.
कोइ एनी आभडछेटने, गणे नही भमता भवन;
समस्या कहे तो सहेल छे, कहो नार ए ते कवण.

मावी

नारी नहु वळवत, रहे पोढी पुर प्रीते;
करे अहार अपार, नही ते रुडी रीते.
पुठळ आस ने कान, बहु जोरावर जेले,
शत्रू केरु स्तान, देखि तेने दुर ठेले.
ते राजद्वार रांसे रहे, अजित कहाये आपमा;
शूग पण कायर थायछे, ते नारीना तापमा

तोप

नपुसक सरस् नाम, महिपने मदिर महाले;
नर नारी धनोढ, चडी वाहन ते चाले.

शाह सुबा सुलतान, मान पामे ते महिमा;
त्रिविधी पाडे त्रास, शूर सामद ने सामा.
छानु राख्यु ते नव रहे, बोलाव्यु बोले बारणे;
शामळ कहे समजे सुलक्षणा, कवण अर्थ ए कारणे.

नगारुं.

वृक्ष उपरे वास, मान पदवी छे मोटी;
जटा विराजे शीष, चारु ते उपर चोटी.
त्रण नेत्रो तनमांहि, नही शिवजीनो संगे;
अमृत सरखु नीर, नही गुणवंती गंगे.
ते जगत जागमां जश लिये, ओछव मंगळमां अती;
छे नरम हाड काया कठण, शामळ कहे शोधी सती.

नाळिएर.

नगर एक नवरंग, दिसे चारे दरवाजा;
वरण चारनो वास, जगत जश महिमा झाझा.
मंदिर छत्रु महान, पडे पादर त्रण पासा;
करे राज बे वीर, क्षत्रिवटथी ते खासा.
सुंदर साहेली सोळ छे, रमत रमे तेशु नित्ये,
ते कवण नारिने नगर शु, चातुर जन चेतो चित्ते.

सोगटाबाजी.

अग्नि तणी बहु आंच, एक मरदे शिर माणी;
बीजे हींमे हाड, गाळ्या वरवाने राणी.
त्रीजे करवत लीध, कपावी कष्टे काया;
त्रण पाम्या एक नारि, माननी उपर माया
छे त्रण नाम ते नारिना, नपुंसक नर ने मेरिओ,
कवि शामळ भट साचु कहे, लक्ष्मीवंतनो ल्हेरिओ.

पान, तंबोल, नागरवेल, चूनो, काथो, अने फोफळ.

अतिशे उज्वळ अंग, थयो काळो ते करमें;
खट् दर्शन खट शास्त्र, धरे अंतरमां धरमे.
पोते जात पवित्र, न्हावा धोवार्थी नासे,
जळ पिधे जीवे न, परक न रहे जळपासे.

परमार्थी पराक्रमी घणो, पर मूलकमां परवरे;
शामळ कहे शाह सुलतान सउ, अधिक आश एनी करे.

कागळ.

अभागिया विषे

छपा.

निर्भागी जाय गग, कष्ट पामे कूटाय;
जो ते रळवा जाय, लाभ सुद्धां लूटाय.
अभागि परणे नार, जाय निसरी के मरशे;
अभागि पामे गरथ, चोर के हाकम हरशे.
निरभागी बेसे घोडले, पडशे के पग भागशे;
निरभागीने मदिर मळे, पडशे के दव लागशे.
अभागि जमवा जाय, भुख्यो रहे के मळे वासी;
वदे सरस जो वात, लोक करशे सउ हासी.
अभागी डाह्यो थाय, घणा जन तो कहे घेलो;
जो नम बोले बोल, कहे हइयानो मेलो.
सउ कर्महीन कूटायछे, गरथ ज्ञाननो गूटको,
शामळ कहेछे निर्भागिनो, काशि याते नहि छूटको
अभागि बहु आदरे, थयो कहेशे हडकायो,
जो उद्यम नव करे, अकरमी ए कहेवायो.
जो ते भ्राष्ठु खाय, थयो कहेशे अकरांथो,
जो ते गाणु गाय, थाय विस्तारे वातो.
आपे को सिंधु अकर्मिने, पढियो काणो नीकळे,
शामळ कहे सउको समजजो, खोट अकर्मिने खळे.

धनवादी अने विद्यावादीनो संवाद.

प्रथम धनवादी बोल्यो.

छपा.

जरने वश छे जगत, राय पण जरथी रीझे;
जुवती जर वश होय, लाभ पण जरथी लाजे.

जर सज्जन सनमान, जरे जशवंत कहावे;
जरथी पामे जोख, सती शुभ कुळनी आवे.
जरनुंज जगतमां जोर छे, दुरिजन जरे नमे सहू;
शामळ कहेछे जर जोरथी, बापो एम कहे बहू.
जर माता ने तात, जात ते जरथी जाणी;
डहापण पण छे दाम, दाम राजाने राणी.
सगां सहोदर सर्व, द्रव्य वणजे वेपारी;
रंग ने रूप अनुप, द्रव्य ते धीरज धारी.
सौ जगत वश्युं छे जर थकी, गरथमांहि गुण बहु गणुं;
शामळ कहे स्वर्ग संचरे, जोर होय जो जर तणुं.
विप्र भणेछे वेद, जइ जरने ते जाचे;
साधक ने बळि सिद्ध, रुदे जरथी ते राचे.
शूरा बांधे शस्त्र, जरथकी ते कर जोडे;
अनमी ने अहंकारि, हाथ जर आगळ ओडे.
गामी नामी ने महिपती, जरने वश वरती रहे;
शामळ कहेछे संसार सौ, दमडाने डाह्यो कहे
जरथी पामे जोख, जरे इंद्रासन आणे;
जरथी जग जीताय, जरथकी मोटम माणे.
जरथी लाख करोड, होड हठीला हारे;
जरथी राज्य थपाय, जरे शत्रुने मारे.
एम जगत वश्य छे जरतणे, चितवे तेवा गुण गणे;
जगदीश ईश वश जर तणे, शामळ भट साचुं भणे.
घणो जेह घर गरथ, रूप तेने घेर रहेछे;
घणो जेह घर गरथ, कुलिन पण तेने कहेछे.
घणो जेह घर गरथ, रहे वश तेने राजा;
घणो जेह घर गरथ, सुजश बोले जन झाझा.
जर तो छे जीवनथी अधिक, बुद्धि निधान प्राक्रम बहू;
शामळ सेवक श्रीमंतना, शत प्रकार शोभित सहू.
जर विना जे जोख, शोख ते तो नहि साचो;
जर विण तनमां प्राण, कहु करतु ते काचो.

जर विना जे रूप, देह कूरूपी कूडो;
जर विण मंदिर माल, भर्म राखे ते भूंडो.
जर विण व्हापण छे जेटलुं, ते घेलापण जाणवुं;
शामळ कहे सघळी चीज ते, जगमां जर परमाणवुं.
जरथी शोभे सर्व, वेदना जरथी नामे;
जरथी शोते न्याय, जरे मन वांछित पामे.
जरथी सगपण साथ, करे जरथी सौ काजे;
जर ओडावे हाथ, जर थकी सरवे लाजे.
जर तरणानो मेरु करे, राज्य अपावे रंकने;
कवि शामळ कहेछे जरथकी, पामर लूटे लंकने.
गांठे जेने गरथ, भली ते विद्या भणियो;
गांठे जेने गरथ, रहे नहि कोइनो रणियो.
गांठे जेने गरथ, तेज पंडित छे पूरो;
गांठे जेने गरथ, तेज छे सामद शूरो.
वळि गांठे जेने गरथ छे, पराक्रमी परमाणवो;
शामळ कहेछे संसारमां, जर विण मूरख जाणवो.
जर छे सौनो जीव, जरे छे महासुख माणी;
करे पराणे प्रीत, रंक राजाने राणी.
जर वश बधु जगत, जरे जुवती वश थाय;
जर शामळ कर जोडी, रहे मोटा ऋषिराय.
जर जंगलमां मंगळ करे, जुगती सरवे जोगवे;
शामळ कहे धनथी धनपती, भारे सुख ते भोगवे.
व्हापण दमडामांहि, रहे दमडामां यारी;
दमडामांही रूप, भेद दमडामां भारी.
जो दमडामां जोर, रहे वश थइने राजा;
दमडे उंच अधिकार, गुण दमडामां झाझा.
दमडी छे मोंघो देवने, वण दमडे सौ यामणां;
शामळ कहेछे दमडातणा, भात भात लेउ भामणां.
जर देखी जशवंत, गुण ने ज्ञान गमावे;
धन देखी धनवंत, नीचने शीश नमावे.

सोनु देखी श्रीमत, कपटनु काम करेछे,
गरथ देखि गुणवत, हेतथी हाथ धरेछे
राजानी के शु राकनी, निर्मळ कुळनी नारियो;
शामळ कहेछे सत्य जाणजो, जर देखी करे जारियो.
शूर कपावे शीश, चतुर चाकरी च्हाये,
नाचेछे नृत्यवत, गीत गुणिजन थइ गाये.
विद्यावत विदेश, जावा कारण जाये,
मजुर वहे शिर भार, कष्ट काशद सहे काये.
जे जे उपाय अन्याय जे, बुद्धि बगाडे बारणे;
शामळ कहे शाणा समजजो, द्रव्य कमावा कारणे.
जर पाखी जगमाहि, मोज एके शी माणे;
जर पाखो जगमाहि, आप अक्कल शी आणे.
जर पाखो जगमाहि, स्वाद एके नव सूजे;
जर पाखी जगमाहि, वडाइ कशी न बूझे.
जर पाखो तो जख मारता, फरे विजु बूझे बहू,
शामळ कहेछे जर जोरथी, शुभ वातो सूजे सहू.
दमडा पाखी दरिद्र, कुलिन ते किंकर कहावे;
रिद्धिविना ते रक, प्रतिष्टा मान गमावे.
विद्या अने विवेक, दाम आगळ सौ डूल्या;
जे जे करवा जाय, भरमथी सरवे भूल्या
जे शूर पूर शाणा घणा, वपु वरणागी वाकडा;
शामळ कहे सौं ससारमा, रिद्धि विनाना राकडा.
जेने जरनु जोर, जुल्म ज्ञाशो करि झूझे,
जेने जरनु जोर, बिजाने ते नव बूझे.
जेने जरनु जोर, अहपद अतिशे आणे;
जेने जरनु जोर, जगत उजड ते जाणे.
वळि जेने जरनु जोर छे, छाक्यो रहे अमले अती;
शामळ कहेछे सदबुद्धि वण, कहु न थाय तेथी रती.
वे हाथीनु जोर, बाहु वे माहि विराजे,
बाघ सिंहनी पेर, गरथ गाठे ते गाजे.

भूख तडको के टाढ, नहीं जर पासे जाय;
व्यंतर भूत के प्रेत, कदी चेटक न चहाय.
मन मदीरा शेर सवातणो, केफ सदा आवी वसे;
शामळ कहे दुखियो दुःख कहे, जरवाळो हैडे हसे.
निरधन बोले सत्य, कहे जरवाळो जूठी;
निरधन गाणु गाय, जाय जरवाळो ऊठी.
हाहा करे सउ लोक, वदे जरवाळो जूठु;
रिद्धि उपर सउ राजी, रिद्धि पाखी सउ रुठु.
चौदे विद्यानी चातुरी, गरथ साथ वासो रहे;
वळि कर्म धर्मने शर्म सउ, कवि शामळ जरने कहे.

दोहरा.

दशधा दरिद्र घर विषे, दरिद्र घर घरसूत्र;
अर्थ सरे नपम गर्थ विण, परणे वपाथी पूत्र.
शु करे विद्या बापडी, शु करे रूडु रूप;
रूक्षण सौ लक्ष्मी विना, पडे कारमे कूप.
शु करे विचार शाणपण, करे शु वारु वर्ण;
धन विना धातो फरे, तुच्छ छेक ज्यम तर्ण.
जेवु सुख शमणा तणु, नहि मूळ नहि डाळ;
मनोरथो निरधन तणा, सरव आळ पपाळ.
दरिद्र सरखु दुख नहि, श्रीमत समु नहि सूख;
लक्ष्मीवंत लीला नहि, भागे भारे भूख.
लायक सौ लक्ष्मी वडे, लक्ष्मी पाखो लीन;
जर विण जश जीते नही, देह दामणा दिन.
लक्षण बत्रिश लक्ष्मी विना, शबवत् सर्वे शून्य;
बोतेर कळा वेशी रहे, निर्णय करता नुन्य.
दरिद्रि होय डाह्यो घणो, गाता आवडे गान;
ए गुण कोइने नव गमे, कहे शीद फोडे कान.
मेलो मलिन हिंडे घणो, दृढ गाठे होय द्रव्य;
विश्व वखाणे तेहने, सादो कहे जन सर्व.

कोशरियो ने कुलक्षणो, कायर कपटी कूड;
जर होये जश दे सउ, पराक्रमी ए प्रौढ.
वेद पात्र विद्या निधी, सकळ शोभावे साथ;
लक्ष्मीवंत आगळ जइ, हेते ओडे हाथ.
जोराळा जम दुतथी, धाराळा महा धीर;
जर कारण जश गायछे, सोंपे शोर शरीर.
कविता होय सविता समो, नोतम नाम गणाय;
लोभे लक्षपति कने, जर जाचण ते जाय.
नगर तणो होय नरपति, अनमो करे सहु अर्ज;
क्रोडपतिने करगरे, काढवा मागे कर्ज.
कळावंत कळा करे, गुण रुडा सहु गाय;
राग संभळावी रीझवे, जरपति पासे जाय.
वांका ने वरणागिया, फोगट मारे फूल्य;
मुके पूत्र मोसाळमां, धन विण डहापण धूळ.

हवे विद्यावादी बोल्यो.

विद्याविषे छपा.

सदविद्याज सुवर्ण, शरण सद्विद्या सखे;
सदविद्याथी स्वर्ग, नीरत ऊतारण वित्ते.
सदविद्याथी सिद्धि, फळे वचनो वर वाणी;
सदविद्याथी रिद्धि, जगतमां सघळे जाणी.
सदविद्याने वश सर्व छे, सदविद्या त्यां शी मणा;
शामळ कहे सदविद्या विना, भटके गुणहीणा घणा.
लक्षपती तो लाख, दिठा निर्मोल्य प्रमाणे;
जाय रायनु राज्य, रुप पण रहे न टाणे.
कुळ पण होय कलंकि, जोर जोतामां जाये;
जोबन पण नहि जाय, वंश निर्वंशी थाये.
नहि राज चोर के अग्नि भय, माग मुकावे बहु थकी;
मोटा पुरुषो मन मानजो, सदविद्या शुभ सहु थकी.

मुकावे विद्या मार्ग, पूर्ण जश विद्या पामे;
विद्या शोभे वान, नृपति विद्याने नामे.
विद्यामांहि विवेक, विमळ विद्याथी वाणी;
विद्याने वश विश्व, जगतमां मोहनि जाणी.
सदविद्या रत्न विशाळ छे, विद्याथी वडु नहि कशुं;
सदविद्या आगळ धन कशुं, विद्याहिन जन ते पशु.
पंडित आगळ मूढ, हंस आगळ ज्यम बग्गो[1];
पंडित आगळ मूढ, कोकिला आगळ कग्गो[2].
पंडित आगळ मूढ, राय आगळ ज्यम रांको;
पंडित आगळ मूढ, सिंधु आगळ ज्यम टांको.
छे पंडितमां प्राक्रमे[3] घणां, पंडित सउ शिरमोर छे;
शामळ कहे पंडित आगळे, मूढ तो चाकर चोर छे.
मूरखने वाहन, पंडित अणुवाणो चाले;
मूरखने मोतिहार, पंडित फुलमाळा घाले.
मूरखने बहुमान, पंडित कदि गरीब कहावे;
मूर्खने अलल्लत मोज, पंडित खड धान्यज खावे.
पण मूरख काच कथीर छे, दीसंता तो दिल हरे;
पण पंडित रत्न अमूल्य छे, शामळ जो परिक्षा करे.
मूरखने नहि मान, मूर्ख शास्त्रामां अधूरे;
दे न मूर्खने दान, मूर्खमां अकल अधूरे.
मूरख हलको होय, बहु गुणवंतो बोले;
मूर्ख न लेखामांहि, नहि पंडितने तोले.
जे हंस मध्य बगलां पड्यां, कारण शुं जाणे कशुं;
कवि शामळ कहे साचुं कहुं, विद्या वण ते नर पशु.
पंडित जाय विदेश, तोय जशथी जाणीतो;
पंडित प्राक्रम पूर, महीपतिनो मानीतो.
पंडितने परणाम, करे जन सौ कर जोडे;
पंडितने सनमान, मान अनमोनां मोडे.

---

1 बग्गा–बगला. 2 कग्गा–कागडा. 3 पराक्रम.

जे अगम निगम छे गुण घणा, लक्ष कोटिधा ते लहे;
छे विद्या मोटी विश्वमां, शामळ भट साचुं कहे.

वचन पाळवाविषे छपा.

बहु करे जे बाप, वचन बदलीने बोले;
बहु करे जे बाप, खोटुं मुख वायक खोले.
बहु करे जे बाप, आपने खूब वखाणे;
बहु करे जे बाप, आप आप्युं घर आणे.
करथी जीभा भलि कापववो, मोत भलुं महा मूल्यनुं;
शामळ कहे भुंडुं सर्वथी, वचन जाय तृणतूल्यनुं.
वचन न पाळ्युं जेण, तेज सुकृत व्रत हार्यो;
वचन न पाळ्युं जेण, कर्मोते तेने मार्यो.
वचन न पाळ्यु जेण, तेह नर दैवे दंड्यो;
वचन न पाळ्युं जेण, तेह शिर अग्नी मंड्यो.
जो वचन व्यर्थ जेनुं थयुं, तो दैवत तेनुं गयुं;
कवि शामळ भट साचुं कहे, वचन गयुं तो शुं रह्युं.
पाळे वायक सूर, जेह रणमां बहु झूझे;
पाळे वायक सिद्ध, जेहने आगम सूजे.
पाळे वायक भक्त, करे इश्वर वश आपे;
पाळे दाता वचन, वृष्टि जेने परतापे.
पाळे जे वायक प्रेमथी, वेदे विविध वखाणियो;
शामळ वायक संभाळतां, जशे जगतमां जाणियो.
वचन पळे ते राय, बाकि तो रांडि रांडो;
वचन पळे ते शाह, बाकि गुणहीणो गांडो.
वचन पळे ते विप्र, धर्म शुभ धार्यो तेणे;
वचन पाळ्युं ते वीर, जगत् जश लीधो जेणे.
पाळे सद वायक प्रेमदा, पांचे पूरण पक्षणी;
शामळ कहे वचन न साचवे, ललना एज कुलक्षणी.

---

१ शास्त्र.

पेट भरवाविषे छपा.

पेट करावे वेठ, पेट वाजा वजडावे;
पेट उपाडे भार, पेट गुण सौना गावे
पेट भमे परदेश, पेटथी पाप करेछे;
पेट करेछे जार, पेट तो सत्य हरेछे.
वळि सच प्रपच अधिक करे, पेट काज नरके पडे;
शामळ कहे साचु मानजो, पेट पाप नरने नडे
विप्र पेटने काज, शास्त्र वाचे ने शीखे;
विचरी वळी विदेश, भणेला थइने भीखे.
वणिक पेटने काज, वाहिने वहाण चडेछे,
मजुर उपाडे भार, घणा जन घाट घडेछे.
वळि करेछे काशद काशदु, शिर कपावि तस्कर मरे,
कहे शामळ पेटने कारणे, कुनाचार सौको करे.
पेट चडावे वाश, पेटथी नरतक नाचे,
पेट काज गुण गाय, उच नीचाने जाचे.
पेट करे ठळ कपट, पेट रणमा रवडावे,
पेट करे विखवाद, पेट तो शीश कटावे
चोरी चाडी ने चाकरी, अधर्म सौ आखेटना;
शामळ कहे साचु माननो, प्रपच पापी पेटना
किया धडकण ने धीर, किया गुणहिण ने ज्ञाता,
किया कृपण ने कर्ण, किया दभी ने दाता.
किया रक ने राय, किया अकरमी इद्र;
किया पापि पुण्यवत, किया नराहिण ने चद्र.
वळि अण पडित पडित किया, वेशि पारके बारणे;
शामळ कहे मान गमावियां, बुडा पेटने कारणे.
किया दरिद्रि दिवान, किया कुरुप रुपाळा;
किया जुधिष्टिर जार, किया भिक्षुक भूपाळा.
किया बुद्धि वळवत, किया गद्धा ने घोडा,
किया कपूत सपूत, राम ल्हमणना जोडा.

नर नार जार ने सति किया, जाऊ जेने वारणे;
शामळ कहे मान गमावियां, कुडा पेटने कारणे.
किया नीच ने उच, किया रोगी ने साजा;
किया अबळ ने सबळ, किया दुर्बळ ने ताजा.
किया अजाण ने जाण, किया पथ्थर ने हीरा;
किया अजा गजराज, किया वेरी ने वीरा.
जूठा बोला साचा किया, नीचबुद्धि करे नेटने;
शामळ कहे मान गमावियां, प्रपच पापी पेटने.
कइ लठ ने अलठ, कइ रजित ने रगा;
कइ रुपहिण रत्न, कइ गदी ने गगा.
कइ मृगनेणी नार, कइ वळि आखे काणी;
कइ दामी देखीये, रीझवाळी कइ राणी
जे लपोडशख रेखा विना, दक्षणावत वळी कह्या;
शामळ कहे कवि कोविद पण, पेट तणे वश सउ रह्या.
पेट करावे पाप, पेट परदेश काढे,
पेट करे प्रपच, चलावे मारग आडे.
पेट करे पाखड, पेट मण नाके दडे;
पेटे सकट थाय, पेट महेननमा मडे.
सति नारिने गुणका करे, शा अवगुण कहु शेटना;
शामळ कहेछे सौ जाणजो, प्रपच पापी पेटना.

कुसंगतिविषे छपा.

करे नीचनो सग, नीचनी बुद्धि आवे;
करे नीचनो सग, सकळ सदगुणो गमावे.
करे नीचनो सग, नीचनी भाषा भाखे;
करे नीचनो सग, नीचनी रीतो राखे.
वळि नीच काम नांचा करे, निच कहेवाये [illegible]
शामळ कहे सगत नीचनी, [illegible]
पडित पडित प्रीत, मूरखने [illegible];
रुडो रुडी रीत, चतुर [illegible]

सुमने वहालो सूम, वहाल दाताने दाता;
जारने वहालो जार, गुणी जनने गुण ज्ञाता.
शूराने वहालो शूर नर, कायरने कायर गमे;
जशवत गमे जशवतने, शामळ कहे सदा समे.
मळे उचने उच, मळे भगीने भगी;
मळे नीचने नीच, मळे रागीने रगी.
मळे भगतने भगत, मळे पापीने पापी;
मळे ज्ञानिने ज्ञानि, मळे जापकने जापी.
वळि व्यसनीने व्यसनी मळे, मळते मळता गुण मळे;
ज्यम लवण मळेछे तक्रमा, शामळ पय शाकर मळे.

मोतविषे छपा.

कोइ कहे आव्यो ताव, कोइ कहे थयु कोगळियु;
कोइ कहे करड्यो नाग, कोइ कहे वासी वळियु.
कोइ कहे वाध्यो रोग, कोइ कहे शस्त्रज वाग्यु;
कोइ कहे मारी मूठ, कोइ कहे पापज लाग्यु.
ईश्वर माथे लेतो नथी, जगतमाहि महिमा जुओ;
शामळ कहेछे सौ साभळो, मोत आव्यु तेथी मुओ.
पेसे अरणव नीर, तीर गगाने वेसे;
चडे जो पर्वत मेर, कदी पाताळे पेसे.
पर्वतमाहि प्रवेश, करे आपे एकाते;
ओषड अमृताहार, भमे भूला बहु भाते.
किंकर राखे कइ कोटिधा, सच प्रपच घणा करे;
शामळ कहेछे सौ साभळो, मोत आव्ये निश्चे मरे.
मात तात ने मित्र, पुत्र परिवारज पोढा;
अलखत अपरमपार, घणा हस्ती ने घोडा.
सेवक साथे शूर, परीपूरण परतापे;
चळवता बहु बाहु, छत्र छाये छत छापे.
अधिकार अयुत एस इद्रनो, क्रोडयार शु कहु कथी;
पण मोतथकी मूकाववा, शामळ कोइ समरथ नथी.

नाठे न मुके भूख, दुःख नाठे नव जाय;
नाठे न मुके भोग, रोग नाठे पण थाय.
नाठे न मुके ताव, पाप नाठे नव छूटे;
नाठे न रहे लाछ, चोर के हाकम लूटे.
कदि नाठे मोत मुके नही, प्रसव्यो त्यांथी पास छे;
कवि शामळ भट साचु कहे, नाम सर्वनो नाश छे.
जे जायुं ते जाय, जेह फूल्यु ते खरशे;
भर्युं तेह ठलवाय, चड्यु ते तो उतरशे.
लीलु ते सूकाय, नवु ते जूनु थाशे,
आयुर्दा वश सर्व, काळ सौकोने खाशे.
जो किन्नर जक्ष ने राक्षसो, देव गांधर्व ने दानवी;
मघवादिक पण मोते मरे, कोण मात्रमा मानवी.
गया इद्र कइ क्रोड, गया ब्रह्मा कइ भूल्या;
गया करोडो काम, महाशूरा पण डूल्या.
गया देव दिगपाळ, गया मांधाता महिपत;
गया दिलिप हरिश्चद्र, गया छाकेल छत्रपत.
वळि गया जनक ने जादवो, जे वळि लाव्या जान्हवी;
स्थिर स्थावर कोइ रह्या नहीं, कोण मात्रमा मानवी.
मारु मारु कहे मूढ, कारमी काया माया;
अज्ञाने आरूढ, अध थइ धंधे धाया.
आ मारु घरसूत्र, पुत्र मारो परणावु;
घडपण पाळे मने, आज भलि भात भणावु.
पण दीपक वश छे वायुने, काचो कूपो काचनो;
शामळ कहे मुढ ममता करे, एवा शरिर असाचनो.
कोइ आज कोइ काल, कोइ दिवसे कोइ राते;
कोइ जोबन कोइ वृद्ध, बाळ जन जुवती जाते.
कोइ तावे तरफडी, आप घाते कोइ मरता;
कोइ भोग कोइ रोग, कोइ तो सरप करडतां.
कोइ वाशि विकार के हडकवा, कोइ ममते लडिने मुओ;
पण काळ न मूके कोइने, शामळ कहे समजी जुओ.

राखे लख रखवाळ, रोह पिंजरमा पेसे;
अरणव विच आसन, वाळीने जो कोइ बेसे.
वज्र गुफा गभीर, माहि कोरावी माणे;
इंद्रजाळ विद्याय, जुगतथी जो वळि जाणे.
सभाळि साचवी साचवे, कोटि जतन कोडे करे;
जाळवता पण जीवे नहीं, गोत वसत निश्चे मरे.
चिरजीवि नहि कोइ, गया मनु जेवा महिपत;
चिरजीवि नहि कोइ, गया वहि अगणित अहिपत.
चिरजीवि नहि कोय, गया अधिकारी इंद्रे;
चिरजीवि नहि कोइ, गया कइ सूरज चंद्रे.
वळि गया राम ने रावणा, गया देव ने दानवी;
सतवादी सल्क्षणा गया, कोण मात्रमा मानवी.
कोइ आज कोइ काल, कोइ.मासे खट मासे;
कोइ वर्षे दश बार, कोइ पचीस पचासे.
कोइ साठ शीतेर, कोइ पोणोसो एशी;
जे जावु ते जाय, नथी रहेवानु बेशी.
जे नाम तेहेनो नाश छे, धर्मज एवो धारवो;
कवि शामळ कहे मूरख फरे, गदी देहनो गारवो
घडी पळक के पहोर, सान सवार के बहाणु;
ए दीपक ओलाय, न आवे साथे नाणु.
रहे घरमा के गाम, देश परदेशे पडशे;
जळ परपोटो जेम, एक दिन निश्चे नडशे,
राखी कोइनो रहेशे नहीं, दिवस नकी नहि देहनो;
शामळ कहे काचो कुंभ छे, वो भरूसो शो तेहनो.

स्त्रीना गुणविषे छपा.

रामा रत्ननि खाण, जाण ए रंभा रूडी;
धरे सोळ शणगार, हार कंठे कर चूडी.
शोभे जळ हळ गेह, देह कोमळ शुभ साजी;
शोभा केरू सदन, वदन हशि राखे राजी.

---

१ गर्व.

भड भोज करण विक्रम अने, हरीचंदनी हारना;
पंडीत चतुर पुर पाटवी, नृपति नेट सुत नारना.
जे घरमां घरनार, दाम उधारे देशे;
जे घरमां घरनार, पिंड पित्री पण लेशे.
जे घरमां घरनार, तोज मेणुं शिर टळशे;
जे घरमां घरनार, मान माणसमां मळशे.
घरनार जेहने घर हशे, शोभित शाह सरस जसो;
घरनार विना नर निर्वळो, शाह तोय तस्कर तसो.
नार विना नर रंक, शंक राखे नहि कोइ;
नार विना नर चोर, जोर जर वेसे खोइ.
नार विना नर निर्बळ, सबळ राखे नहि संगे;
नार विना नर दीन, हीनसुख एकल अंगे.
चतुरां विन तो चाले नहीं, जगतमांहि रहे जाहरे;
शामळ कहेछे शामा फशी, तजे जगत तो ताहरे.
बालपणे थइ मात, मटाडे पीडा मननी;
जोवनमां दे रंग, संग सुख टाढक तननी.
सुख दुःखमां समभाग, राग करडे गुण गाती;
चतुरां चित हरनार, सार घरमां मद माती.
वळि वृद्धपणे सेवा करे, देखवाथी दिल दुख टळे;
ए अंतकाळ अळगी नहीं, बहु स्नेह साथे बळे.
मास आषाडो मेह, तेहने विश्व बखाणे;
पाछळ पडे दुकाळ, कोण ते जुगतो जाणे.
मोती मोंघे मुल्य, वेह पाडंतां तूटे;
करपण होय कर्तार, शालभे खातां ते खूटे.
पण लाभ गरभ गोधो तनुज, पहु वछेरो जाणिये;
वळि मेह मोति ने मेदनी, नव नोवढे वखाणिये.
पशू चरेछे तरण, रहेछ रणमां रमतां;
नर नारीनी जोड, भाळिये साथे भमतां.

---

१ हार अथवा पंक्ति. २ तीड.

उडे पखि आकाश, जुओ तेनु पण जोडुं;
कोण उच के नीच, गधाडु के का घोडु.

सुर असुर नाग किंनर विषे, देवी, नागण, दानवी;
मन गरद कर्याछे मेरिये, कोण मात्रमा मानवी.

नारी विना नर रंक, दामणो दीसे देहे;
नार विना नर रक, दिशे गुणहीणो गेहे.

नार विना नर रक, नहीं धन धीरे कोय;
नार विना नर रक, हरी पूजन नव होय.

निर्बळ छे नर नारी विना, भोग कशा ते भोगवे;
अवगुण अदका अपुतो गणा, जुवती वण नर जोगवे.

नारी नरनु अग, सूख देयण करसेवा;
भळे पुण्यमा भाग, लाभ जश लाखो लेवा.

शामाथी सतान, धर्म बुद्धी ते धारे;
प्रगटे पुत्र सपूत, कूळ इकोतेर तारे.

कुळ शुद्ध मळे जो कामनी, स्वामीने सुख दे सती;
हु एम विचारू आपथी, पुण्यवत तेनो पती.

माननि मोटे मुल्य, महामाया ए मोटी;
जितवा इछे जेह, तेहनी खातज खोटी.

स्वर्ग मृत्यु पाताळ, भेद भारत जे भणिया;
उच नीच ने अमिर, सर्व जुवतीए जणिया.

स्त्री खरा रत्ननी खाण छे, मोटि पुरुषथी प्रीछजो;
सउ शास्त्र साक्षि शामळ कहे, अतरमा सउ इछजो.

निर्मळ मननी नार, स्वामिने स्वर्ग पमाडे;
जुवती जोबनमाहि, रीझथी रग रमाडे.

ढाके कूळ कलक, सरस चलवे घरसूत्र;
वधे तेहथी वश. परसवे पुत्र सपुत्र.

वळि होय सती शुभ सात्वी, पुण्यवति ते पारखी;
छे नीच कोइकज नारियो. स्वभावे सउ नहि सारखी.

जुवानीना जोरविषे छपा.

जेने जुवानी जोर, पुण्यनी वात न पीछे;
जेने जुवानी जोर, इश अर्चन नहि इच्छे.
जेने जुवानी जोर, परस्त्री उपर प्रीती;
जेने जुवानी जोर, रुडी नव राखे रीती.
छे जोर जुवानी जेहने, अंध ते आडे आंक छे;
शामळ कहे चूकया चतुर नर, पण बुद्धिनो शो वांक छे.

हस्ती जोवन होय, त्यारे मदमातो महाले;
अश्वनु जोवन होय, मशाला चरि ज्यां चाले.
भेंशनुं जोवन होय, भलो ज्यारे भादरवो;
नरनुं जोवन होय, पुत्र दोलत तन नरवो.
राजानुं जोवन राज्य छे, परिपूरण समरथपणुं;
कामनिनुं जोवन कंथ छे, शामळ कहे शुं कहुं घणुं.

कइ जोवनने जोर, जगतमां बनिया जोगी;
अडसट तीरथ अटन, भाव भरपूरे भोगी.
कइ जोवनने जोर, प्रसिद्धि पाम्या प्राणी;
कइ जोवनने जोर, भण्या विद्या रस वाणी.
जे सत्य असत्य भुंडुं भलु, जोवनमां थिर थायछे;
शामळ कहे जोवन जोरमां, वेगे जन वहि जायछे.

धोळा थाशे केश, डाढि कहेवाशे डोशी;
विपरित थाशे वेश, तनू पाळीने पोषी.
थरथर ध्रुजशे धळ, नमी जाशे बे नेणां;
पडे देहमां नेह, वदाशे विपरित वेणां.
वळि लीट चुशे वहु नाकथी, बेय कान बेरा थशे;
सेवो प्रभुने शामळ कहे, जोवन जोर वही जशे.

ज्यम वादळनी छांह, चार पळनो छे चटको;
मनमां चेतो मनुष्य, खरो राखीने खटको.
राख्युं ते नहि रहे, रुप ने जोवन रुडुं;
वृद्ध थइ जशे वेष, कलंक रहेशे कुडुं.

छे कोण रंक के राणियो, रूप वृद्ध ने बाळनुं;
शामळ कहे राख्युं नव रहे, सर्व चवेणुं काळनुं.
हस्ति सिंहने प्रीत, प्रीत वाघणने हरणी;
गरूड सरपने प्रीत, प्रीत तीमर ने तरणी.
उंदर बलाडी प्रीत, प्रीत मीनी ने श्वान;
प्रीत सरपने नोळ, प्रीत लंपटने ध्यान.
वळि प्रीत विप्रने वरतिया, प्रीत असुर सुरलोकनी;
शामळ कहे तेवी प्रीत सउ, सकळ सृष्टिमां सोक्यनी.
प्रीत तेतरां बाज, प्रीत कागळ ने पाणी;
प्रीत सती गुणिकाय, प्रीत आटो ने धाणी.
प्रीत अग्निने नीर, प्रीत साचा जूठानी;
प्रीत चोरने शाह, प्रीत रिझवण रुठयानी.
ए प्रीत वेर लाखो गमे, कहे शामळ कहुं शुं कथी;
सौ दुखमां दुख संसारमां, सोक्य समान कशुं नथी.
अंधाने दुख आंख, सारुं नरतुं नव देखे;
बेराने दुख कान, राग पूरण नव पेखे.
रोगीने दुख रोग, भोग एके नव भावे;
भिक्षुकने दुख एक, छेक भीखारि कहावे.
एवां तो दुख अनेक छे, पंगाने दुख पग तणु;
शामळ कहे स्त्रीने सोक्यनुं, छे दावानळ दुख घणु.

पतिना विजोगविषे छपा.

पिता घेर जे पुत्रि, होय रिद्धी पण रांडी;
बोले पुंठळ लोक, कहे जे कंथे छांडी.
पिता घेर जे पुत्रि, कुटुंब कहावे खोटी;
भोजाइ बोले भुंड, कहे आ करमे चोटी.
धनहीन होय घरनो धणी, पिता होय पृथ्वीपती;
पण स्त्री ते शोभे सासरे, शामळ कहे ते तो सती.
नर पाखी जे नार, छेक हळवी ते तरणुं;
नर पाखी जे नार, होय रणमां ज्यम हरणुं.

दिव्य देवाशी देह, मेह जेवो मन गहवो;
करण समो दातार, सात सागरवत सहवो.
निर्मळ शशिवत नाम, काम हरिचद्रज सबे;
पूरण रवि प्रताप, आप राजा बळि व्रते.
छे जोड जुधिष्टिर सारिखो, लायक जन लक्षमा लहे;
ते भोज भलो भड भूपती, कवि शामळ कोडे कहे.

पितानां हेतविषे छपा.

पुत्र करे जो पाप, पिता ते पुण्यज जाणे;
पुत्र कदि दे दुख, पिता ते सूख प्रमाणे.
पुत्र करे जो हाण, पिता ते लाभज लेखे;
पुत्र वदे जो जूठ, पिता दिल सत्यज पेखे.
अवगुण असख्यधा पुत्रना, पिताने मन तो लाड छे;
शा गुण ओशीकळ कीजिये, पूर्ण पितानो पाड छे.
पुत्रतणो वीजोग, तेथ दावानळ रुडो,
पुत्रतणो वीजोग, तेथि शुभ जळमा बूड्यो.
पुत्रतणो वीजोग, तेथि शुभ डसवो सापे;
पुत्रतणो वीजोग, तेथि शुभ तपवु तापे.
महादु.ख नहीं मरवा तणु, दु.ख नहीं तन रोगनु;
पण कोड दु.ख शामळ कहे, पोढु पुत्र विजोगनु.
प्रीती भलेरी तात, महाप्रीती मातानी,
प्रीती सगा समस्त, प्रीत भारे भ्रातानी.
प्रीत घणी मोशाळ, प्रीत पण श्वसुर पक्षनी;
प्रीत घणी प्रिय नारी, प्रीत शुभ स्नेहि सखानी.
छे प्रीति अधिक प्रकारनी, कहे शामळ कोडे कथी;
पण अधिक प्रीत अतरतणी, सपुत समान सरस नथी.
जेणे चडाव्या आळ, बाळ रमता रोवराव्या;
स्त्रीवध गोवध ब्रह्म, इत्यादिक पाप कराव्या.
प्रिय साथ करिने वेर, झेर देइने जर हरिया;
कर्या गर्भ कइ पात, घात कूटवे करियां.

पाड्या विछोह नर नारिने, भंग कर्यो घरसूत्रनो;
पामे पोते ते पापथी, विजोग प्यारा पुत्रनो.

मोटा लोकोविषे छपा.

मोटा केरुं छिद्र, काढशे ते दंडाशे;
मोटा साथे वेर, करे तो स्त्री रंडाशे.
मोटा साथे प्रीत, पिडा कोइक दिन करशे;
मोटा साथे ममत, किधे नण मोते मरशे.
वळि मोटाने जे गुण करे, ते आटालुणे जशे;
रंकनि किरति राजा कने, करशे ते दुखियो थशे.
मोटा पासे गेह, किजे तो घोडां बांधे;
सगपण मोटा साथ, किजे तो काळजुं रांधे.
मोटा आवे घेर, सवारथने तो ताके;
मोटाथी वेहेवार, करे ते आखर थाके.
जे मोटा जन मूरखमना, ते साथे नव बोलिये;
शामळ कहे एवा आगळे, मन पडदो नव खोलिये.
मोटा साथे वेर, करे ते कारज फूडुं;
मोटा साथे वेर, करे तो भाग्यज भुंडुं.
मोटा साथे वेर, थयुं तो जीवन लेशे;
मोटा साथे वेर, करे ते केद रहेशे.
मानिये वात मोटा तणी, कदि निंदा नव कीजीये;
शामळ कहे प्रीती पूर्ण जो, पण मोटाथी बीजीये.
करे चोरि जे चोर, एक दिन शीश कटावे;
करे जारि जे जार, मान मरजाद मटावे.
करे चाडि जे चाड, सुजश जोतामां जाय;
निर्धननो वेपार, कदी देवाळुं थाय..
जे मोटा साथ ममत करे, मोत विना निश्चे मरे;
नीराश रह्यायी पण नकी, केम अरय एके सरे.

सहज वेरविषे छपा.

वेर कृपण-दातार, देखिने दीलमां दाझे;
वेर व्रतिकने विप्र, परस्परना मत भाजे.

वेर श्वान माजार, वेर तो गरुड अहीने;
वहु सासुने वेर, वेर गजराज सहीने.
वळि वेर पापि पुण्यवतने. वळि ओरमाया भाईने;
ए सहज वेर शामळ कहे, वेहेन अभागणि बाईने.
वेर भर्मने कर्म, वेर शोक्यो ज्या सरखी;
पाटीदार पटेल, वेर इजारा करखी.
वेर वणज अविवेक, वेर भिक्षापर भिक्षा;
वेर मूर्खने मित्र, शाणपणथी दे शिक्षा.
एवा वळि वेर अनेक छे. नाइ उपर नाइ जशे;
वळि सदा वेर शामळ कहे, सदगुणने दुर्गुण विषे
पिता तणो हणनार, एह पण वेर अनेरु;
हणे नारि के पुत्र, तेह पण वेर घणेरु.
करे नित्य अपमान, कलंक चडावी कोपे,
हरे भूमि घासून, लाज लोकोमा लोपे.
पण हाडवेर एथी अधिक, शामळ भट साचु भणे;
जे जुल्म वेर तो जारिनु, हत्या करता नव गणे.

देशी राजाविषे छप्पा.

राजानो विश्वास, करे वण मोते मरशे,
राजानो विश्वास, करे धन धीरज हरशे
राजानो विश्वास, करे तो रामज रुठयो;
राजानो विश्वास, करे तो काळज खूटयो
राजाने मित्रज मानशी, कहु डहापण तो शु कर्यो;
कवि शामळ कहे छे कोइनो, महिपति मित्र शुण्यो नथी.
रुठयो विप्र दे शाप, रुठयो किंकर कर जोडे;
रुठयो शत्रु दे दाव, मान मरजादा मोडे.
रुठयो पडोशी पाप, खोटि चुगली जइ खाय;
नारि रुठे जो नीच, मरे के नीकळी जाय.
राजा रुठयो रिद्धि हरे, जश जरनु जोखम करे,
ते धरम शरमने नव गणे, दुख देता दिल नव डरे.

कहे दिवसने रात, रातने दिवस कहेछे;
हाहा कहेछे सर्व, लक्ष सउ लाजे लेछे.
जळस्थाने स्थळ कहे, कहे स्थळस्थाने नीर;
वीरने वेरी कहे, वेरीने कहेछे वीर.
चपटीओ वजाडे लाख जण, बळिया बोले बळ करी;
कहे खरूं खरूं खोटु नही, कोइ न त्यां पुछे फरी.
तेडु भलु शत्रुनुं, दाम कामे दंडावे;
तेडु भलुको दुष्ट, देश छळ करी छडावे.
तेडु भलु यमराज, जीव जलदी लइ जाय;
तेडु भलुं लेणदार, लेणु लइ मारग थाय.
शुभ तेडुं ताय तरिया तणुं, सिंह सर्प विषपाननु;
शामळ कहे भूडु सर्वथी, दुख तो तेडु दिवाननु.
कोइ समे दे द्रव्य, कोइ वेला मन मेले;
कोइ समे करे कोप, कोइ वेला खुशि खेले.
कोइ समे शिरपाव, कोइ वेळा ले लूटी;
कोइ समे रहे राजी, कोइ वेळा रहे रुठी.
जुदा घडी घडीमा गुण घणा, शामळ सत्य कहे सही;
बहु दीठा ने बहु सांभळ्या, नृपति मित्र कोना नहीं.

वाणियाविषे छपा.

जीव दया प्रतिपाळ, आळ एके नव बोले;
न्यायट सावट नेक, धर्मनो धारण तोळे.
सदाव्रतनी साख, लाख ठेकाणे लहिये;
पुण्य वातमा पूर, नूर कुळ सुद्धे कहिये.
मानेछे मोटा महिपती, देश विदेश कोठी करे;
शामळ कहे शा सुलतान सम, एमां नव अंतर धरे.
अधर्म के अभिमान, गान के तान गणे नहिं;
निंदा नीच स्वभाव, भुंडु मुख वेण भणे नहिं.
वणिकमांहि गुण बीश, रीसनो न चडे रंगे;
चोरी चाडी जूठ, अहपद धरे न अंगे.

कदि गाळो कोइक दे घणी, पाछी चाळि न जाणियो;
वळि पुंठ न बोले पारकी, व्यवहारी जे वाणियो.
वीश वसा नहि वणिक, जिभे जे जूठुं बोले;
वीश वसा नहि वणिक, पेटनो पडदो खोले.
वीश वसा नहि वणिक, उतावळियो जे थाये;
वीश वसा नहि वणिक, वनिताशुं वहेवाये.
वळि वीश वसा ते वणिक नहि, चड्यो रावळे जाणियो;
जे सत्य तजे शामळ कहे, वीश वसा नहि वाणियो.
वास नहीं ज्यां वणिक, नगर ते उजड कहेवुं;
वास नहीं ज्यां वणिक, रातवासो नव रहेवुं.
वास नहीं ज्यां वणिक, कशो वेपार न करवो;
वास नहीं ज्यां वणिक, तहां भंडार न भरवो.
विद्या विवेक बुद्धी नहीं, वसे नहीं ज्यां वाणियो;
ए अधिक अढार वरण विषे, शामळ जुगते जाणियो.
भोगी भूप समान, दयाळु दाता दानो;
वणज वजीरी वकील, महीपतिनो मन मान्यो.
नाणावटमां नेक, कोइ कंदोइ काणियो;
दोशी दास दलाल, भलो भंडारी भणियो.
गुणसागर दिल गरुओ घणो, लेण देण लायक लह्यो;
सुविचारि विवेकी वाणियो, शामळभट कवियें कह्यो.
दढ हइयानो धीर, नीरमां नाणां नांखे;
दिलनो डाह्यो दीठ, तोतळी भाषा भाखे.
उपजे आगळ बुद्धि, समा परमाणे सूजे;
करे लाखनो वणज, घणो नाणा विण मूजे.
कोशर कोडी केरी करे, खरच क्रोड जश जाणियो;
छे चार वरणमां चतुर नर, विवेकि जोतां वाणियो.
सेवो निरदय नीच, सेवो वसवइया वाटू;
सेवो कोइ अकरमि, खात्र पाडू के खाटू.
सेवो भांड भवाइ, सेवजो जाचक जोगी;
सेवो वरण अवरण, सेवजो भीक्षा भोगी.

सेवजो काछिया माछिया, ठग गोला के ठाणिया;
शामळ कहे अर्थ सरे नहीं, वखाणि सेव्ये वाणिया.

सद्गुण दुर्गुणविषे छपा.

इद्र वारणा होय, कोय खाते नव खाय;
आवळ केरा फूल, तेथी सुगध न पमाय.
झाकळ केरा नीर, तृषा तेथी नव भागे;
बगला उज्जळ होय, हसने काम न लागे.
देखाय करा मोती समा, आभ्रण नव ओपे अशा;
कवि शामळ कहे साखी जुओ, गुण विण रूप कहो कशां.
काम क्रोध ने लोभ, मोह माया नव मडे;
अहकार अभिमान, छक छळभेदज छडे.
परधन ने परनार, तजे परनिंदा प्रीते;
सत्य साथ सबध, रजोगुण राखे रीते.
दे दान मान सनमान शुभ, परमारथ प्रीते करे;
जो ग्रहस्थमा गुण एटला, तो इकोतेर उद्धरे.
छानु न रहे पुण्य, रहे नहि छानी उसे;
छानु न रहे खून, छानि न रहे गुण गसे.
विद्या छानि न रहे, रहे नाहि छानी प्रीती;
छानो न रहे शूर, रहे नहि छानी रीती.
दाता झुझार ज्ञानी गुणी, व्यसन वाद विद्या विधी;
वळि दान मान सनमान शुभ, छानि न रहे सिद्धि रिद्धी.
छानी न रहे छेक, रीत भुडी के रूडी;
घरमां करिये गुह्य, देशमा वागे डुडी.
छानो न रहे पुरुष, शूर कायर के दाता;
छानु न रहे छिद्र, भ्रात भगनी के माता.
वळि विद्या छानि रहे नहीं, लीला लेहेर लक्ष्मी तणी
कादि छानु पाप रहे नही, खोदि घाल्य पृथिवी खणी
राजाने ते साल, फटायो भाइ फूटे;
एक प्रजाने साल, भूप वण वाके लूटे.

वेपारीने साल, पटंतर पटकुळ नारी;
पुरुं पुरुपने साल, भामनी भुंडु भारी.
शामाने सालज शोक्यनुं, पुरुसने विद्यातणुं;
जे नर नव माने नारने, स्त्रीने साले ते घणुं.
भलेज जायो जन, जेथि सुख प्राणी पाम्या;
भलेज जायो जन, जेथि दुनियां दुख वाम्या.
भलेज जायो जंन, दान दाता कहेवाणो;
भलेज जायो जन, सदा सदगुणी गणाणो.
जननीए जनो भले जण्या, शूर पुर दाता भगत;
शामळ ते भलेज जनमिया, जेथी सुख पाम्यु जगत.
धन्य तेहनी मात, पुण्य उपर जो प्रीती;
धन्य तेहनी मात, जेह घर रूडी रीती.
धन्य तेहनी मात, जेह सदाव्रत आपे;
धन्य तेहनी मात, परायां कष्टज कापे.
धन्य धन्य तो माता तेहनी, दरीद्रता कविनी दळे;
कहे शामळ ते सौथी वडो, बाकी बीजा बहु मळे.
धिक मातानी कूख, करी चोरी के चाडी;
धिक मातानी कूख, अकल फेलावी आडी.
धिक मातानी कूख, दुःख दुनियाने देता;
धिक मातानी कूख, जगतमां अपजश लेता.
शामळ कहे शिदने जनमिया, भुंडि वात भावे मण्या;
वनिता न रहीशे वांझणी, लपोड शंख जेणे जण्या.
सासु केरु कलंक, पापणी बहु प्रकाशे;
कुमित्र मित्र कलंक, विश्व सगळामां वासे.
शेठ तणुज कलंक, खुनी वाणोतर खोले;
कंथ तणुज कलंक, बुद्धिहीणी स्त्री बोले.
आपणे ठाम देखाडियो, कलंक बोले आपणुं;
शामळ कहे तेनुं परखिये, प्रथमथीज लुच्चापणुं.
हासथकी बहु हाण, हासथी गरुआ गांजे;
हासथी होय कलेश, हासथी भव जन भांजे.

हासथी रुठे राय, हासथी हीमत हारे;
हासथकी जश जाय, हास वण मोते मारे.
हसवाथी हुश पहोंचे नहीं, हसे खोड लागे खरीं;
शामळ कहे शाणा समजजो, करशो नहि कदि मशकरी.

दोहरा.

दाताथी मोटो नहि, दाताथी नहि शूर;
दाताथी डाह्यो नहीं, प्रताप जेनो पूर.
बहोतेर कळा बुद्धि वधे, चउद विद्या चित्त चाह;
दातागुण जेमां वसे, बहोळो जश वधाय.
कळ विकळ जाणे नही, दोलथी होय दातार;
विशंभरने वहालो घणो, धन्य एनो अवतार.
सोमां शुरो कोइक नर, लक्षे कोइ दातार;
पडित नर परखी शके, धन्य एनो अवतार.
शरीर आपवुं सोहलु, दोहलो देवो दाम;
दाता धन धुळवत गणे, ते नही ठामे ठाम.
जीवत जगते जश वधे, स्वर्गसमु सुख थाय;
कृपण होय कोटी पती, आप हाथे नव खाय.

कृपणविषे दोहरा.

अग्नि चोर हाक्यम लिये, रहे कहीं दाब्यो दाम;
करपि छोरां करगरे, न मळे वपु विराम.
कोने धन शत सहस्त्रधा, कोय करोडो लाख;
निरखी हरखे सुमनर, रहेछे अंते राख.

छपा.

जेम घांचिनो वल्द, रात दिवसे ते फरियो;
त्यम गद्धो गुणहीण, भार अणलेखे भरियो.
पाडो जेम पखाल, पुठपर परठे पाणी;
वेठे पकड्यो वीर, तरफडीने ते ताणी.
जर रळ्यो रोज थइ रांकडो, वेठी दुख वधारियो;
शामळ नव खाधो खरचियो, जीती बाजी हारियो.

जर जोतामां जाय, चोर के हाकम लूटे;
जर जोतामां जाय, जुओ जर खातां खूटे.
जर जोतामां जाय, उठे जो आग सजोरी;
जर जोतामां जाय, चडे चाडी के चोरी.
जर आवा वेरो जे समे, राख्युं घडी रहे नहीं;
शामळ कहे जाय समूळगु, कहो मूळ जोतु कहीं.

लोभविषे छप्पा.

लोभ घटाडे लाज, कान बगडे ज्ञी जागे;
बळि घटे वेहेवार, भार शोभा पण भागे.
लोभे लक्षण जाय, थाय अन्याय अधर्म;
लोभे सौ संताप, छाप चोंटे कुळ कर्म.
सन्मान मान मोटम मटे, शुद्ध कुळमां शूळ छे;
शामळ कहे शाणा समजजो, लोभ पापनुं मूळ छे.
चाणुं सांज सवार, मध्य सध्या मध्य राते;
घडी पलक ने पहोर, आज काले परभाते.
रवी सोम शनिवार, त्रीज तेरश त्रयवेळा;
शरद शिशीर वसंत, भुवन भूवनमां भेळा.
क्रत आदि युगअंते कळी, शुद वद सर्व समायछे;
शामळ आशा तो अमर छे, जुग वाधा वहि जायछे.
जाय लोभथी जीव, देवपण लोभे रुठे;
भवन करी दे भस्म, लोभनो अग्नी ऊठे.
होय लोभथी हाण, जानपणुं लोभे जाय;
लोभे हीमत हान, दीनपणु लोभे थाय.
लोभे लक्षण लाखो घटे, लोभे संकट शूळ छे;
कवि शामळभट साचु भणे, लोभ पापनु मूळ छे.
लोभे तूटे प्रीत, लोभथी हीत न होय;
लोभे चोरी चाडि, करे कुळवंता कोय.
लोभे बोले जूठ, लोभथी हत्या थाय;
लोभे जाय विदेश, लोभथी गाणां गाय.

लोभी सगळो संसार छे, होय जेथि पण हीनता;
शामळ बहु लोभी बेजणां, विप्र अने वळि वीनता.
आशा ऊंडी खाड, पहाडथि थाय न पूरी;
हेम मेरुसम होय, तोय पण रहे अधूरी.
आशा नीर अघात, बहू जन तेमां बूडया;
कोण राय के रंक, कोण रूडा के भुंडा.
शूरा पूरा पंडित सऊ, भण्या गण्या भूला भम्या;
आशारूपी अरणव जळे, शामळ कहे सऊ शम्या.
गळे अढारे अंग, गळे नासा ने नेणां;
पळे मुंडने तुंड, वदाये विपरित वेणां.
अस्थि रुधिर ने मांस, सुकाय चलाय न चरणे;
धातु सरवनो ध्वंस, कशुं संभळाय न करणे.
इंद्रियो वधिये अडवडे, अहार निद्रा पण घटे;
शामळ कहे तृष्णा शतगुणी, मनमां यथें नहीं मटे.
अर्थी न गणे पाप, अर्थी जगने नव जुए;
अर्थी न माने शाप, पाणी परियानुं खुए.
अर्थी कूडां काम, करे बेके नव बीहे;
अर्थी बोळे नाम, लाख लांछन शिर लिये.
अर्थी तो जिव आपे खुए, अर्थी अवगुण नव गणे;
अर्थी आंखे देखे नही, शामळ भट साचुं भणे.
कामी कहिये अंध, अंध लक्ष्मीनो लोभी;
अंध सवारथ सर्व, अंध मेलो मन मोभी.
अंध अदेखो आप, अंध चोरो ने चाडो;
अंध अहंपद ऊर, अडावे वातो आडी.
एवा अनेक तो अंध छे, कां नर ने कां नारियो;
शामळ कहे अंध अती घणा, जे जन इछे जारियो.
लोभ करावे कष्ट, लोभ मरजाद मटाडे;
लोभ कपावे शीश, लोभ गुण ज्ञान घटाडे.
लोभे जाय तणाइ, लोभ सुख सर्व शमावे;
उत्तम अधिपति आप, नीचने शीश नमावे.

दुख दावानळ तो लोभ छे, करे गुणीने गरकमा;
कवि शामळभट साचु कहे, लोभी पडशे नरकमा.

भीखविषे छपा.

भीखमाहि नहि भोग, भीखथी जोग न साधे,
भीखमाहि नहि मान, भीखथी भाग्य न वाधे.
भीख नाम निर्माल्य, भीखथी भारज खूए;
भीक्षुक ओछु पात्र, भीख सामु को जूए.
छे वरण तुछ ते सरवथी, भीख होय हलकी बहू;
कवि शामळ कहे शाणा शुणो, भिखारी भुडू शु कहू.

दोहरा.

मोतथी भुडु मागवु, धर्यो जन्म ते धीक;
कहेवो दाता सूमने, भूडी सौथी भीख.
कायर शूर वखाणवो, कृपण कहो दातार;
नीचने उंच वखाणवो, भारे ग्रहेवो भार.
अधर्मि होय अभागियो, अधिक जणावे हठ,
रीझववो राजा कही, भीखने माथे भठ.
गुणी कहेवो गुणहीनने, स्वल्प ज्ञानी शठ;
न रहे बोल जाचक तणो, भीखने माथे भठ.

प्रश्नोत्तरविपय छपा.

प्रश्न.

कोण पृथ्विथी प्रौढ, कोण अणुथी पण नानो;
कोण पवनथी पहेल, कोण देवोथी दानो.
कोण विधुथी विमळ, कोण अग्नीथी तातो;
पयथी उज्वळ कोण, कोण मदिराथी मातो.
वळि कवण तेज तरणीथकी, कोण शर्कराथी गळी,
कवि शामळ कहे उत्तर कहो, पूरण थहोचे मन,रळी.
कवण तरणथी तुछ, कवण मणिथी छे मोघो;
स्वर्णथि शोभे कवण, कवण कुशकाथी सोंघो.

कवण बरासथि बेहेक, कवण काजळथी काळो;
कवण लोहथी कठण, कवण बाळकथी बाळो.
वळि कवण वींछिथी वेदना, कवण सरवथी छे गळी;
शामळ मेलुं शुं मेशथी, कहो तो पहोचे मन रळी.

उत्तर.

महिथी मोटो दानि, अणुथी लोभी नानो;
पवनथि पेहेलुं मन, विवेक विबुधथी दानो.
चंद्रथि निर्मळ क्षमा, क्रोध अमीथी तातो;
दूधथी उज्वळ सुजश, अमल मदिराथी मातो.
छे तेज तरणिथी नेत्रनुं, गरजज साकरथी गळी;
कवि शामळ कहे उत्तर कह्यो, पहोची तेनी मन रळी.
जाचक तृणथी तुछ, मणीथी सदगुण मोंघो;
स्वर्णथि शोभे सपुत, गरिब कुशकाथी सोंघो.
कीर्ति बरासथि बेहेक, कपूत काजळथी काळो;
सूम लोहोथी कठण, अज्ञ बाळकथी बाळो.
दुरवचन वींछिथी वेदना, मिष्ट वाणि सउथी गळी;
छे कलंक मेलु मेशथी, पहोचि तेनी मन रळी.
परहर मनविण दान, हेत विण परहर जावुं;
परहर बाळशुं दयाल, चाहविण परहर चाहावुं.
परहर वडाशुं वेर, मित्र परहर जे घाती;
परहर लंपट गुरु, दुष्टनी परहर जाती.
परहर जे मीठो लालची, परहर लांच ले पांचमां;
शामळ कहे परहर प्रेमदा, अन्य पुरुषनी आंचमां.
बाळ पराणे प्रीत, बाळ निरधननुं जीव्युं;
बाळ कुबुद्धी बुध, बाळ खारुं जळ पीवुं.
बाळ सूमनी सेव, बाळ कपटी घरनाणुं;
बाळ चुगलिनी चाल, बाळ बकरी दूझाणुं.
वळि बाळन वसवुं सासरे, बाळ बनेवी घर जवुं;
शामळ कहे बुद्धी बाळ जे, दरीद्रि थइ दाद्या थवुं.

बाळ मुरखशुं मेळ, बाळजे पाये रळवुं;
बाळ निर्लज वेपार, बाळ अणमळते मळवुं.
बाळ गुणविण रूप, बाळ वगडामां वसवुं;
बाळ वहू बकवाद, बाळ हरदम जे हसवुं.
वळि बाळ उपासन भूतनुं, बाळ विद्याविण नामने;
वळि बाळ देह दातार विण, बाळ वृद्धविण गामने.
बाळ वसवुं मोसाळ, बाळ स्त्रीवण सुख घरनुं;
बाळ वनेवी घेर, वसीने भरण उदरनुं.
बाळ दिकरिना दाम, बाळ शत्रुघर शरणे;
बाळ कुंडळो कान, कथा न शुणी कदि करणे.
बाळो परवश पेटारथी, आदर विण ऊदर भरे;
शामळ कहे बहुधा बाळ जे, सपुत वसे ससरा घरे.
बाळ मागवी भीख, बाळ काशदियुं करवुं;
बाळ चोरिनुं चित्त, पारकुं धन जे हरवुं.
बाळ वैतरुं वेठ, भार लेवो निज शीशे;
बाळ पुरुष परवश, दीनता निशदिन दीशे.
वळि बाळ पंथ जे पापनो, बाळ एकल शूरा थवुं;
शामळ ते धंधो बाळ जे, विदेश जन्मारो जवुं.
धिक शूरानुं शस्त्र, जो कदी कायर कहावे;
धिक गुणिजनना गूण, न गणना गुण जो गावे.
धिक जाचक जगमांहि, कृपण आगळ कर ओडे;
धिक कविता कविकेरि, कृपणना जश जो जोडे.
धिक्कार पवित्र सुपात्रने, कुपात्रशुं रंजित रहे;
शामळ धिक विद्या चातुरी, गरथ काज सदगुण ग्रहे
भामनि भूंडी भोग, भोग घेलुं घरसूतर;
पाळक कृपणे भोग, भोग जे पुत्र कपूतर.
भोग देहमां रोग, भोग जे पाये रळवुं;
वाला विजोग भोग, भोग वणमोते मरवुं.
महाभोग प्रेम परनारिशुं, भोग ममत मुरखपणुं;
महाभोग भक्ति भावे नहीं, भोग एटलाने भणुं.

मुआ मुरखने जाण, मुओ जो नार कुनारी;
मुओ देह क्षयरोग, मुओ जो रणशिर भारी.
मुओ चडेल कलंक, मुओ अपजश ले आपे;
मुओ खेप करनार, मुओ जे रळवुं पापे.
जन मुओ जेह परवश पड्यो, मुओ जे वनिता वश हवो;
कवि शामळभट साचुं भणे, मानहीण माणस मुओ.
जीव्यो जश लेनार, जिव्यो परमारथ पूरो;
जीव्यो दाता देह, जिव्यो जे सामद शूरो.
जीव्यो भाविक भक्त, जिव्यो जे जगते जाण्यो;
जीव्यो किरतीवंत, जिव्यो कवियेज वखाण्यो.
जीव्यो जन ते तो जाणवो, जेनि आश सउको करे;
शामळ कहे जीव्यो तेह जन, जे संकट परनां हरे.

प्रश्न.

प्रथम पाणि के पवन, प्रथम क्षीती के खग्गा;
प्रथम बीज के वृक्ष, प्रथम औषधि के अग्गा.
घण के एरण प्रथम, प्रथम मरदज के मेरी;
प्रथम वृष्टि के सृष्टि, प्रथम आंबो के केरी.
विद्या के विप्र प्रथम कहो, प्रथम दिवस के जामनी;
शामळ कहे जाणो तो कहो, प्रथम कंथ के कामनी.

उत्तर.

नहि पाणी के पवन, नही क्षिती के नहि खग्गा;
नही बीज के वृक्ष, नही औषधि के अग्गा.
नहीं एरण घण नही, मरद के नहि नहि मेरी;
नहीं वृष्टि के सृष्टि, नहीं आंबो के केरी.
नहि विद्या के नहि विप्रपण, नही दीवस के जामनी;
शामळ कवि कहेछे समजजो, कंथनि साथे कामनी.

खावाना छ रस.

गुणनिधि गोरस एक, बिजो इक्षुरस बाळा;
त्रीजो रस तांबूळ, मधू चोथो रस माळा.

प्रीया आवरस पांच, छठो सबरस ते मीठुं;
विश्वविषे विख्यात, देवने दुर्लभ दीठु.
सप्तम रस शोध्यो नव मळे, खरीज रसनी खाण छे;
ज्यम हीरो कोइक होय छे, पोडा तो बहु पाण छे.
गावाना रस गणु, कंठ सूकंठी पहेलो;.
बीजो रस बहु ताळ, त्रिजो रस बाजा वहेलो.
चोथो रस चतुराइ, थकी जे बुद्धी बोले;
पवित्र रस पांचमो, नाम ईश्वर अण तोले.
छठो रस सउनो छत्रपति, जे मेळानु गान छे;
शामळ कहे रसिक शिरोमणी, मोटा जननें मान छे.
दर्शन पेहेलु विप्र, प्रभूने यज्ञे पूजे;
शुभ दर्शन श्रीपात, सच्चिदानंदज सूजे.
निर्मळ दर्शन नाथ, शक्ति पूजननो संगम;
वतिक दर्शन बेद, पाचमु जाणो जगम.
दर्शन छठु दरवेशनु, एकज सउनो इश छे;
शामळ कहे छठो एकनां, पाखंडो छत्रीश छे.
संस्कृत भाषा सरस, मागधी मोटे मुख्ये;
ग्वालेरी गुणनीय, अपभ्रंशी ते तुल्ये.
देशी भाषा दाख, पिशाची पदजो प्रीते;
चारण चोथी भाख, राजद्वारे शुभ रीते.
ए खट भाषा जे खोजशे, धारी जोता धर्म छे;
कवि शामळ भट साचु कहे, भोगी लेना मर्म छे.
न्याय शास्त्र नवरंगी, बिजुं वेदांत वखाणु;
मीमांसा महामुल्य, जुगति पातांजलि जाणु.
सांख्य शास्त्रनी संख, भला जन ते तो भाळे;
वैशेषक गुणवान, सर्वनो संशय टाळे.
खट शास्त्र कह्या ते खोजशो, विवेकवंता तो थशो;
कवि शामळ भट साचु कहे, नहि एमां संशय कशो.

---

१ ब्राह्मण.

जीवताने सघळुं मळे.

नांझणि प्रसवे पुत्र, मुर्ख पण कविजन थाये;
नीर भराय नवाण, रक शिर छत्र धराये.
वळे कोइ दिन वेर, झेर वळि जाय जरुरी;
गुणका जेवि गमार, सती ते थायज शूरी.
ए रीत अनेक थया थशे, शास्त्र साख दे छे सही;
शामळ कहे शाशु शु कहु, जीव गयो आवे नही.
जिवतो पामे राज्य, जीवतो परणे नारी;
जिवतो बेसे अश्व, थाय जीवतो वेपारी.
जिवतो माडे जगन, सुकीरति जीवतो साहे;
जिवतो पहेरे नग, जीव तो लाणा लाहे.
वहालानो होय विजोगियो, ते सजोगी थाय छे;
पण मुआ कोइ देखे नही, शामळ भट गुण गाय छे.

सुख दुख विषे

दुखे जाय सदबुद्धि, दुखे भणतर नव भावे,
दुखे डहापण दुर, दु ख कुड कपट करावे.
दुखे देहमा रोग, तेज तननू तो नासे;
दुखमा लीला लेहेर, पलक नव आवे पासे.
दुख दावानळमा डुब्रियो, जरिये शाती नव जडे;
हसवुं नव आवे हेतथी, फुल मुखमायी नयम पडे.
सुखे साभरे सर्व, व्यसन बहु विधिना बुझे;
रमवु हास्यविलास, स्नेहनी जुगती सूजे.
भांड भवाइना भाव, जान जोणु ने जातर;
खटरस भोजन खेल, महासुख महिमा मातर.
दुख दावानळमा जे पड्यो, सुख सर्वे एनू गयुं;
हसवु नयम आवे हेतथी, पिंजर बळी मळे थयु.

ईश्वरनी कृपा तथा आपत्ति विषे.

दिकरी फेडे दाम, खरचि जोबनमा राडे;
जन्म कुंवारा जाय, पछी घडपण घर माडे.

मुके निरमां नाव, बने एवु के बुडे;
धणि पकवे बहु धान, आवि गामोतर गुडे.
मनना मनसुबा मन रहे, विचार्युं थाये जायछे;
मन ममत घणो मूरख करे, कर्त्तानुं कर्युं थायछे.
जे बेसे गजशीश, चरण अणवाणे चाले;
न जुए तडको टाढ, फरे दावानळ झाळे.
जे घेर लाख करोड, व्याज भरता ते दीठा;
सुता पुष्पनी शेज, काशदा करे वरीठा.
छे एवि अकळ गति दैवनी, सुख त्यां दुख आवी भडे;
शामळ कहे सघळां मानवी, साखे दुख जे शिर पडे.

दोहरा.

भर्ता कहे शुण भामनी, तज मन चिंता शोक;
गम्यु थाय जगदीशनु, डहापण करवु फोक.

दोहरा.

को वेळा नवनिध्य घरे, को वेळा नही दाम;
को वेळा सेवक सहु, को वेळा परकाम.
को वेळा खटरस सहीत, पेर पेर पकवान;
को वेळा कष्टे मळे, मठ कुशका खडधान.
को वेळा गज घोडला, छत्र चमरनी छांय;
को वेळा पग पाळवे, ताती वेळु माय.
कोतक मदीर महेलमां, सुख सज्या फळ फूल;
को वेळा आलोटवु, धरणी कटक धूळ.
कोतक पटकुळ पामरी, मोंघे मूल्य मगन;
को वेळा रण रखडवु, निर्लज पणे नगन.
को वेळा परवत टपे, समरथ पणे शरीर;
को वेळा देह दामणी, न पीए हाथे नीर.
कोतक केसर अरगजा, वपू ओपावे वर्ण;
को वेळा किंकर थइ, चापे परना चरण.
कोतक माणक मोतीना, हैये हाटक हार;
करे को समे काशदु, भारो माथे भार.

को वेळा अश्वे चडे, दिवान थइ दिल दीश;
को वेळा गर्धव मळे, पडे मोजडां शीश.
को वेळा ध्वज धर्मनी, सदाव्रतनी शीख;
कंगाळ थइने करगरे, भटकी मागे भीख.
कोतक पंच प्रमाणमां, मोटा आपे मान;
कोतक देशवटो दिये, कथन सुणे नही कान.
समा समानी छांयडी, सुख दुख अपरमपार;
पुण्य पाप ने जोड ले, एमां शो अहंकार.
सात सपूत शोभित सदा, मोटा जन दे माग;
वपु पडतां ते वांझियो, कोइ न मूके आग.
मारुं मारुं मूरख कहे, तारुं न मळे तंन;
पुण्य परवारे रण अटे, दिवस पाधरे धंन.
पुण्याइनुं फळ सुख छे, पाप दुखनी पेर;
पूर्ण कोइ अमृत पीए, कोइ हळाहळ झेर.
सुत समृद्धि शरीरनो, करशो गर्व न कोय;
भले मळ्युं ते भोगवो, छाया फरती होय.
राणी दाशरथी तणी, समरे दासि शरीर;
अरण्यमां अर्भक जण्यो, न मळे अन्न के नीर.
रघवाइ रझळी रणविषे, जळ कारण ते जाय;
पडत पडे चडते चडे, दैवगति कहेवाय.

हिंमतविषे छप्पा.

हीमत मूके हाण, हिमत मूके तन धूजे;
हिमत तजे जिव जाय, सरस रस्तो नव सूजे.
हिमत मूके हमेश, जरूर जर ने जश जाय;
हीमत मूके दाम, लेणना देणा थाय.
हीमत मूतयार्गी हारिये, मडकी वेण न भाखिये;
कवि शामळ कहेछे सर्वदा, ह्रदये हीमत राखिये.

---

१ राम.

गरजविषे छपा.

गरजे जाय विदेश, गरज शिर भार उपाडे;
गरजे वाजां वाय, गरज तरवार वजाडे.
गरजे गूण गमाय, गरजथी धन पण धीरे;
गरजे मोंघो माल, नांखशे उंडे नीरे.
पामर जनने पीता कहे, माठा सग रहे मळी;
कवि शामळभट साचुं कहे, गरजज साकरथी गळी.
गरजे घेला साथ, जाय डाह्यो पण दहाडी;
गरजे निच घर ऊंच, लेज लालेणी लाडी.
गरजे पंडीतराय, मुरखनी माने सेवा;
लक्ष पती तजी लाज, गरीब घेर जाये लेवा.
बळि गरजे गर्व घटे घणो, गरजे रोप मुकी रहे;
कवि शामळ कहे वश गरजने, कयरणने काको कहे.
गरजे सउ विष विषम, पियेछे पूरण प्रीते;
दंभी जनने देखि, नमे नर गरजे नीत्ये.
गरजे निर्मळ नार, लाज ल्यालेणी लोपे;
गरजे सुमनी सेव, चाहे छे चित्तथी चोंपे.
राजा पण गरजे रंक घेर, पाळे पगले परवरे;
कवि शामळ भट साचूं कहे, नेव नीर मोभे चडे.
गरजे गुणका नार, जइ नर आगळ नाचे;
गरजे ओडे हाथ, गरज जाचक थइ जाचे.
गरजे गुणिजन थाय, गाय गुणवंता गीत;
गरजे शत्रू साथ, पराणे मांडे प्रीत.
निरमां मुकेछे नावडां, ते बूडे किंवा तरे;
कवि शामळ कहे गरजे सउ, कूडुं के रुडुं करे.

साचा तो डेवला कोइ होय.

दाता कोइक देश, कृपण जगमां बहु जाहर;
शूरा कोइ समर्थ, कोटीधा कूडा कायर.
पुण्यनो क्यांइ प्रवेश, पापिनां पूर वहेछे;
सतवादी सति कोइ, कलंकी कोड रहेछे.

हरमे हरमे हीरा नहिं, पुरपुर पोठा पाण छे;
जाणो विरला जशवंत नर, असद्व्य पुरुप अजाण छे.
शेरी शेरी बहु श्वान, सिंह सांभळिये काने;
सपुत सहस्त्रे एक, कपुत कोटी अनुमाने.
सदविद्या क्यांइ शेष, अविद्या अति आडंबर;
धातुवादि को धीर, धूर्त जुठा जग झमर.
कविजन साचो तो कोइ छे, मूर्ख कवी बहु माणता;
शामळ बहु लोक स्वारथी, परमारथ को जाणता.
बहु बांधे हथियार, ताणता वेळा त्रासे;
बोले बोल अतोल, नाणु खरच्याथी नासे.
खाय पिये जन खूब, होय खबरो खापण;
सद्य कोइ साहुकार, ओळो आपी थांपण.
बकबा करि बोल बके बहु, पाळे बोइक पुरपती;
नुर राखे नरपती नामनु, रुडी करमनी जो रती.

पाप पुण्यविषे छपा.

पापे पापनी बुद्धि, पाप अतिशे दुख आणे;
पापे मित्र कुमित्र, पाप जुगती नव जाणे.
पापे कूल कलंक, पापथी पुण्य पळाये;
पापे घटले वंश, पाप सउ अगुण गाये.
पापे सुधर्म धरि नहीं, पाप भगावे भोगने;
शामळ कहे पापे पामशे, रगतपीत सम रोगने.
पाप पुजे पाखंड, पापि कुळ हीण कहीजे;
पापे सूख विछेद, पापथी केद रहीजे.
पापे अंध अपंग, पापथी दुर्बळ देहे;
पापे अपजश पूर्ण, पाप अवगुणनु गेहे.
पापे परिब्रल पिछाय नहिं, (रग रग बेठे रोगने);
शामळ कहे फळ ए पापना, (पाप न जाणे जोगने.)
पुण्ये नासे पाप, प्रजा शुभ पुण्ये पामे;
पुण्ये प्रसरे कीर्ति, वेदना पुण्ये वामे.

पुण्ये नहि ग्रह दोष, पुण्य सज्जननु भूषण;
पुण्ये देह न दंड, पुण्य निर्मळ निर्दूषण.
नळि पुण्ययकी लक्ष्मी मळे, पुण्ये पाप बधु बळे;
शामळ कहे पुण्य प्रतापथी, ताप त्रिविधि तनना टळे.
छानुं करिये पाप, जगत बाधु ते जाणे;
छानु करशे पुण्य, मोज महिमा ते माणे.
छानुं खाये झेर, लेर ते वेळा लागे;
छानो करडे नाग, पलक पाणी नव मागे.
जप तप के साधन जोगनु, ते छाना करवां घटे;
अन्याय अधर्म गुपत करे, तेनुं मान तुरत मटे.
छानो करडे नाग, जोरथी झेर चडेछे;
छानु खासे वेर, पोठि पछि विपत पडेछे.
छानो करडे विंछि, चित्तमा लागे चटको;
छानो पावक पडे, भयानक लागे भडको.
जे छाना पाप जगत करे, जरूर ते दुख जोगवे;
पण छाना पुण्य प्रतापथी, भला सकळ सुख भोगवे.

बहोतेर कळा विषे.

चित्रकळा पोशाके, पागबंधन कृतिपाके;
नमवु तरवु नीर, स्नान जितवुं वंदि थाके.
भरवे भावे पलग, बेसवु[10] सूवुं[11] शेजे;
बोलवु[12] हिडवु[13] होडे[14], देवपूजन अति तेजे.
धरवा अगे शणगार शुभ, तिलक करे दीठु[18] करे;
भेळवु ने लेपु[20] लेजवु, कळा एहको मन धरे.
करवां लेखो काम, कामरवेलु जनेरीझे;
खेती[25] वर्णज विवेक; सेव चुरापर्ण लीजे.
चडे[28] झाडपर जुगति, पारधी परठे पापे;
पखी[31] पाडे पलक, कदी महेनते करि आपे.

हय वाहने करे विवेकथी, हाकी जाणे होडथी;
ओषडे ने अमल्ज केळवे, शामळ सुकळा जोरथी.
परखे नरखे नेह, बोल सउ गमतां बोले,
न्याय चूकवे नेट, धर्मनी धारणे तोळे.
गाये वांप विवेक, चाहि चोपगने चित्ते,
उपासने आसने, मंत्र जत्रो[४५] जप नित्ये.
पोषण दोषंग ने दिल हरण, शरणागतने राखवुं,
चोरु[५०] चित्तमां चेतवु, भणी कळा सत्य भाखवु.
दान मान अपमान, जूठ जाणु परखावु,
सचं प्रपच पखिड, दढ देषु[५५] चित चहावुं.
तजवु सजवु सेव, देव दर्शन मिपमेळवु,
कळवु रमवु रमत, दु ख सुख शरिरे सहेवु
वळि प्रीत रीत पग कांढवो, खळ नव जाये खेतरी;
नित्य सर्वनाम दिल राखवु, सामळ कळा बहोतरी

छत्रीश वाजा विषे.

ताळे मृदगे त्रुई ढोलं, रवाजे सारगि सतारी,
वेणी बंशी जंत्र, तम्बुरो ने त्रोतारी.
कासी[१३] नरघां भेर, नफेरी[१८] डफ शरणाइ,
भुगळे शृगि[२०] करणाट, डाक डमरु गोमुखाइ.
खंजरी मजिरा[२६] मोरचग. शंख उपगे नोबत मली;
एक बे[३२] चो[३३] छट्ट नव बारना, तारतणा छत्रिश मळी.

स्वभावविषे छप्पा.

केसर क्यारा माहि, वरास कस्तुरि बेहेके,
पाछळ कनकनि पाळ, लक्षधा मोती ऐहेके.
गगा गोमति नीर, झनेर जडीत्रज झारी,
सोळ धरी शनगार, सिंचे नरपतिनी नारी.

एवी रीते कदि उगियो, लसण छोड गगानट;
बदबोइ उठे पण बहु घणी, शामळ स्वभाव नव मटे.
जळ तरवाने तुंब, अग्नि ओलववा नीर;
भुखनुं ओषड अन्न, बाळनु ओषड क्षीर.
ताव ओषड उपवास, गूमडे डामज देवा;
विवेक तो वशिकरण, समस्त प्रकारे सेवा.
ओषड छे एके एकना, कोडे कोडे कहु कथी;
भुंडा के रुडा स्वभावनु, शामळ कहे ओषड नथी.
कोइ स्वभावे शीळ, तथा कोइक तो तातो;
कोइ स्वभावे उदार, कोइ कृपी मद मातो.
कोइ जार को जुलमि, कोइ दभी के डाह्यो,
को पापी पुन्यवंत, कोइने व्यसने बाह्यो.
को हरामि ने को हेतनो, को हसमुखो हरी घड्यो,
शामळ स्वभाव जे जातना, प्रथम पड्यो ते तो पड्यो
कोइ वरणवे वेद, भेद को भारे भणियो,
को मूरख माहिपत्र, कोइ ज्ञानीमा गणियो.
कोइ करे बहुपुण्य, कोइ कहेवाणा पापी,
कोइ समज्या नहि सत्य, कोइ जपमाळा जापी.
को सुखदाता सहारने, कोइ नीच सउने नड्यो;
शामळ स्वभाव पलटाय नहि, प्रथम पडयो ते तो प

कणबीविषे छपा

पटल पास पतशाह, आप जइने कर ओडे;
पटल पास पडीत, जाचवा जइ जश जोडे.
पटल पास सउ श्रास, मान मूकीने मागे;
पटल पास लखपति, लालचे पाये लागे
आपेछे पटल पसायतो, जग जीवाडण जाणिया;
पातशाह वधे नहि पटलथी, वखाणिये शा वाणिया.
शेठ होय श्रीमंत, होड कणबीथी हारे;
कणबी जेवो कोइ, धर्म रुडो नव धारे.

वणिक कोटिध्वज होय, तोय गणशे लखि लेखुं;
दुर्बळ कणबि दातार, डाह्यो के घेलो देखुं.
जे जाण हशे ते जाणशे, अभिमानी मद आणशे;
शामळ सीमा आप्यातणी, मागण मोजो माणशे.
कणबी जेवो कोय, न दीठो मननो मेहेरी;
अढळक आप्ये जाय, अहर्निश साज सवेरी.
सुखडे सारु सुरत, न्याय खरचे ने खेले;
परभोगी परकाज, रिद्धि खरचे रंग रेले.
भोळो कणबी भूमंडळे, देता पाछु नव जुए;
शामळ कहे बीजा बापडा, रिद्धि खरच्या केडे रुए.
मळे कणबि जो कोइ, जाचको तेने जाचे;
बिजो होय बळवत, रखे को तेने राचे.
न कहे कणबि नकार, शरममा ए शरमाशे;
जो कदि नहीं अपाय, तोय काया करमाशे.
बीजानी पेरे बळ करी, ना पोकारी नहि कहे;
शामळ कहे भूलो भारतो, धोरा के कणबी वहे.
जाचक जे जशवंत, सुजश कणबीना जोडे;
मागण जे महामूल्य, हाथ हळपतिने ओडे.
नर्त्तकी जे नवरंग, नेक कणबी प्रति नाचे;
ब्राह्मण चारण भाट, जरूर कणबीने जाचे.
तजि मेल्य वणिकने वेगळा, एथि अर्थ तो नहि सरे;
कर ओडी जइ कणबी कने, हळपति कोड पती करे.
वाघथी बळियो बळद, पृथ्विनो भार उपाडे;
वाघ हणेछे जीव, बळद तो जगत जिवाडे.
स्रष्टाये रचि सृष्टि, प्रथम तो कणबी कीधो;
धोरी सर्ज्यो धीर, बनेने सौ वर दीधो.
उपाडो भार अवनितणो, करो काम खड अन्न जमो;
छत्रपति आदि सउ छोरुरा, भाभा पइ भूतल भमो.

सोरठो.

"कणबी केडे क्रोड, कणबी कोइनी केडे नहिं;"
खरी एक छे खोड, उंहुनु ओपड नहि.

जुदी जुदी नातो विषे छपा.

वाळंदने उर वात, रहे नहि छानी छपनी;
वाळंदने उर वात, रहे नहि खोटी खपनी.
अढार वरणे एह, अतीशे जातज ओछो;
न गणे पुन्य के पाप, छके तेनी मति छोछो.
शीखामण दउछु सर्वने, देश वागशे डुंडियो;
जो वाळंद आगळ वारता, कही रुडी के भुंडियो.

भाटविषे छपो.

करे जमानी कोइ, दसोंदी कोइ कहावे;
कोइ वळावे वाट, कोइ किरती गुण गावे.
को पिंगळना पाठि, कोइ मोठाशी महोनी;
को पसायतां खाय, करे नहि सेवा कोनी.
सनमान मळे तो साहेबी, अपमाने दिलमां डरे;
कवि शामळभट कोडे कहे, भाट भली मोजो करे.

कोळीविषे छपो.

कोकिल तो दातार, स्वभावे कोकिल सगरो;
कोळि वनामण वाट, न होये कोकिल नगरो.
कोकिल कोकिलमांहि, कदी नहि थाये कूडो;
जइ चोरे परराज्य, राज्यमां तो रहे रुडो.
भेदे भूपति भंडारने, शरणागत सोडा सही;
शामळ जाति कोकिलतणी, दिठी वस्तु मेले नही.

सोनीविषे छपो.

वाहन कोळी चोर, लहे ते खातर पाडी;
चुगल लोक पण चोर, लहे ते करिने चाडी.
वणिक जात पण चोर, लहे मरडी दांडीने;
कृषिक जात पण चोर, लहे खेतर मांडीने.

एम कस्तब चोर कइ कोटिधा, ए तो अपरमपार छे;
पण दहाडे चोरे देखता, सत्य चोर सोनार छे.

चोपाइ.

सोनी केरो एज स्वभाव, न चोराय तो आवे ताव;
न चोराय उपजे चितभर्म, सोनी केरा कुळनो धर्म.
तस्कर तो बीजा छे घोर, कोळीथी ए चोगणो चोर;
सोनी साचो तेनु नाम, करे घणु तस्करनु काम.
न गणे ब्राह्मण न गणे भाट, न गणे मात भगनीनी खाट;
न गणे धर्म गणे नहि कर्म, नहि सोनीनी आखे शर्म.
सोनानु रूपु करि दिये, धीरे तेनु लूटी लिये;
प्रथम तो सौकोनु हरे, वळतो लूए के पुण्य करे.
पवित्र जात करे बहु पुण्य, लेता निमिष न राखे न्यून.

दोहरा.

निंदाथी नरतु घणु, शु कहु वारवार;
जगमा सोनी जाणवो, सउ तस्कर सरदार.
मीठु बोले मुखथकी, पेर पेर करि प्रीत;
विधविधनी वातो करी, हरे सर्वेनु वीत.

सपुत विषे छपो.

सपुत नाम सरदार, कोइ उपर नव कोपे;
सपुत नाम सरदार, पितानु वचन न लोपे.
सपुत नाम सरदार, बापनु कुळ उद्धारे;
सपुत नाम सरदार, होय समरथ पण हारे.
वळि सपुत नाम सरदार ते, कुटवनु पोषण करे;
शामळ कहे सपुत सल्क्षणा, मात पिता जेना ठरे.

कपूतविषे छपो.

कपूत कहिये तेह, बहू परियाने बोळे;
कपूत कहिये तेह, धर्म धारण नव तोळे.
कपूत कहिये तेह, रक जनने रजाडे;
कपूत कहिये तेह, भवन डाशा भजाडे.

एवा तो कपुत अनेक छे, अहंकार धर आपनो;
शामळ कहे सउथि कपूत जे, बोल उथापे बापनो.

चतुर विषे छपा.

चतुर लोकनुं छिद्र, जगतमां कोइ न जाणे;
चतुर न चिंता धरे, मोज आनंदे माणे.
चतुर लोकनो वणज, जणाय न लेवुं देवुं;
चतुर लोकनु पुण्य, गुपत कोइने नहि कहेवुं.
वाळे चतुर लोकना पारने, कोइ पडिते न पारख्यो;
मूरखना मुळ जाणो सऊ, ते शामळ शठ सारखो.
शकट थकी कर पंच, वेगळे वाटे थावुं;
अश्वथकी कर आठ, जाणने चाल्या जावुं.
गजथी गजशत पाच, आंचनो जन अधिकारी;
सिंह थकी कर सहस्त्र, अहीथी एज विचारी.
पण चोर थकी चोगाम तज, चुगल थकी तो गामसो;
करि देश त्याग दुरिजन थकी. शामळ कहे शाणा वसो.
जाय शत्रुने साथ, हृदेमां ते तो रुए;
जाय शत्रुने शरण, खरे खर जीवन खुए.
जो देखाडे ठाम, ठाम ठेकाणुं जाशे;
शत्रुनो विश्वास, करे ते धोखा खाशे.
अण जाण्याने ने गुण करे, दया धरे जे देहमां;
शामळ कहे ते दुःख पामशे, नर अजाण शुं नेहमां.

लोकने प्रीति उपजवानां कारणोना छपा.

हाकमै विनयै विवेकै, शाहैपण ने सत्यै जेमां;
विर्द्या वपुँ शुभ वार्त, प्रीयै पोशाक तेहेमां.
नादै नृत्यै कविगोने, टोनै ढहापणै गुणै अर्थ[१६];
करमै शरमै नरमाइ, न्यायि कुळै शूरे समर्थै.
जेपै तेपै जुगती जेरै जो मळे, लौकिक मलेै नैट रीतनां;
पेखैकै लेखैकै शामळ कहे, लक्षण चात्रिश प्रीतनां.

ममतविषे छपा.

ममते खरचे द्रव्य, ममतथी चोका माडे,
ममत कपावे शीश, ममतथी माया छाडे.
ममते हारे होड, ममत घरबार घटाडे,
ममत चडावे आळ, ममत तो मान मटाडे.
मोटा पुरूषो सउ मानजो, रूडी वातमा रेलजो;
शामळ कहे जीतो जगतमा, मिथ्या ममत्व मेल्जो.
ममते जाय विदेश, ममत तो राज्य मुकावे;
ममते मुके शरम, ममत चतुराइ चुकावे.
ममत कपावे कीर्ति, ममत अपजश ओपावे;
दु:खनो डुगर ममत, शेरना तरू रोपावे
ममते तो मोटम नहि रहे, ममत थकी मरवु पडे;
शामळ कहे ममत्व मूकजो, ममत नकी नरने नडे.

एकना कामथी बीजाने पीडा. छपो.

वढे रायने राय, प्रजा त्या तो पीडाय,
वढे महीप महीप, झाडनु छेदन थाय
वढे भातने भात, दु:ख पामे छोकरडा,
वढे धणीधणियाणि, पिडा पामे छोकरडा.
वळि विप्र विप्रमाही वढे, देवे लेवे दानने;
शामळ कहे साचु मानजो, महादु:ख जजमानने.

शूर वीरविषे छपा.

गाडा पण गुणवत, कदी मोटम नव माणे;
नहि टेक तरतीब, अहपद मन नव आणे
चाका चुका न थाय, बोल नव वाका बोले,
पोते थाय न मोढ, परो पडदो नव खोले.
पण वीर हाक वाजे ज्हा, त्या धीरज मनमा धरे;
पछि न्यम गोला चोखा उडे, वेरिउपर कर वावरे.

ईश्वर ज्ञानविषे दोहरा.

धर्म शास्त्र ध्याने धर्यु, गुणनो महिमा सार,
मारग सउना जूजवा, कहेता नावे पार.

को कहे मुक्ती ध्यानमा, को कहे जप तप व्रत;
को कहे दाने यज्ञमा, को कहे तारक तर्त.
को कहे पूजो प्रतिमा, को कहे नाओ नीर;
को कहे शोधो स्वातमा, को कहे शुद्ध शरीर.
वैष्णव जन विष्णु कहे, व्यापक सगळे जगत;
शिवमार्गी तो शिव कहे, शक्तिमार्गी शक्त.
वामवादि तो वाम कहे, कहे वैरागी राम;
पंडित परमेश्वर कहे, नौतम जूदा नाम.

पारकी आशाविषे.

कोइ रळे ने कोइ जमे, ताके परनो माल,
आश करे जे पारकी,-कर्म हिन कगाल.
मंद मति ते मानवी, करे मनुष्यनी हाश्य,
चटकि देखी दिन चारनी, वळति थाय निराश.

वावे तेवुं फळ.

वावळनु बी वावशो, मीते परडा खाय;
आगानो रहे ओरतो, ईश्वरनो ए न्याय.

चोपाइ.

वावे बीज ते उगे झाड, एमा शानो गणने पाड,
करे तेवु भोगवशे तेह, एह वातमा शो संदेह.

लक्ष्मी कोइनी नहि तेविषे दोहरा

लक्ष्मी कोइनी नथी, बोनु कोनु भृत्य,
स्नेह संबध गणे नहि, तजी जायछे तर्त.
रुडो भूडो नव गणे, न जुवे कोना कृत्य;
घर के रण दासे नहि, तजी जायछे तर्त.
वेळा कवेळा नव जूवे, स्नेह शु नाणे सर्त;
नानु मोटुं नव जुवे, तजी जायछे तर्त.
रूप कुरुपने नव गणे, विवेक विद्या वर्त;
उच नीचने नव गणे, तजी जायछे तर्त.
लक्ष्मी भुंडी लक्ष वत्ता, माये भुंडु मर्त्य;
सेले सवरावे सातथी, तजी जायछे तर्त.

विद्या सिंधु सुखतणो, विद्या सदगुण वर्ग;
लक्ष्मीने लूंडी गणे, सहेजे पामे स्वर्ग.
वखाण शुंणीने वित्तनां, चंचळ स्त्री चळ थाय;
ज्यम वादळनी छांयडी, पळ पळमां पलटाय.
कनक विषे कळियुग वसे, वळी कनकमां काम;
कूड कपट कनके वसे, ठेठ नरकनो ठाम.
अलखतवंत घेला घणा, अलखत त्यां अहंकार;
सुख छे सरशव जेटलुं, दुःख अर्णव अपार.

शिखामण चोपाइ.

अधिक हेतथी कहुंछुं अमो, ते रीते आचरजो तमो;
परधन परनिंदा परनार, परहर कहुंछुं वारंवार.
परधन देखी थाशुं अंध, परनिंदा नव धारो धंध;
निच वात थकी नासजो, गुणीजन देखी त्यां धासजो.
जुल्म न करशो कोशुं जूठ, रंक साथे रखे रहो रूठ;
महा ममतीना मन मोडजो, कंगाळपणुं आळस छोडजो.
करजो एक ईश्वरनी आश, पुरण जाणो ईश प्रकाश;
नव करशो मद्यपनो संग, आप मलिन नव राखो अंग.
भजतां भणतां रळतां धन, रखे तृप्त करो त्यां मन;
पापे धन नव पेदा करो, अघ देखो त्यांथी ओसरो.
नव गणशो माया आपणी, तरण तणी ए छे तापणी;
स्वप्नावत जाणो संसार, माथे ताणो नव ल्यो भार.
स्नेह तजो परदारा साथ, हेडु मन राखो निज हाथ;
साची वाते थाजो शूर, निच कामे नव थाशो नूर.
मननी लहेर जाती वाळजो, जनक जननीनुं पाळजो;
कुडां कर्म रखे कांइ करो, पंडे पाप बुद्धि परहरो.
करजो परमारथ नित्य काज, तो राजी रहे श्री महाराज;
अमृत फळ वावो सौ खाय, वळी वाटमां छाया थाय.
बीजुं पूण्य न वाणे नीर, सुख पामे सहु जन शरीर;
नवाण खोदावे रोपे झाड, परमेश्वर माने छे पाड.

भली वात मुखथी भाखजो, शरणागत शरणे राखजो;
अहकार नव करशो लेश, दु:ख भजन कहेवाजो देश.
रैयतना कहेवाजो राम, करजो निश्च परमारथ काम;
मात तातनी सेवा करो, अहकार मनमा नव धरो.
किकर शु नव करशो क्रोध, रूडी वात नव करशो रोध;
जीवहिंसाथी बीहीजो घणु, रक्षण करजो प्राणी तणु.
परदु:ख देखी थाजो दुखी, सुखी रइयत पेखी रहो सुखी;
अनावृष्टीमा आपो अन्न, निर्मळ रूडु राखो मन.
कोइ दिवस नव रमशो द्यूत, धर्म वाते नव थाशो धूर्त;
अमल वश नव थाशो आप, सती तणो नव लेशो श्राप.
आप्यु पाछु लेशो नहीं, ना नव कहेशो मुखथी कही;
करिये ते भोगववु पडे, आविने सहु अगे अडे.
छानु छपनु करिये पाप, परमेश्वर जाणे ते आप;
आपे ते तो पामे बहु, सुख दुख एवी रीते सहु.
जेवु अन्न खाये ते हणे, शामळ भट तो साचु भणे.



पद्मावतीनी वार्त्ता.



आख्यान कहु पद्मावती, सती शिरोमणी जेह;
पुष्पसेन साथे वरी, वर्णन हु कहु तेह.
नगर एक चपावती, चपकसेन राजन;
पटराणी पुष्पावती, पुष्पसेन एक तन
बत्रिश लक्षण आगळो, चउद विद्या गुण जाण,
राग छत्रिशे आळपे, वदन शशी परमाण.
सोळ वरसनो सुत थयो, धनुर्विद्यानो धीर;
हये बेशीने सचर्यो, जाणे बावन वीर.
प्रीत घणी परधानशु, क्षण अळगो नव थाय;
बेजण रमवा एकठा, मृगया कारण जाय
वसत ऋतु फुली रही, सुदर सरोवर नीर;
मृगयाथी पाछा वळ्या, आव्या तेने तीर.
सुदर तट रळीआमणु, उभा तेने छाय;
माननी एक मदे भरी, जळ भरवाने जाय.

(એ કન્યાનુ નામ સુલોચના હતુ તેને ગજકુવર વેરે પરણવાની ઇચ્છા થઇ)

कुभ भरी शिरपर धर्यो, कटाक्ष करती जाय;
चातुरी घणी चाळवी, तोय न चेत्यो राय.
रीस करी रामा वदे, साभळ राजकुमार;
कोण कारण अह्यु कामठु, शीद वेंढारे भार.
राय सुणी अचरत थयो, सामी सामु जोय;
शु कहेछे ए कामनी, कही नव शके कोय.
कहे रामा तु कोण छे, कोण तमारी जात;
शा कारण पछ्यु पुछवु, ते कहो मुजने वात.
नारी वेणज ओचरी, साभळ साचु धीर;
कशी भरीनें नाख तु, मारा कुभपर तीर.

कुभे तीरज वागशे, चाल्शे जळनी धार,
होड आपणे एटली, आपु एकावळ हार.
(પણ આવતા તીરને ઝ લી લઉ ને તમારી પૈની ફાગ ચૂકાવુ
તો તમારે મારે ઘેર આવી મારી વેરે લગ્ન કરવુ)
महिपति रिझ्यो मनविशे, ए तो रुडी वात;
हु निशान भुलु नहि, वेडु ते कोण मात्र.
ताणि तरिज नाखियो, राजाये दइ दोट;
आवतो झाल्यो झडपशु, चुकव्यो पहेली चोट.
सखियो साथे हशी पडा, चडी रायने रीस,
को काळे भुलु नही, जाणे छेदु शीश.
प्रधाने वारि राखियो, रीस न कीजे राओ,
मुखनि वेणज जो ओचर्या, एने मंदिर जाओ
पछि राय हशि बोलियो, कहो आव्यानी वात,
मंदिरनु दे पारखु, आवु पडती रात
निसे पावक परजळे, मृत सजीवन थाय,
तेथि मोहोल उचेरडो, ए एधाणि राय.
अग्नियकी लोढु गळे, जीवती धमणो सार,
मंदिर कहु ते माननी, लक्ष वसा लोहार.
जेने दिठे जग मोहे, तेनु छेदे शीश,
तेने घेर थइ आवजो, रवि आथमते दीश.
निर्मळ वाडी वनस्पति, निर्मळ नीरशु नेह;
पुष्पो विणे प्रीत शु, माळी मंदिर तेह
जेह समारे तुजने, तेने समारे जेह,
तेनी महोल उचरेडा, सहि एधाणी एह
शोभा दे सउ लोकने, तेने उज्वळ काम;
शामा समजाव्यु तमे, धोबी एनु नाम.
जेने खाधे विष चडे, तेने जे कोइ खाय;
ते मेलु मुज बारणे, ए एधाणी राय.
उत्तर मोर.

कुरंग हेम सरिखडो, पुछ पीवंतो नीर;
ते मेलु मुज बारणे, आवजो आणी धीर.
दिवसे मारे कामनी, कुलमां करे उद्योत;
घेर घेर अजवाळुं करे, जुवती दीपक ज्योत.
मुखे मधुरुं बोलतो, चातुर नर वश होय;
तेनो शब्द सुणी आवजो, जेम न जाणे कोय.
भोगी माणे भूपति, तेने वाल्हो तंत्र;
बोले बेशी जोतथी, जुवती ते तो जंत्र.
रांक अढारे वर्णमां, जेवडे तारुं राज;
धीरज राखी आवजो, जात अमारी आज.
डाह्यो अकले आगळो, सर्व कळानो सूत्र;
नारि में ते ओळख्यो, वणीक केरो पुत्र.
अमुल्क बेजे तमकने, जलमां नीपजे नेह;
ए बे कीजे एकडां, तात अमारो तेह.
अमुल्क बे ते नेण छे, जळमां कमळ सुधाम;
नारि तें मुजने कह्युं, नेन कमळशा नाम.

चोपाइ.

एवुं कहीने नारि जाय, मनमां हरख्यो पोते राय;
आप आपणे मंदिर गयां, सांज समे बे तत्पर थयां.
कह्यां एधाण धरीने गर्व, राजाने मन वशियां सर्व;
प्रीत थकी राजा परवर्या, स्त्री महोल सामो संचर्या.
उठि अबळाएं कर्या प्रणाम, भले पधार्या रुडे काम;
पांच पदारथ पाम्यां अमो, मिते करी पधार्या तमो.
राजा बेठो पासे जइ, स्त्री कर जोडी उभी रही;
भामनीये निरख्यो तें भूप, राज बीज रंडियाळुं रूप.
राजाये राणि निरखियां, बेउजणा हैडे हरखियां.

दोहरा.

सुलोचना एम ओचरे, सांभळ राय सुधीर;
जो वरुं तो तुजने वरुं, नहितो पाडुं शरीर.

(બાઇની મરજી એવી હતી કે તેજ વખતે ગાંધર્વવિવાહ કરવો, પણ રાજકુમારને એમ છાનું પરણવું ઠીક લાગ્યું નહિ તેથી તેણે ના કહી)

विनता वळती ओचरी, ए शुं बोल्या राय;
ना केहेतां मरशुं अमो, ते तमने हत्याय.
राय कहे सुण सुंदरि, एमां अमने खोड;
काल सवारे परणशुं, आपण जुवती जोड.
हैडे धीरज राख तुं, जइ संभळावुं तात;
नगर लोक सउ देखतां, झालु जमणो हाथ.
मडप रचावुं मोकळो, परणुं रुडी पेर;
पटराणी करु प्रेमशु, राखुं मारे घेर.

(રાજકુમારના એ વચનથી સુલોચના સંતોષ પામી પોતાની માની પાસે ગઇ અને કુંવર અહીં શેઠને ઘેર રાત્રે સૂઇ રહ્યો, એવામાં બીજું કૌતુક થયું.)

चोपाइ.

तेणे समे वळतुं शुं थाय, सजी सभाने बेठो राय;
चंपकसेन नाम जे तणुं, ढळे छत्रशिर शोभित घणुं.
निशा अंधारि दीपक बळे, राज कुळ छत्रिशी मळे;
राग रागणी छत्रिश थाय, बहु मळ्या राणा ने राय.
विविध प्रकारे थाये गान, ए रिते बेठा राजान;
पहोर रात एम करतां गइ, नगरमांही त्यां बुमज थइ.
धसमसीने त्यां आव्या लोक, सउकोने मन प्रगटयो शोक;
राय सभामां आवी रह्या, कारण राजा आगळ कह्यां.
राय बचानो नथी रे लाग, नगर विषे आव्या बे वाघ;
राजाजी सांभळजो वात, माणस त्रणनी कीधी घात.
सुणतां राय थयो असवार, सैन्या छे त्यां महा झुझार;
नगरथकी बहार नीसर्या, घेरी वाघ बे आगळ कर्या.
राजा सौथी आगळ रहे, क्रोध करीने बाणि कहे.

दोहरा.

नगरपडो वजडावियो, वरतावी छे आण;
जे नहि आवे रणविषे, तेना लेउं प्राण.

रहे रायना देशमा, अन्न रायनु खाय;
वहेलो आवी आ घडी, रणमा साथे थाय.
पाचथकी पचासनो, पाळो के अस्वार;
जे नहि आवे रण विषे, तेने मारु ठार.
वृद्ध प्रधान वाणि वदे, एम न बोलो बोल;
कोइक एवो रही जशे, उतरशे तुज तोल.
नहि गुदरू परधानने, नहि बेटो के बाप;
पक्ष करु जो कोइनो, ब्रह्महत्यादिक पाप.

चोपाइ.

चपकसेने कोल्ज कर्यो, शिकार करवाने सचर्यो;
अन्यो अन्य सेना संचरे, घेरी वाघने आगळ करे.
एम करता वीती मध्यरात, वाघ बेयनी कीधी घात;
राजा मनमा हरख्यो बहु, वजीरसाथे हरख्या सहु.
रणमा सभा करीने राय, सउकोने त्या करे पसाय;
हु तेने आपु शिरपाव, जेणे वाघ पर कीधा घाव.

दोहरा.

कर्यु निरीक्षण नरपति, जोया सघळा रूप;
दृष्टे आवी नव चढयो, पुष्पसेनसुत भूप.
क्रोधपूर्ण राजा थयो, भमर चढावी शीश,
जइ सुतने हाथे हणु, रवि उगते दीश.
हत्या न गणु बाळनी, वचन अमारु जाय;
रावत सउ झाखा थया, कर्यो महा अन्याय.

चोपाइ.

राते सर्वे रणमा रह्यु, उग्यो सूर्य ने वहाणु थयु;
प्रातःकाळ थयो जेटले, पुष्पसेन जाग्यो तेटले.
रवि उगमते ते उठियो, पाग समारि बेठो थयो;
प्रमदा आवी पाल्व ग्रह्या, राजाने एम वचनज कह्यां.
तमो विना मे रह्यु न जाय, घडी एक वरसनी थाय;
तम दीठे मुज भागे भूख, अण दीठे उपजे महादुख.

राय कहे धीर रासो तमो, वचन माह जे वरशु अमो;
वचन देइने महिपति गयो, महोल पोताने दाखल थयो.
आवतो माये निरख्यो तन, उलट वधी माताने मन;
कहो कुवर क्याथी आविया, समाचार शा शा लाविया.
कोणे वाघ हण्या कइपेर, राजकुवर पधार्या घेर,
जीती जश ते कोणे लीध, केटलाने सरपावज दीध.
मा शु वाघ शु कहोछो तमो, वात कशि मीठु नहि अमो;
राते ते शी थइछे वात, क्याहा गयाछे मारो तात.

दोहरा.

राते वाघ बे आविया, सेन गयु रणमाय;
नगरपडो वजडाविषो, तु वयम न गयो साय.
वचन शुणीने मातनु, चाल्यो राजकुमार;
अश्वे बेशि एकलो, गयो नगरथी बहार
कटक सर्व पाछु वळ्यु, जाणे सागरपूर,
कुवर मळियो वाटमा, त्या उगमते सूर.
पिता समीपे आवियो, पाळो थइ ते वार;
कर जोडीने कुवरे, किधो जइ जुहार.

चोपाइ.

रायनी करडी दीठी दृष्ट, कुवर मनमा पाम्यो कष्ट,
कुवर मनमा झांखो थयो, सौनी पाछळ पाछळ रह्यो.
राजा आव्यो रणमा जइ, सेना सौ सौने घेर गइ;
चपक बेठो आसन चडी, तेड्यो कुवरने ते घडी.
नानु मोटु नगरनु सहु, मळी खल्क जोवाने बहु;
साचु कहो रह्या क्या रात, वळती आव्या वयम प्रभात.
वळतो कुवरे वचनज कह्यु, जेम सरजु हतु तेमज थयु;
राजाजी जे कहो ते करू, द्यो आज्ञा ते मस्तक धरू.
शाने पूछो राखणहार, हु अन्याइ उभो आ ठार,
बोल्यो राय चडावी रीश, जाओ कुवरनु छेदो शीश.

एनी जे को करशे वार, मारु तेने साथे ठार;
चपक वाणी एम बोलियो, हाहाकार नगरमा थयो.
एह वचन करि मानो सत्य, वार न लागे कहे भूपत्य;
नगरलोक सौ मनमा ल्हे, कोण एवो जइ रायने कहे.
बेठी हती राणीजी जहा, ते वात वळती गइ तहा;
मारा सुतने मारे आज, तेना चक्षु करावु त्याज.
जो कोइ ल्हे कुवरनु नाम, तेनो फेडु निश्चे ठाम;
चढावी दृष्टि छुटे केश, भर जोबनमा बाळे वेश.
राणिये मन आणी गर्व, सोढाडो साहेली सर्व;
लागी वारज करता वात, साहेलियो मळी सेसात.
सउको खडग उघाडा करी, राजसभामाहे सचरी;
जइ नरपतिने कर्या प्रणाम, मागुउ हु एक इनाम.
राय कहे मागोछो तमो, ते हाथथि नहि आपु अमो;
तारा मनथी माग्यो सुत, तु उगारवा आवी पुत.

दोहरा.

राणि मन विमासियु, जातेनु कशु जतन;
जीव्याथी मरवु भलु, जो सुत जाय रतन.
क्रोध करिने कामनी, धरी रायशु रोश;
शोक कारे बेठी सभा, कोइ न देशो दोश.
राजाने कह्यु राणिये, कोढे गळशे जात;
हमणा तुजने लागशे, स्त्रीहत्या सेसात.
ब्रह्महत्या तुम्या तणो, कोइक काळे पार;
स्त्रिहत्या जेणे करी, नहि नरकमा ठार.

चोपाइ.

वचन सुणी माताजी तणु, कुवर मन दु ख पाम्यो घणु;
सुत माने लइ लाग्यो पाय, फोकट बोलो का अन्याय.
मारा तातनु वचनज जाय, शो कामे आवे आ काय;
जायु ते जावानु सर्व, गदी देह तणो शो गर्व.

---

१ शरीरनु

मुज पिताथी उगारशो, जमकिंकरने क्यां वारशो;
एक वचन माटे बळि छळ्यो, पुरणवचन पोताने पळ्यो.
हरिश्चंद्र अंत्यज घेर रह्यो, विभीषण लंकापति थयो;
वचने पांडव वनमां गया, वचने कौरवना क्षय थया.
अहंकारी अभिमानी होय, चिरंजीवी जगमां नहि कोय;
जाओ बेसो तमो स्व्हें घेर, प्रीछवी माने मोकली घेर.
कह्युं तातने मूको माम, तमे तमारुं करोने काम.

दोहरा.

राये मन विमासियुं, मोटी हत्या बाळ;
कुंवरने हाथे हणी, आणुं मारो काळ.
कोल पळे सुत उगरे, स्त्रीहत्या नव थाय;
कह्युं प्रधानने ते करो, पुछो पंडित राय.
तेडया पंडित प्रीतशुं, प्रधान पुछे जोष;
कहो केम सौ उगरे, दिसे न कोइने दोष.
प्रीत करी पंडित कहे, सुणो राय ए सूत्र;
बोल तमारो पाळवा, वनमां कहाडो पुत्र.
अम शिर दोष न दिजिये, सुणो राय सुजाण;
जेवी शास्त्रोमां घटे, एवी बोलुं वाण.

चोपाइ.

क्रोधे बोल्यो चंपकराय, कुंवरने काढो वनमांय;
पछी पंडितनी भागी भूख, टाळशुं जन्म बधानुं दुख.
पुष्पसेने सज्यो केकाण, अंगे धर्या धनुष ने बाण;
मागी शिख चाल्यो जेटले, प्रधानपुत्र मळ्यो एटले.
परस्परे रोया बेजणा, रोतां कांइ न राखि मणा;
पुछे विचार ब्राह्मणजन, वळती मुजने काढे वन.
वळती मित्र गयो ते ठांय, राजसभा बेठी छे ज्यांय;
मान दइ महिपतिने मळ्यो, एक अरज मारी सांभळो.

---

१ घोडो.

दोहरा.

वजीरसुत वाणी वदे, सुणो रायजी सूत्र;
एक वचनने कारणे, वनमा काढो पुत्र.
एणे वचन तम पाळियु, उत्तम कीधो न्याय;
वचन जाय तम पुत्रनु, ए मोटो अन्याय.

चोपाइ.

सुतने तेडीने पुछियु, सत्य कहो काले केम थयु;
क्याहा रह्याता केने काज, साचु बोल तजीने लाज.
जे तारा मनमाहि होय, मारिआगळ भाखो सोय;
सुत कहे साभळो महाराज, वनमा जाता हर्ख्यो आज.
मुजने वहालो नथी मुज देह, सत्य करी मानोजी तेह;
काले मुजने कौतुक थयु, बीक थकी कोइने नव कह्यु.
आज तमे तजियोछे क्रोध, तो साचो बोलु प्रतिबोध.

दोहरा.

नेनकमळ वहेवारियो, नगर तमारामाय,
बत्रिश लक्षण आगळी, तेने छे कन्याय.
करम सजोगे ते मळी, नाख्यो तेणे पाश;
वचन दिधु वरवातणु, भागि तेनी आश.
आशा भगी जे करे, कोल बेकोली थाय;
महा नरकमा मानवी, जरुर ते तो जाय.
चपक चितमा चितवे, सर्व सुणी वृत्तात;
तरत शेठ तेडावियो, अधिपतिए एकात.
महाजन आव्या मलपता, ज्या बेठा छे राय;
भूपे मान दिधु गणु, आवि नमिया पाय.
राय कहे शुण शेठजी, मागुछु हु मान्य;
नेन कमळनी दीकरी, आपो अमने दान.
वळता माझन बोलिया, साभळरे भूपाळ;
कन्या अमो क्यम दिजिये, बेसे शिरपर गाळ.
तमो क्षत्रि अमो वाणिया, तमो राय अमो राक;
वरकन्या परणे नहि, वैश्यो काटे वाक.

चोपाइ.

नरपति कहे नहि मारो वाक, ए कन्याये वाळ्यो आक;
मुज कुवरने तेडी गइ, किधो कोल अमारी यइ.
तेने जइ पुछो निरधार, जेम घटे ते करो विचार;
शेठ शुणि आव्या घरमाय, पुत्रीने जइ पुछ्यु त्याय.
सत्य वचन तु कहेजे आज, तेम कहे ते करीये काज,
पुत्रि कहे वर एज प्रमाण, नहितो मारा छाडु प्राण.
शेठे वात धारी ते ध्यान, देउ कुवरने कन्यादान,
नव आपु तो पुत्रि मरे, वळि राजा मन वेरज धरे
कहोछो तो राजा लिजिये, कन्या दान अमो दीजिये.

दोहरा

मारी पुत्री लाडकी, तम सुत चावन वीर,
जुगतु जोडु परणशे, जम साकरने खीर

चोपाइ

राजा कहे न लगाडो वार, सामग्री करजो तइयार,
शाने वार करो एवडी, जाओ परणावी द्यो आ घडी.
मदिर आव्यो वेपारियो, समाचार जइ स्त्रीने कह्यो,
कुवरि तो इच्छावर वरे, ना कहिये तो निश्चे मरे.
शेठाणिये ते शुणि लह्यु, जइ कुवरिनी आगळ कह्यु.

दोहरा.

राजकुवर तने परणशे, हवणा जाशे रान,
लख्यु हशे तो आवशे, तु शुण तारे कान.
कर्मे मारे जे लख्यु, ते थाशे मुज हाल,
रुडो भुडो में वर्यो, आ ठेकाणे काल.
तु जाणे नर रायने, बेठी चातु पान,
एतो रहेशे ओरियो, समझे आणि सान.
काल सवारे काढशे, रझळी भरशे पेट,
तात कहे छे ताहरो, नहि सुख पामे नेट.

कन्या माताने कहे, कर जोडीने वात,
मानु नहि हु मावडी, घेरो यथो मुन तात
तात शु बेठो दीन थइ, करो गणेश आचार,
लगन चोघडियु जायछे, हवे न करवी वार
आव्यो राजा परणवा, वाग्या वडा निशान,
पाट बेसारि पद्मनी, जाणे उग्यो भान
हाथ मेळाव्यो हाथशु, आरोपी वरमाळ,
मूर्त्त एकमा उठिया, परणि ते तत्काळ
आशिरवाद विप्रो वदे, वेद वदीने वाण,
चिरजीवी रहे बे जणा, बोले लोक प्रमाण
परणी उठ्या पाटथी, उतारी वरमाळ,
मींढळ छेडा छूटशे, लख्यु हशे ते काळ
शिर मागी नारिकने, हु परदेश पळीश,
हुकम लइने हजुरनो, जाता तने मळीश

चोपाइ

पुष्पसेन परणी परवर्यो, नमस्कार जइ माने कर्यो,
माताजी अमो वन चालशु लख्यु हशे त्यारे आवशु
मारा समजो दुःख दिल धरो, नयने आसु शाने भरो,
ज्या जाउ त्या सुखन होय, मुजने मारी शके न कोय.
प्रसन्न थइने शिर दिजिये, प्रणाम एकवरा लीजिये,
चाले केहता जीवन जाय, पण शु करिये कोप्यो राय

दोहरा

वचन मातनु शिर धर्युं, त्याथी चाल्यो जाय,
सामो जइ उभो रह्यो, ज्याछे राज सभाय.
शिश नमाव्यु तातने, सभाने कर्यो जुहार,
राजा बेठो त्या जइ, चरणे नम्यो कुमार
राजा मुखथी बोलियो, जो सुत मारो होय,
वनमा जाने एकलो, साथे न लइश कोय
हु ने अश्व असारडो, न करू कोइनी आश,
जो कोइ साथे संचरू, सुकृत थाजो नाश

सेवक साथे सचरे, ते कायरनु काम;
जाउ वनमा एकलो, "पुष्पसेन" मुज नाम.
एम कहि पाछो वळ्यो, न होय मन उचाट,
प्रधानपुत्रे निरखियो, उपज्यो मन गेंगाट.
प्रधानसुत पाछो वळ्यो, हैडु फाटि जाय,
साथे आवु केम करि, वारि राखे राय
वळती निज नारि कने, आव्यो राजकुमार,
नारे निरख्यो कथने, कीधु रुदन अपार.
नारि प्रत्ये नेहना, कह्या वचन बे चार,
जो जीवशु तो आवशु, नहितो कोटी जुहार.

चोपाइ.

स्त्री कहे अक्षयकी उतरो, मारे हाथे भोजन करो;
मुजने साथे तेडो आज, सफळ थाय तो मारा काज.
प्रीते पाननी बीडि करु, मारे हाथे मुखमा धरु.

दोहरा.

भोजननु मने शु कहो, हु नर पीउ वार,
वचन न पाळु तातनु, धिक मारो अवतार
जो अक्षेयी उतरु, लाजे जननी आज,
हार हार करी गिल वो, कीजे रुडा काज

चोपाइ.

माया मोहने ममता तजो, एक मने इश्वरने भजो;
बुद्धिसागर छे मारो मित्र, घणो चतुर ने घणो पवित्र.
रहेशे घणु तमारी पास, एथि काय न थाय विनाश.

दोहरा.

राजाने नारि कहे, कोल अमारो एह;
बार वर्षे न आविया, तो पाडु मुज देह.
बार वरसपर एक दिन, जो वितिने जाय;
जीव धरु जो देहमा, नहि मुज एक पिताय.

कथ पाखे जे कामनी, भारे नहि सुख भोग;
एटलु तम पाखे तज्ञु, सुखनो नहि सजोग.
चालु कहेतां चमकशु, पुठ दिठे जीव जाय;
नेणा पडशे नीकळी, काळजु कटका थाय.
आभ पडे धरति गळे, एवडु मारू दुःख;
ज्यारे तमने देखशु, त्यारे थाशे सुख.
नरथी नारि एकली, पगले पगले वक;
दिशे दिन दिन दावणि, कामनी शिर कलक.
पुज्य अमारे एकतम, अवर न बिजो कोय;
अवर बिजो जो करू, कुळमा खापण होय.
राये नारिने कही, चलावियो तोखार;
ए अवसरे प्रधानसुत, आव्यो एणे ठार.
कर्यो प्रणाम प्रधानने, वळो हवे कहु वीर;
जीव आपणो एक छे, दीसे दोय शरीर.

चोपाइ.

प्रधानसुत ते पाछो वळयो. पोते राजा पथे पळ्यो;
वेगे पाणी पथ पळाय, मनमां नीक न आणे राय.
अनेक दिन एम रहते थया, भमतां भमतां वनमां गया;
राजा चाल्यो वनमा वळी, महावनमा एक जक्षणी मळी.
मोटा हाथ ने भूरा वाळ, आवीने बीवराव्यो वाळ;
कोण छे ने केम आव्यो अहीं, मुज आगळथी जाइश कहीं.
घोडा साथे तुजने गळु, घणे दिने मुजने भक्ष मळ्युं;
त्यारे नायक वाळक भणे, हु शरणे आव्यो तुजकने.
तमो कहो ते कामज करूं, द्यो आज्ञा ते मस्तक धरू;
जक्षणीने मन आवी दया, प्रीत वचन राजाने कह्या.

दोहरा.

वळती जक्षिणी वदे, सांभळ राजकुमार;
भीड पडे सभारजे, हु आवीश ते ठार.

१ मूतडी अप्सरा भीळडी हशे.

सिद्ध वचन ते शिर धर्युं, वेगे खेड्यो गाजे;
घणे दिने जइ नीसर्यो, कुती भोज ज्या राज.
नगर समीपे जइ रह्यो, मळ्यो विप्र एक त्याय;
पुछयुं तेने प्रेमशु, कोण नगर कोण राय.
विप्रज वाणी बोलियो, तु शे न जाणे मन;
धार नगर रळियामणु, कुती भोज राजन.
वदन नमाव्यु विप्रने, पछि खेड्यो केकाण;
नगर अनुपम निरखियु, जाणे उग्यो भाण.
गढ दिसे रळियामणो, देखि रिझयो राय;
सुवर्ण कुभे सुदरी, जळ भरवाने जाय.
वडी जुक्ति वाडितणी, पुप्पो झाड विशेक;
वर्णन पुरनु शु करु, केता नावे छेक.
राजसभामा सचर्यो, उत्तम शोभा होय;
नृत्य करे वारागना, ते देखी मन मोहोय.
पडित बेठा पाचसें, राजकुळी छत्रीश;
जोशि जुगते ओचरे, लक्षणधर बत्रीश.
जमणी पासे जुगतशु, प्रधान जे धनराज;
डाबी पासे बेटडो, कान कुवर महाराज.
कळावत कळा करे, गुणिजन त्यां गुण गाय;
चमर ढळे चोपासथी, कनक सिहासन राय.
राजसभा मनमा वशी, हैडे हरख्यो राय;
मया जइए आ तजी, उत्तम आज सभाय.
पडित सौने प्रणमियो, रायने कर्यो जुहार;
भूपति मन आनदियो, देखि राजकुमार.
राजसभामा जइ रह्या, सउना रीझ्या मन;
मान दइ बोलावियो, मन हरख्यो राजन.
कोणतणा तम बेटडा, कोण तमारो देश;
किया मुलकथी आविया, पुछे वात नरेश.

---

१ घोडो

पृथ्वी देश अमारडो, तात तो सरजन हार;
उमेदवार ओळगतणो, ज्यां धार्युं कर्तार.
राजसभा राजि थइ, बंधाव्यो तोखार;
खाओ पियो आनंद करो, एम बोल्या दरबार.
अही रहो ओळग करो, सहस्र टका ल्यो रोक;
कुंवर साथ नित्ये रमो, न होय मनने शोक.
नित्य वाडिये संचरे, चोरे चौटे जाय;
जाणितो थयो नगरमां, आव्या अमुलख राय.
वार्त्ता सघळे बिस्तरी, सुंदर चतुर सुजाण;
ज्यां बेठी पद्मावती, दासी करे वखाण.
कुंवरि कुंती भोजनी, पद्मावती अभिधान;
शशिवदनी मृगलोचनी, हीरा दंतसमान.
साहेली सोळ वर्षनी, सुलेखा तेनुं नाम;
ज्यां बेठां पद्मावती, ते आवी ते ठाम.

चोपाइ.

हसति रमती ने बोलती, आवी निकट दासि डोलती
वात सुणो बाइ अमतणी, अमने आपो वधामणी.
तम सरखो दिठो एक भूप, तमथी अदकुं तेनुं रूप;
कोइ नगरनो छे राजियो, महा संकटे अहीं आवियो.
रूप सुरूप छे लक्षण सार, कारण रूपतणो अवतार;
हेत करि राख्यो छे राय, तेनी शोभा कही नव जाय.
अश्व अनोपम उपर चड्यो, काळ अमारे दृष्टे पड्यो;
चित्र लखेलि हुं तो थइ, सुध बुध मारि सर्वे गइ.
वर्ष सोळ बाइ मुजने थयां, एवां रूप में नव निरखियां;
सहि मानजो मारु कह्युं, रूप अलोकिक में तो र

दोहरा.

पद्मावती कहे प्रेमशुं, सांभळ सहियर एह;
वखाण तुं करे जेहनुं, मुजने दाखव तेह.
बाइ बेसो माळिये, निरखावुं हुं चाल;
करवा स्नान सरोवरे, जाशे प्रातःकाळ.

नारि बेठी निरखवा, चोगम देखे वाट;
चार घडिमा आवियो, भाग्या भव उचाट.
दुरथी दिठो आवतो, भागी मननी भ्रात;
अश्व डोटाव्यो पाटिये, निरखियो एकात.

चोपाइ.

नृपे नाइ वस्त्रो पेरिया, दडवतो सुरजने कर्या,
सवागजी शिर उपर केश, छुटा मेल्या बाळे वेश.
घोडा उपर थयो अस्वार, छुटी चाळे राजकुमार;
वाका मेल्या छोगा बहु, ते दीठे हरखे छे सहु.

दोहरा

कपूर सरखो उजळो, कुडळ झळके कान;
रुपे काम सरिखडो, दाता कर्ण समान
जो परणु तो एहने, नहिकर वेसे पाप,
अवर पुरुष पृथ्वीविषे, सर्व भाइ ने बाप.

चोपाइ.

आपु तने सोळ शणगार, वळि एक मोतिनो हार;
उपाय करवो हडि पेर, जेम तेम तेडि लावो घेर.
रुप रग एनु निरखिये, जात नात एनी पुछिये,
जोइये चतुराइनो रग, पछि परणु हु तेने सग.

दोहरा.

विंडु झडप्यु माननी, उल्ट अग न माय,
जो नव लावु रायने, नावु मोले माय.

चोपाइ.

दासि चाली वेगशु, आवी ज्या राजान;
सम देइ समजावियो, चाल्यो चतुर सुजान.
आगळ दासि सचरि, पाछळ चाल्यो छेल;
धशमसतो मोले चढ्यो, थइ रही रग रेल.
पद्मावती प्रेमे करि, दिधु घणुएक मान;
सफळ जन्म अमारडो, घेर आव्या राजान.

खाटे बेसो खांत शु, ल्यो चावो आ पान;
अमउपर करूणा करि, त्रुठया श्री भगवान.
आशा पूरो अमतणी, अम घेर आव्या इश;
राज पधार्या रीझमा, सफळ थयो आ दीस.
राजा रीझी बेशियो, सन्मुख उभी नारि;
कोण धरती कोण देशडो, पुछे राजकुमारि.
कोण रायना बेटडा, केम नीकळ्या पर देश;
हु पुछुं प्रेमशु, दिसो बाळे वेश.

चोपाइ.

शे कामे पुछोछो गाम, शे कामे पुछोछो नाम;
जेह करे विवानी वात, ते पुछे पितानी जात.
ज्यहा वसु सा मारु गाम, रजक लइ आव्यु आ ठाम;
तारा तातनी ओळग करू, मृगया रमवा साथे फरू.
लख्या प्रमाणे रहिशु अमो, ते सत्य करिने मानो तमो.

दोहरा. समस्या.

नारि बोली नेहशु, तमोछो चतुर सुजाण;
पाच "प" वहाला पुरूषने, तेना करो बखाण.

उत्तर.

पान पाघ ने पद्मणी, परिमळ ने पोशाग;
पाचे वहाला पुरूषने, वळि पुठ सद्भाग.
धन धन तारि सूजने, धन धन राजकुमार;
पांच क वहाला कामनी, एह हवे उच्चार.

उत्तर.

काजळ कंकु कंचवो, वळि कसुंबो कंत;
पांच क वाला पद्मणी, सुणजे नार सुचत.

प्रश्न.

जुगतु बोल्या जाणिता, लागी मनशु राड्य;
पाच कका नथी तुजकने, ते तु कही देखाड्य.

उत्तर.

कुड कपट कुलक्षणो, कुडि जान कुनारि;
ए पाचे नथी मुजकने, साभळ राजकुमारि.

प्रश्न.

कहो छो छैये एकला, तम साथे छे सात;
प्रगट देखु नु तमकने, ते कहो साची वात.

उत्तर

तीर तरकस तरवारने, भालो ने तोखार;
ढाल अने वळी चाबको, सात साथी छे सार.

प्रश्न.

पखी उडे जीवविना, बेसे जेनी डाळ;
मृत्यु पमाडे देखता, कहो मुजने भूपाळ.

उत्तर.

कुवर कहे सुण कामनी, सी हु समझ्यो एह;
शमश्यामा समझावियो, तीर कहीजे तेह.

प्रश्न.

उत्तम कुळथी उपनी, ताततणो जे तात;
ते साथे विवा कर्यो, समझो सज्जन वात.

उत्तर.

महिपति कहे शुण माननी, उत्तर आपु एह;
ए समश्या हु समझीयो, तक्र कहीजे तेह.

चोपाइ.

एवा वचन वनिताये कह्या, राजकुमारे मनमा लह्या;
प्रती उत्तर एनो आपियो, स्त्रीने मन भूपति भावियो.

दोहरो.

रामाने राजा कहे, छो तमे चतुर सुजाण;
अमने उत्तर आपिये, बोल्यो राय प्रमाण.

समश्या. प्रश्न.

एक नरे स्त्री शोभती, स्त्रीने वाली अपार;
गळस्यळे चुवन करे, ते कहो राजकुमार.

उत्तर.

कुवरी कहे अकोटडी, तमे पुछियु तेह;
बीजु पुछो रायजी, उत्तर आपु एह.

प्रश्न.

शत नर बाध्या बधने, मळी नर थयो एक,
ते नर तारी पास छे, वहालो स्त्रीने वशेक.

उत्तर.

कुवरि कहे शुण रायजी, उत्तर आपु एह,
हार नाम छे एहनु, तमे बताव्यो तेह.

चोपाइ.

राजाये जे पुछि वस्त, स्त्रिये उत्तर कर्या समस्त;
एक एकथी अदकी चातुरी, बाधी न शके कोइ चाकरी.
माहोमाहे हरखज धरे, त्यां विहगना वाणि उचरे,
तमो वेद छो चतुर सुजाण, तम आगळ मुजमति अजाण.
बाइ जो मन माने ताहरु, राजा साथे वातो करु,
कुवरि कहे बोलजे सत्य, मारा कुणनी राखे पत्य.
हरख घणो हइए आणिये, बोलिये जो बोली जाणिये.

दोहरा

पर पराक्रम पर चातुरी, पर लक्ष्मी पर नार,
तेशु वाद न कीजिये, साभळ राजकुमार.

चोपाइ.

विहगना वाणि उचरे, हेते राजा हइडे धरे;
तमो मुखे वदता लाजिये, एक वेण उत्तर आपिये.

प्रश्न. दोहरा

चाले छे पण चरण नहि, उडे पण नहि पाख,
लाखे सायो नव रहे, सउको देखे आख.

उत्तर.

उडे ते आकाशभणी, घरमा रहे गेघाट,
धुमाडो निर्धारिये, विचरे वसमी वाट.

प्रश्न-

चचु पण चकवी नहि, माजारि मुख शाम;
बे जीभो नहि नागणी, नरपत कहो ते नाम.

उत्तर.

डाह्याना दिलमां वसे, पडितने प्रीय पूर;
लक्षण जोता रेखणी, नाणावटीनु नूर.
राजा मन रिझयो घणु, जोइ चतुराइ एह,
साचु बोल सलक्षणी, तु नहि दासी देह.

चोपाइ.

बोलि दासि नमावी शीश, हु साचु बोलिश आदिश,
दासि पण राणिशु नसु, एह वातनु अचरत कशु
कुवरि कहे उठोजी राय, भोजननी वेळा वही जाय,
तत्पर थइ हेठा उतरो, भोजन मन भावता करो.
(રાજકુવરે બાઇને પૂછ્યુ કે તમે કોને પરણ્યાછો તે કહો
હુ પરસ્ત્રીની જોડે વાત કરતો નથી)

दोहरा.

हु परणी छु पेटमा, दृष्टे चडिया आप;
तमविण बीजा पुरुष जेह, ते भाइ ने बाप.
जेम घटे तेवु करो, छोजी चतुर सुजाण;
ना कहीने जो निसरो, तो तमने दउ प्राण.

चोपाइ.

राजा कहे जाणे तुज तात, आपण बेनी करशे घात;
वाली नथी मुजने मुज काय, मुजने चिंता तारि थाय.
विनता ए मूकी दो वात, कहो जइ परणावे तम तात;
आज्ञा लेवाने सचरो, शामाटे वण खुटे मरो.
• चतुराइ नहि चडशे वेचाय, एळे जीव तमारो जाय.

दोहरो.

क्षत्रिनुं ए कर्म नहि, कुवरि कहे शुण कर्ण;
नाठायी छूटे नहि, माथे आव्यु मर्ण.

चोपाइ.

शुणि ह्रदयामां राजा हश्यो, बोल तेहनो मनमा वश्यो;
जो वरवानु मनमा धरो, विप्र तेडावि मुजने वरो.
पुरे साख जो ब्राह्मण आप, ए वाते नव वेसे पाप;
पछि संकट जो आवी पडे, इश्वर आपणी वारे चडे.

दोहरा.

गोर पोताना घरतणो, तेडी दिधु मान;
मुज परणावी परवरो, ल्यो मन गमता दान.
विप्र पड्यो विचारमा, वळग्यु मुजने व्यग;
मृत्यु मारु बे तरफ, पडियो विकट प्रसंग.
जो नृप जाणे तो हणे, कुवरी केम दुभाय;
बेय प्रकारे मोत छे, पडित मन पस्ताय.

चोपाइ.

वळति वनिता वाणी वदे, बाडव दु ख नव धरशो ह्रदे;
जो राजा फेडे मुज ठाम, तारु नहि लेवा देउ नाम.
परणावि आणे माळिये, जनम तणा दुखडा टाळिये;
कुवरी कहे गुरुजी शुणो, आशिरवाद रुपिजी भणो.

दोहरा.

जोडी लाकडे माकडु, दक्षणा पामु क्षिप्र;
वळती अगीयारा गणु, एम विचार्यु विप्र.
कर्यु माहरु मलपतु, चोरिना थभ चार;
मगळ फेरा फेरवी, आरोगाव्यो कसार.
प्रेमे परणी उठिया, पोती मननी आश;
भावठ भागी गुरु तणी, कहे कवि शामळदास.

चोपाइ.

त्यां विप्रे वनिताने कह्यु, आपो शिख न जाये रह्यु;
तने अमे रुडु कहावियें, हवे भणावा नहि आवियें.
साचु मानो रुडी पेर, हवे नहि आवु तुज घेर.

---

१ तरत

दोहरा.

बोली बत्रीस लक्षणी, साभळ विप्रज वीर;
लाज अमारी तमकने, सोंप्यु तुजने शीर.
एक तात जेणे जण्या, बिजो तात करतार;
त्रिजो तात तो गोर छे, चोथो अन दातार.
ब्राह्मण भोळे भाखियु, वश थाशे सउ लोक;
आशिरवाद अमारडो, शामा ठाडो शोक.

चोपाइ.

नर नारि मळी लाग्या पाय, विप्र शिख लइ थयो विदाय;
सोंप्यु घर घरणी चाशिये, पछि वाडव चाल्यो काशिये.
આ છાના લગ્નની ખબર રાજા કુતિ ભોજને કેટલાક વરસ સધી થઈ નહિ
प्रातःकाळ समे परवरे, राज सभामाहि सचरे;
कुति भोजने हरख न माय, जाणे रखे नगरथी जाय.
एम करता विस्रा बहु दिन, राजानु मायु बहु मन;
प्रतिहार नामे पेथियो, चतुरपणे मनमा चेतियो
तेणे स्या माडि पडपूछ, जेने मुखे नहोती मूछ;
रात दिवस खुलारा करे, सघळि वात ते दिलमा धरे.
आखे काणो ने वामणो, भुरा वाळ ने लज्जामणो;
कुवरि मोलतणो प्रतिहार, रात दिवस नव छाडे ठार.
गया आव्यानी ते शुद्ध लहे, खबर जइ राजाने कहे,
एम करता वाम्या बहु दिन, चेत्यो पोळियो पोते मन.
त्रण वरस एम विति गया, चोर थइ नगरीमा रह्या;
एक दिवस एक कौतुक थयु, सेज वातमा लक्षण लह्यु
एक समे वेठा राजन, गोर पधार्या तेणे दन;
महिपतिये दिधा बहु मान, आप्या आभूषण धन दान.
पुछे धर्मधुरधर धणी, कहो कुवरि केटलु एक भणी;
शाशा ग्रथनु शीखि ज्ञान, भाषा कवित सगित तान.
काव्य कोश ने नैपध न्याय, कहो वात जेथी सुख थाय.

दोहरा..

ब्राह्मण वाणि बोलियो, सांभळ राजा कर्ण;
कुवरिने मंदिर गया, वर्ष वितिया त्रण.
बाळा बत्रिश लक्षणी, अद्भुत बुद्धि अपार;
शिखि विद्या सर्व ते, में छोड्यो ते ठार.
त्यार पछि जात्रा गयो, जोयु काशि गाम;
पुछि जुवो ते पुत्रिने, बोलावी आ ठाम.

चोपाइ.

एवु कहिने ब्राह्मण जाय, प्रधानने तेडाव्यो राय;
प्रधान आव्यो तेणे दीश, आवी रायने नाम्यु शीश
जाओ तमो कुवरिने द्वार, आशिश कहो अमारि सार;
कहेजो चिंता तजजो तमो, वर रुडो जोइये छिये अमो.
शिखामण दइने आवजो, प्रतिउत्तर तेनो लावजो;
प्रधान पधार्यो हर्डिपेर, ते आव्या कुवरिने घेर.
मलपता मेडिपर चड्या, ते कुवरिनी नजरे पड्या;
भले पधार्या प्रधान आज, उभी थइने कीधि लाज.
किया देशना वा वाइया, प्रधान मुज मोले आविया;
वात सर्व जाणुछु अमो, लेवा खबर पधार्या तमो.
अलखत घणी करुछु आप, ते तो राय प्रधान प्रताप.

चोपाइ

वजीर वळती बोल्यो वाण, सांभळ कुवरि चतुर सुजाण;
राजाने सांभरिया आज, मोकल्यो शुद्ध लेवा काज.
कह्युछे चिंता तजजो तमो, वर रुडो जोइये छिये अमो;
देश विदेशविशे कहावशु, वर रुडो खोळि लावशु.
खाओ पीओ ने दिन निर्गमो, सखियो साथे स्नेहे रमो.

दोहरा.

बाळा बोली रीसशु, सांभळ डाह्या शेठ;
वात करो बरवातणी, पाळी माहरु पेट
जइ संभळावो तातने, जेम चडे नहि रीस;
तात तुल्य तु माहरे, तारे खोळे शिश.

राजाने तो सान नहि,- राजाने तो कान;
माने कह्यु प्रधाननु, माटे मागु मान.
वणिक समोतो कोइ नहि, दीसतो ते रंक;
वगर वजीरे वाणिये, खोइ रावणे लंक.

चोपाइ.

प्रधान कहे साभळरे सती, एमा कोइनु डापण नथी;
जेवी इश्वरनी इच्छाय, ते कोइथी मिथ्या नव थाय.
आज्ञा आपो तो सचरू, काम काज राजानु करु,
शिख मागीने शेठज गयो, राजसभामा आवी रह्यो.
राजाये दीठो परधान, बोलावीने दीधु मान;
कुवरि लाडकयाइ जेह, शु बोली कहो साचु तेह.
प्रधानने शुणि चिंता थाय, साचु कहेता कोपे राय;
प्रधान बोल्यो रुडी पेर, तमने मळवा तेडे घेर.
कह्यु तात मळवा आवजो, साथे कोइने नव लावजो;
वळि कह्युछे वेउ कर जोड, नथी मारे परण्याना कोड.

दोहरा.

कुंति भोज शुणि कळकळ्यो, ए शु बोली बाळ;
कुवरिने मोले जवा, ते उठयो तत्काळ
राय पधार्या माळिये, आव्यो त्या प्रतिहार;
नरपतिने चरणे नम्यो, जुगते कर्यो जुहार.
मोले बेठी माननी, कर्यु दासिये जाण;
तमे बाइजी साभळो, आवेछे अहिं राण.
राय पधार्या वेगथी, कुवरि आगळ जाय;
प्रत्यक्ष जइ उभो रह्यो, आसन बेठो राय.

(પછી પુત્રી જોડે વાતચીત કરતાં રાજાને મન એવો વહેમ આવ્યો કે તે છાની પરણી છે, એથી અપમાન થઈ રાજા પોતાને મહેલ ગયો, ને એ શક સાચો કે જૂઠો તે નક્કી કરવાને કુંવરીના મહિ-રની ચોકી કરનાર પોળિયાને બારીકી તજવીજ કરી તે પરથી જણાયું કે કુંવરીના ગુપ્ત લગ્ન પુષ્પસેન વેરે થયાં છે)

दोहरा.

प्रतिहारे जे वात कही, विहगना शुणि आय;
चेतावी पद्मावती, कोप्यो तुज शिर राय.
वेळा वठी आपणी, जो चेते तो चेत;
उगर्यानो उपाय नथी, उतर्यु आपनु हेत.
पद्मावती बोली पछी, साभळ सखि सुजाण;
मुजपतिने चेताव जइ, नहितो थाशे हाण.
ल्याव तेडी आ गोलमा, करिये कांइ विचार;
विहगना वळती गइ, तेडी आवि ए ठार.
पद्मावती प्रणमी कहे, चतुर पुरुष तु चेत;
वेळा वठी आपणी, उतर्यु रायनु हेत.
मुज माटे तने मारशे, मोटी थाशे हाण;
माटे मारा कथजी, मानो मारी वाण.
जीवशो तो नारि घणी, जीव विना सौ शून्य;
परदेशे क्याइ परवरो, तमारे शी छे न्यून.
तात कहेशे ते शुणिश, धारिश आज्ञा शीश;
तमारो जीव उगारजो, कोप्यो नृप आदीश.
स्वामी कहे सुण सुदरि, नव मुकु आ ठोर;
लाजे जननी माहरी, नाम धरावु चोर.
मरवु माथे सर्वने, चिरजीवि नहि कोय;
नासु नहि निर्बळ थइ, प्रभु करे ते होय.

चोपाइ.

तु क्षत्राणि केरो तन, आज अमारु मान्यु मन;
मुज माटे तुजने नृप हणे, हत्या मनमाही नव गणे.
तम हाथे हु देउ वचन, तम साथे पाडु मुज तन;
एने मन पुत्रीनु झेर, वडु वध्युछे मनमां वेर.
मारु चालतां मुकावीश, नहितो तुज साथेज मरीश;
पुष्पक बोल्यो त्यारे त्यांय, विचरु राजसभानी माय.
शामा अमने शीखज दियो, छेल्लो जुहार मानी लियो;
शामा कहे सांभळरे राय, चतुर न धरशो मन चिंताय.

प्रसन्न जो परमेश्वर हशे, तो कल्याण आपणु थशे;
मागी शिख ने थयो विदाय, राजा चाल्यो राज सभाय.
बेठो सन्मुख भूपति भणी, बिक न आणी मन कोइ तणी.

दोहरा.

राजा कहे वजीरने, शो करवो उपाय,
वात बहार नव नीकळे, काम आपणु थाय
वजीर वाणी बोलियो, वाणी मारी शूण;
जाणो तेम तमे करो, ना कहेनार कूण.
राये तेडु मोकल्यु, तेडाव्या चडाळ;
रात समे लइ निसरो, आणो एनो काळ.
निशानी लावो नेत्रनी, मननी आग ओलाय;
कोइने नहि जणावशो, एम उचर्यो राय.

चोपाइ.

एवी कीधी छानी वात, अरुण अस्त अने थइ रात;
तेडाव्यो त्या राजकुमार, पासे पतीत उभा चार.
एनी साथ तमो परवरो, आयुध सर्वे अहिया धरी,
पाळा पथ जाओ ते साथ, हवे नव पुछशो बीजी वात
राजाये मन आण्यो गर्व, ते कुवर मन समज्यो सर्व.

दोहरा

राजकुवर वळती वदे, हु गाज्यो नहिं जाउ;
जे कहो ते हाजर करु, लुण तमारु खाउ.
लुण हरामी जे करे, वळि विश्वासी घात;
मित्रद्रोह वळि जे करे, दासी जेनी मात.
पाप पृथ्वीमा छे घणा, कहीये लाख करोड,
नथी कोइ त्रिलोकमा, लुण हरामी जोड
ते माटे हु सचरु, ज्या कहो तहा सुजाण;
जो कहो तो हाजर करु, मुज हाथे मुज प्राण.

चोपाइ.

झाझी शीद करोछो वात, जाओ तमो चडाळो साथ,
वळती छोडीने हथियार, रणमा चाल्यो राजकुमार.

पांचे जण चाल्या जेटले, जइ प्रधान मळ्यो एटले;
निशा एक पहोर त्या गइ, कोश एक पहोंच्या ते जइ.

दोहरा.

कहे प्रधान पतीतने, लइ जाओठो वन;
राजकुंवारिये जे कह्या, ते तमे शुणो वचन.
जो आ काम करो नहि, काम तमारू थाय;
कुंवरिये कह्यु छे शुणो, उगारि लेजो राय.

चोपाइ

एवु कहीने पाछो फर्यो, कुंवरि पासे ते परवर्यो;
चतुरा बेठी चिंता करे, दुःख घणु दिलमा ते धरे.
एटले त्यां आव्यो परधान, बोलावी दीधु घणु मान;
खोळा उपर मेलु शिश, प्रधान उगार्यो आदिश.
मात तात मोशाळज तमो, तमो थकी उगरिये अमो.

दोहरा.

प्रधान कहे पद्मावती, वेगे वार न थाय;
राखिने धन दइ मोकल्यो, तेडी लावया जाय.
पसाय करीने पतीतनी, भरनी भावठ भाग्य,
हुं मदिर जाउ माहरे, जन मोकल ते जाग्य.
काढी मेल तुज कथने, कोइ नगर मोझार;
राजा जाणे जीवतो, तो मारे ते ठार.

चोपाइ.

एवु कहीने गयो प्रधान, तव कुंवरीने आव्यु ज्ञान;
कहे कुंवरि कोने तेडिये, रातरामे वनमा रेडिये.
एकांते दाशि तेडिया, गुणिका भणी पथे खेडिया,
चतुर गुणका चद्रावळि, दाशि जइने तेने मळि.
तमने तेडे पद्मावती, अजर कर्यानु कारण नथी;
पछि दडवड गुणका दडवडी, पद्मावतीने मोळे चडी.
शा कामे बाइ तेडी आज, मुज सरखु कही दीजे काज;
पद्मावती तव लागी पाग, ओलव आज अमारि आग.

---

१ फकत गावानो धधो करनारी सदगुणी

आज संकट मारे अति घणु, तेथी काम पड्युं तम तणुं;
राजकुंवर मे छानो वर्यो, तात अमारो क्रोधे भर्यो.
तेह तणुं छेदावे शीश, पतित पाठव्या आणे दीश;
वार नथी लागी एवडी, हमणा लइ गया आ घडी.
छाना गया न जाणे कोय, आवी प्रधाने प्रिछव्युं सोय;
तेने जइ उगारो तमो, दीन थइ बोलुछु अमो.
ररे राय नगरथी जाय, तेडी लावो मोली मांय.

दोहरा.

वळती चंद्रावळी वदे, शामा तु तज शोक;
जो नव लावु रायने, सुक्रित सर्वे फोक.
तेडी लावुं तुज कंथने, राखु मारे घेर;
खबर काढवा मोकले, दासीने शुभ पेर.
सांभळ तरुणि तुं वळी, जो नव लावुं राय;
जो पतित तेने हणे, तुं हणजे मुज काय.
मनमां दुःख रखे धरो, छांडो उर उचाट;
जाणो महिपति मोलमां, नव करजो गेगाट.

चोपाइ.

एवु कहिने गुणका जाय, वेगे जइ पोंती वनमांय;
पतीत दीठा तेणे चार, आगळ उभो राजकुमार.
गुणका त्यां जइ उभी रही, पतीत आगळ वाणी कही;
रात समे अहीं केम आविया, राजकुवरने केम लाविया.
राजकुवरिने चडी छे रीश, तमो चारनां छेदे शीश;
राजकुंवर केम मार्यो जाय, अर्द्धांगा जेनी ते थाय.
रात समो छे मुकी दियो, जे जोइये ते मुजथी लियो;
वळती बोल्या ते चंडाळ, अम शिर शाने घोंचो आळ.
कुंती भोज बोल्यो जे राय, केम वचन ते मिथ्या जाय;
लाग्युं पाप अमने वे घेर, कोलो जाया दइये घेर.
राजा कोपे जो ते ठाम, लइये अमे तमारु नाम;
त्यारे गुणका ते तो हशी, वात एह मारे मन वशी.

कुवर देश विदेशे जशे, 'महिपति शि रीते जाणशे;
एह वातनी शि चिंताय, जेम तेम काम तमारू थाय.
सोनानी महारो से चार, वेंची आपी तेणे ठार;
पतीत तो हरडे हरखिया, हेमटका नयणे निरखिया.
वळती बोल्या मधुर वचन, मृगमारि लेशु लोचन.

दोहरा.

दाम उगारे देहने, जो कोप्यो होय देव;
हु बलिहारी दामडा, समर्थ तुज सदैव.

चोपाइ.

पतीत शिरज मागी परवर्या, नगर भणी चारे सचर्या;
जइ राजाने कह्या वचन, लाव्या तेहतणा लोचन.
नृप कहे क्याइ न करशो वात, करशो तो तमने करू घात,
एह वात एटलेथी रही, पुष्पसेननी शी गत थइ.
वनमा उगर्यो राजकुमार, तव गुणकाने कर्यो जुहार;
अमो विचरशु देश विदेश, पुरमा तमे करोज प्रवेश.
पद्मावतिने कहेजो जइ, लल्यु हतु ते वातज थइ.

दोहरा.

चद्रावळी वळती वदे, शोक ह्रदयनो टाळ,
मुज घेर आवो महिपती, वाचा मारि पाळ
उनो या वाशे नहि ले नहि कोइ नाम;
प्रीत धरीने रायजी, चालो मारे धाम.
तम परदेशी पखिया, वळी कोमळ तम हाड;
आवो मदिर माहरे, मानु तमारो पाड.

चोपाइ.

पद्मावतीशु परठी होड, लावु पति पोचाडु कोड;
माटे मारो कोल न जाय, वीक तजी चालो घेर राय.
एवु शुणि मुख बोल्यो वाण, सुण चद्रावळि चतुर सुजाण
मारो तमे उगार्यो जीव, तमो अमो वचे छे शीव.

दोहरा.*

सम खाई बे चालिया, आव्या पुग्मीझार;
जळ हळ ज्योत झळकी रही, गुणका नेरे द्वार.
दासिदास तेने घणा, थइ रह्यो गगाट,
सुदर आसन बेसवा, हेम हीडोळा खाट.
प्रवेश नहि त्या पुरुषनो, दीसे लीला विलास;
खाओ पीओ दीन निर्गमो, रहो अमारी पास.
शाक पाक घृत नवनवा, पान सोपारी तेल;
खाट तळाइ ओशिसा, थइ रही रग रेल
पद्मावती ए पाठवी, दासि जोवा एक,
पति आव्यो के आवशे, जुओ करी विवेक.
दासि स्याथी सचरी, ज्या गुणकानो वास;
राजा दीठो रीझमा, पोती मननी आश.
चद्रावळी वळती वदे, जुवती जलदी जाय;
महीपति छे मुज महोलमा, वधामणी तु खाय.
दासि दोडती त्या गइ, सुणो बाइ कहु वात;
राजा आव्यो महोलमा, मे दीठो साक्षात.
मुक्ताहार हारे जड्यो, जळ हळ ज्योत अपार;
कठथी आप्यो काढिने, न्याल करी ते नार.
भावठ भागी दासिना, बहुविध दीधु मान;
महोच्छव कीधो मोलमा, दइ जाचकने दान.
शणगार सोळे मोकल्या, चद्रावळीने घेर;
तुज प्रतापथी उगर्यो, रासे रुडा पेर.
चरणा चोळो शोभता, नार कुजर चीर;
तुजथी अदकु काइ नहि, लावा नणदी वीर.

चोपाइ.

एम करता वीता बहु दन, मा यु रानकुवरनु मन,
चद्रावळीना मदिर माय, सभा इद्रना सरखी थाय.
चद्रावळिये ठानि वीध, नाम ठाम पूछीने लीध;
ए वात अहियाथी रही, पद्मावतीनो शि गत थइ.

पद्मावतीनी ज्यां छे मात, कुंती भोज त्यां जइ कहे वात;
शिखामण कुंवरिने दियो, समजावीने पासे लियो.
आज सुणी मे विपरित वात, ते साची मानी साक्षात;
गोरे मंदिर तज्युं ते तणुं, पनिहारे पण जाण्युं घणुं.
त्रिजो जोइ आव्यो परधान, तेणे संभळाव्युं मुज कान;
चोथो हुं जोई आव्यो दृष्ट, काया निरखि पाम्यो कष्ट.
पांचमुं कह्युं परणवुं नहि, ते सुणी चिंता मुजने थइ;
में मोटो कीधो उत्पात, राजकुवरनी कीधी घात.
अति अलौकिक एनुं रुप, एमाटे में मार्यो भूप;
सघळुं राणी सांभळी रही, पछि बोल्वा ततपर थइ.
मारि कुंवरि एवी न होय, जुउ तमे बोलोछो सोय;
नथि मुज बेटीनो कांइ वांक, शामाटे मार्यो नररांक.
शरणे आव्यो राजकुमार, वण अपराधे मार्यो ठार;
कोई नगरथी आव्यो घेर, वडा साथे बंधाशे वेर.
राय कहे मे सघळु लह्युं, मानो साचु मारुं कह्युं;
कुंवरिने मोले जइए आज, दो शिखामण तो रहे लाज.
एवुं वचन कही गयो राय, कुंवरिपासे माता जाय;
चांपी कुंवरि हृदयासाथ, गुझ करवाने बेठी मात.

दोहरा.

माता बोली मान दइ, केवी खबर छे तुज;
मळवा कारण आवी हुं, साचुं कहे तुं मुज.
पद्मावती थइ गळगळी, आंखे आंसुधार;
शामाटे हुं अवतरी, धिक धिक मुज अवतार.
मार्यो रुडो महिपती, बेठु मोटुं पाप;
मुज माटे हत्या करी, मूरख मारो बाप.
वळती बोली मावडी, सांभळ पुत्री सुजाण;
करवा धार्युं इश्वरे, निपजे एज प्रमाण.
खाओ पीओ दिन निर्गमो, रहो सैयरो साथ;
शिखामण दइने वळी, मंदिर आवी मात.

चोपाइ.

शिखामण दइने गइ माय, राणिने जइ पूछे राय;
कहीं पुत्रिनु जोयु रूप, दिल्गीर थइने पूछे भूप.
राणी कहे राजाजा सुणो, भुंडो वात सुरा शाने भणो;
जेवी तेवी पण बेटी थाय, रूडे घेर परणावो राय.
राय गयो साभळीने वात, तेडाव्या रावत से सात,
कुवरिने मोले राचरो, रात दिवस त्या चोकी करो.
पुरुषनाम आवे कोइ वार, तण पळे हणजो ते ठार,
शीख ल्इ रावत परवर्यो, कुवरिने मोले संचर्यो.
रात दिवस त्या रक्षा करे, महोल फरती चोकी फरे;
पछि राये तेड्यो प्रतिहार, हवे चुकीश तो खाइश मार.
एक गुनो में बगस्यो रही, बीजो गुनो तो बखसु नहीं,
कपट होय ते करजे जाण, निकर तारा खोइश प्राण.
एवी साचवी राखो बाळ, माथे जेम न बेसे गाळ,
एम करता दिन झाझा गया, आठ मास गुणिका घेर रह्या.
रुदयामा राणि साभरे, हास विनोद हइयामा ठरे,
राणीने नव भावे अन्न, राजकुवर शु मान्यु मन.

दोहरा.

एक समे राजीने सभा, कुता भोज जे राय;
पडित बेठा पाचसें, जोशि जोश पुछाय
क्यां आ कन्या दिजिये, जुओ प्रश्न विचार,
लेणु होयने रायर्या, त्यां परणावु कुमार.
पडित वाणि ओचर्या, एक करोने काम,
मळता नशेक जोइये, ल्यो वरकन्या नाम.
चपक देशथी ते समे, आवी गुणिका नार;
भर जोवन वर्ष सोल्मा, विचरी राजद्वार.
साथ गाधर्व साथे पळे, साहेली से सात,
रूप स्वरूपे आगळी, सगीतमा विख्यात.
दीधु मान महीपति, विस्मय थइ मनमाय;
महिपति रीझो मन विषे, चित्रलेख सौ थाय.

त्या प्रधान पंडित मळ्या, राणाने वळि राय;
वाजा सर्व साधिया, आनंद उर न समाय.
वाजे वेणा वांसळी, सारंगी ने साज,
ताळ कांसि ने तंबुरो, जंत्रो अने पखाज
नगर लोक जोवा मळ्या, करे नायका नाच,
ए अवसर शोभे सभा, सुरपति जेवी साच
राजा जोइ रीझ्यो घणु, आप्यो भलो पसाय;
आभूषण ने पालखी, सुवर्ण नेपुर पाय.
सलाम करिने शिर धरी, रामा उभी रहेय,
एक मास अहिया रहो, राजा मुखे कहेय.
नारि नीचु जोइ रही, वळि धुणाव्यु शीश,
ते देखी झाखो पड्यो, चडी रायने रीश
गुणिकाने राजा कहे, सांभळ चतुर सुजाण,
साचु कहे मुज आगळे, तुजने मारी आण
प्रेमदा कहे नव पूछशो, पूछे थशे अनर्थ,
दु ख थाशे मन अति घणु, वळि कोपशो व्यर्थ.
भूपति कहे शुण भामनी, तात तणो ए कोल,
जे होय ते उत्तर्श गुनो, सत्य होय ते बोल्य
रामा कहे शुण रायजी, दु ख लागो के सुख;
चतुर न दीठो कोइने, माटे मरड्यु मुख.
महिपति कहे शुण माननी, जोया केटला देश,
चतुर शिरोमणि सर्वथी, निरख्यो कियो नरेश
राजा प्रत्ये ते पछि, वनिता बोलि वाण,
चतुर शिरोमणि रायनु, सांभळ कहु वखाण
सोरठ दीठो सामटो, मारु ने मेवाड,
नरपति निरख्या अति घणा, जेना कोमळ हाड.
सागरतट चंपावती, चंपकसेन राजन,
बत्रिश लक्षण आगळो, पुष्पसेन एक तन.
रूप अनुपम एहनु, जाणे सकल विवेक,
नर सघळा मे निरखिया, आव्यो दृष्टे एक

राजा मन रीझ्यो घणु, पोत्या मनना कोड;
कुवरि आपु एहने, जुगते जुक्ति जोड.
पद्मणी पुत्री माहरि, बत्रिश लक्षणो एह;
परणावु जो प्रीतशु, दुधे वुठे मेह.

चोपाइ.

वे दिन ते त्या गुणिका रही, शिख मागीने मारग वही;
राजाये तेडाव्या भाट, चपावतीनी झाली वाट.
वेगे जाओ चपक भणी, कहेजो जे कुतलपुर धणी;
तेने पुत्री पद्मावती, रुप अनुपम छे ते अती.
विवा अर्थ मोकल्या पान, पुष्पसेनने देवु दान;
काम सिद्ध करीने आवजो, साथे जान तेडी लावजो.
ए रीते उचरेछे राय, चद्रावळी आवी वळी त्याय;
कुंति भोजे जे जे कह्यु, ते चद्रावळीये शुणी लह्यु.
ए रीते बोल्यो जे राय, चद्रावळीने हरख न माय;
में राख्यो छे पुष्पक राय, सकळ मनोरथ पुरा थाय.
भाट वाट चाले जेटले, चद्रावळी बोली तेटले.

दोहरा.

गुणका कहे शुण रायजी, कुति भोज सुजाण;
पुष्पसेन अहिं पाठवु, शु देशो मुज ल्हाण.
दुत मोकलवा नव पडे, दिन झाझा नव थाय;
तेडावु हु पाधरो, शु देशो मुज राय.

चोपाइ.

राजा कहे साभळ तु नार, मागो ते आपु आ ठार;
तत्पर थइने जाओ तमो, जे केशो ते देशु अमो.
चद्रावळि कहे ते वार, पुष्पकराय हतो आ ठार;
राख्यो हतो तमे जे राय, ते तो पुष्पसेन कहेवाय.
तातवचनथी ते वन गयो, नगर आपणे आवी रह्यो;
हवणा कहीं गयो शे काज, ते तो तमे जाणो महाराज.

दोहरा.

राजा कहे प्रधानने, माठी उपनी मत्य;
वण समजे मे मारियो, राजकुवर भूपत्य.
कातो विष खाइ मरू, का करू आतमघात;
जमाइ हण्यो में जुगत श्रु, अघटित कीधी वात.
वजीर कहे शोद दुख धरो, शिद आणो चिंताप;
यो नायक चत्रावळी, पेदा करशे राय.
गुणिका कहे मानु नहि, राजानो विश्वास,
कोल दिजिये तातनो, तो लावु तम पास.
राय स्नेहि माने नहीं, जो सोंपी दे प्राण,
साइ सोनी ने सर्पनो, माने प्रीत अजाण.
सिंह अही ने ठगधर, माने मित्र अजाण,
जो तुठे तो गुण करे, रुठे तो ले प्राण

चोपाइ

नरपति कहे साभळ तु नार, अम शिर एवडो नव दे भार
कोल मारो जो रीशज धरू, जे मागे ते हाजर करू.

दोहरा.

गुणिका कहे नृप साभळो, नायक मडी पेर,
चपक केरो बेटडो, में राख्यो छे घेर.
प्रधान प्रतापे उगर्यो, आयुष्य एनु होय;
मोले राख्यो माहरे, जेम न जाणे कोय
शाल आपी सो लक्षनी, गुणकाने दइ मान;
गयो कुवरने तेडवा, कुती भोज रानान.
कर्यो प्रणाम प्रधानने, धन चतुराइ आज,
मुज शिर हत्या उतरी, राखी मारी लाज
एक विप्र ने वाणियो, वळी नदी नहि गाम;
राजा कहे सुण सुदरि, ते मोघारो ठाम
ओछव कीधो अति घणो, मळिया राणा राय,
प्रधान पाये चालीने, कुवर कने ते जाय.

नगरपडो वजडावियो, गडगडियां निशाण;
राजा चाल्यो तेडवा, जाचक करे वखाण.
पुष्पसेन पासे जइ, पुरपति लाग्यो पाय;
अम उपरे दया करो, कीधो छे अन्याय.
उठी आलिंगन कर्युं, रथे बेशीने जाय;
कहे शामळ शुं वर्णवुं, अद्भुत ए शोभाय.
महेल पधार्या मलपता, कुंवरिने थयुं जाण;
मनमां हरखी माननी, उग्यो कनकनो भाण.
सुरत जोइ सुख उपन्युं, पद्मावतिनी माय;
रसवस थइ रही रंगमां, हइडे हरख न माय.
कनक थाळ हीरे जड्या, मुक्यां शुभ आसन;
जोडे बेशी जुगत शुं, कर्युं राय भोजन.
लविंग सोपारि एलचो, बिडा मांहि बरास;
आरोग्यां आनंद शुं, पोती मननी आश.

चोपाइ.

वळती राजा बोल्यो वाण, शुणजो पुष्पक चतुर सुजाण;
बाळापणमां बाळे वेश, निकल्या केम तमे परदेश.
शामाटे तमे छांड्यो देश, मुजने मांडी कहो नरेश;
वळतो बोल्यो पुष्पक राय, मांडीने बधी कही कथाय.
चंपावती नगरिनो राय, चंपकसेन तात मुज थाय;
सिंह केडे सेना परवरी, मारे ताते प्रतिज्ञा करी.
जे नहि आवे रणमोझार, तेने हुं तो मारुं ठार;
सउ लोको संघाते गया, कर्मसंजोग अमो रही गया.
मुजने हणतां जाण्यो दोष, ताते वन काढ्यो करि रोष;
तेथी अहियां आव्या अमो, पछि थयुं ते जाणो तमो.
जामातानुं शुणि वचन, हरख्यो कुंतो भोज राजन;
पंडित प्रधानने कहे राज, करो हवे विवानुं काज.

दोहरा.

पुत्रीने जइ कहे पिता, करिने अतिशे क्रोध;
वण परणे दंपति थयां, किधो धर्म विरोध.

पद्मावतिये गोरने, तेडि पुरावी साख;
गोर कहे अन्याय नथी, राजा रीस न राख
जेम ओखानु नारदे, कर्युं संक्षेपे लग्न,
विधिवत पछि बाणासुरे, कर्युं लग्न थइ मग्न
मे पण संक्षेपे क्रिया, करि परणावी एम,
विधिवत हवे विधा करो, परणावो तमे तेम
तहा लगन लेवरावियां, पोल्या मनना कोड,
कहे शामळ शु वर्णवु, जुगते जुक्ति जोड

चोपाइ

राजाये करी नगर शोभाय, आण फेरवीने पुरमाय,
अजवाळिया महोल माळिया, शणगारिया गोख जाळिया.
घेर घेर गाये मंगळ सह, राजाये धन खरच्यु बह,
भाट चारणो मागणहार, ब्राह्मणनो नव लइये पार
प्रधान सउ उतारे परे, नगर वधु त्या भोजन करे.

दोहरा

पीठी चोळी पद्मणी, कनक कचोळा माय,
कस्तूरि लेपन करी, सुगधा जळथी नाय
एक सुगध शरीरनो, बीजो पुष्पनो होय,
भमरा गुजारव करे, देखिने मन मोय

चोपाइ

पीठी चोळी राय शरीर, मजन कीधु निर्मळ नीर,
वर राजा वरघोडे चड्या, दुदुभिये डंका गडगड्या
वागे ढोल निशाने घाय, सौना मनमा हरख न माय,
गज तुरग तणी बहु लार, ते उपर बेठा झुझार
तोरण आव्यो पुष्प कुमार, सासुये पोख्यो ते वार

दोहरा

कर्युं मनोहर माहरु, चोरिना थभ चार,
पधरावी त्या पद्मणी, वर्त्यो जे जे कार
वाजा वागे अति घणा, गुणिजन त्या गुण गाय,
परणेछे पद्मावती, जोडे पुष्पक राय

हाथ मेळाव्यो हेतशु, दीधु कन्यादान;
हाथि घोडा आपिया, दइने मोटु मान.
मगळ फेरा त्या फर्यां, आरोग्या कसार,
मगळ गाये माननी, हरख्या स्री भर्थार.

प्रश्न.

पेलु मगळ वर्त्तता, वनिता बोलि वाण,
राति वस्तु वखाणिये, तमो छो चतुर सुजाण.

उत्तर.

राति पानी पगतणी, राता अधर प्रवाळ,
रातो रग मजीठनो, शुक नासा पण लाल.

प्रश्न.

शाम नील ने पीत वळी, वस्तु श्वेत वखाण;
कहो एटलु कथजी, जो छो चतुर सुजाण.

उत्तर.

श्याम तो कीकी आख्यनी, शाम भमर शुभ भाग;
शाम तो अजन आजीए, शाम तो वेणि नाग
लिलि पहेरी कचुकी, नील कमळनु फुल,
नीलु कंकण चूडले, नलु त्राजु अमुल्य.
पीळु सुवर्ण शोभतु, पीळी केसर आड;
पीळा पटकुळ पेरिया, जोता मोह पमाड.
श्वेत नेण छे शोभिता, श्वेत शशिसम मुख;
श्वेत हार मोतितणां, जोता भागे भूख.

प्रश्न.

बाप्पा तातणे सप्त नर, एया नर मळी चार;
एह बतावो रायजी, थइ तेनी एक नार.

उत्तर.

पुष्पक बोल्यो प्रीतथी, तमे जुओ आ ठाम;
पुछोछो जे प्रेमथी, चोरी एनु नाम.
सत्य कहोछो रायजी, हु हरखी मन आन,
विघन नजो सउ तमतणा, अविचळ तपजो राज.

चार वेदनी धुन थइ, आशिर्वचन भणाय;
आज्ञा मागी गोरनी, उठया वरकन्याय.
गोत्रज पासे आत्रीया, रमवा पासा सार;
त्या जीत्या पद्मावती, हार्यो राजकुमार.
त्या कौतक विध विध करे, रायने हर्ष न माय;
मींढल छेडा छोडीया, गुरुने लाग्या पाय.
मंदीरमा रही माननी, गयो सभामा राय;
कहे शामळ शु वर्णवु, राजकुवर कन्याय.
उत्तम आसन उपरे, बेठो राजकुमार;
बंदिजन जश वर्णवे, हरख्या लोक अपार.

चोपाइ.

वर कन्याना पोहोच्या कोड, जुग्ते जुगती मळीछे जोड;
राजाराणी रंगे रमे, करे विनोद जे मनमा गमे.
वळी दासरानी साथे राय, मृगया रमवा कारण जाय,
एम करता दिन झाझा गया, त्यारे राय चिंतातुर थया.
सांभरीया त्यां मा ने बाप, तनमा अतिशे उपज्यो ताप;
पिता सांभरे वारंवार, अ ख आवे आसुधार.
माता सांभरे पुष्पावती, आण्यो शोक हैडामा अती;
सुलोचना सभारी मन, हैडु फाटे करे रुदन
जे परणी मुकी ते नार, तेह सांभरे वारवार;
घर मुकीने त्याथा वह्या, वरस अगीआर पुरा थई गया.
सुलोचनानु वचन साभर्यु, बार वरश वीत्या पछी मरु;
जो मरशे तो हत्या थाय, अवतार एनो एळे जाय.
एम कहि मुक्यो निश्वास, पद्मावती तव आवी पास;
रामापे दीठु त्या मुख, दीलगीर जोईने पामी दुख.
पाय नमीने उभी रही, शामाटे चिंता चित थइ;
राये वात वर्णवी कही, जेटली वार्ता आगळ थई.
मुजने मोटी ते चिंताय, नार मरे तो हत्या थाय,
पण तेड्यो अहींथी जो जाउ, तरणा तुल्ये हलको थाउ.

एवी वात करे जेटले, चंद्रावळी आवी तेटले;
वळती गुणका बोली वाण, जेलो साचु चतुर सुजाण.
शे कारणे तमे दुख धरो, मुज आगळ साचु ओचरो;
आप वीती जे वार्ता थइ, गुणका आगळ माडी कही.
गुणका कहे त्या जाशु अमो, चिंता मननी टाळो तमो;
राजा कहे जै जो जो गाम, अमारु त्या जै लेजो नाम.
पुरनी चरचा जो जो सोय, त्या अमने सभारे कोय;
जईने त्या चेताने राय, चार हत्या शीर पर नव थाय.
मात तात ने त्रीजी नार, चोथो मारो जीव उगार;
गुणका त्याथी वाटे थई, खट मासे चपक पुर गई.
नगरपडो वाजे ते दीस, गुणकाए जै नाम्यु शीश;
प्रधान बोल्यो गुणका साथ, नाटकनो नव करशो गाथ.
राजाने मन दुख छे घणु, माटे नृत न जुवे तमतणु;
त्यारे गुणका बोली वात, शु दुख छे राजाने भ्रात.

दोहरा.

त्यारे प्रधान बोलीयो, साभळ तु गुणराय;
पुष्पसेन एक बेटडो, काढ्योछे वनमाय.
वर्ष एकादश वहि गया, उपर थया खट मास;
ते कुवर आव्यो नहि, माटे मन उदास.
पुरु वर्ष थया पछी, नारी तजशे प्राण;
वात चालशे विश्वमा, हसवु ने वळी हाण.
माताए अनजळ तज्यु, तात त्यागसे देह;
जोता वाट न आवियो, जेम वर्षियो मेह.
गुणका कहे शीद दुख धरे, मुजने आपे ल्हाण;
अहिं आणीने आपशु, चतुरा चतुर सुजाण.
वारो एनी मातने, वारो एनी नार;
मास छ पेहेला मोकलु, पुष्पक राजकुमार.
नृपने आनद उपन्यो, कीधो बहु पसाय;
पछी हु आपीश पाल्सो, जो मन चिंता जाय.

खबर सुणाया मोहोल्मां, गुणकाने लई जाय;
पुंछे राणी प्रीतथी, कहो कुंवर छे क्यांय.
कुंतल पुर रळीआमणुं, कुंती भोज राजन;
बेटी परण्यो तेहनी, पुष्पसेन तव तन.
त्यां गुणकाने आपीया, मोतीकेरा हार;
न्याल करी चंद्रावली, आप्या गज तोखार.
दासी एवुं सांभळी, त्यांथी चाली जाय;
सुलोचना जे पदमनी, पास वधामणी खाय.
आवी कुशळता कंथनी, चिंता मननी मेल;
सुणतां आनंद उपन्यो, थई रही रंग रेल.
प्रेमे जैने पद्मनी, नमी सासुने पाय;
वात कहो गुणका तणी, मुजने आनंद थाय.
सुलोचनाए कंचवो, हीराजडीत अपार;
आप्यो गुणकाने वळी, आप्या शुभ शणगार
गुणकासाथे मोकल्यो, गुणसागर परधान;
तेडी वेहेला आवजो, एम बोल्यो राजान.
केहेजो कुंति भोजने, अमो तणो जुहार;
जेम तेम तेडी लावजो, वेलो राजकुमार.
चळती प्रधान सांचर्यो, शत सहस्र लई दास;
बे मासे पोत्या जई, कुंति भोजने वास.
नगर समीपे आविया, गडगडीयां नीशान;
राजा बेठो तो तहां, गुणकाए कर्युं जाण.

चोपाइ.

चंद्रावळी गुणका गई तहां, कुंति भोज बेठोछे जहां;
पासे वेठो पुष्पकराय, गुणका तहां वधामणी खाय.
आव्यो चंपक तणो प्रधान, तेडी लावो दईने मान;
प्रधान साथे पुष्पकराय, गुणसागरना सामो जाय.
ढोल ददामा वाजे बहु, आव्यो प्रधान हर्ख्यां सहु;
पुष्पसेन मंत्रीने मळ्यो, ताप तेहना तननो टळ्यो.

सीने मळिया पुष्प नरेश, वळती पुरमां कर्यो प्रवेश;
राजसभामां वेगे जाय, कुंती भोज त्यां उभो थाय.
मळी हळी आसन बेठाय, कुशळ वार्ता पुछे राय;
पछी सुंदर नीपजाव्या पाक, रसोइ रुडी सुंदर शाक.
करी भोजन कीधो मुखवास, कुंति भोजनी पोती आश.

दोहरा.

गुणसागर कहे रायने, अमने करो विदाय;
एक घडी रेशुं नहि, क्षण वर्ष सम थाय.
पुष्पसेन पद्मावती, मोकलो मारी साथ;
फरी फरी ना पुछशो, अमने बीजी गाथ.
तातें भोजन त्यागीयुं, माए तजीयुं अन्न;
दीन थोडे देखे नहि, तजशे नारी तन.
बीजो वात केशो नहि, जे केशो ते जुठ;
सासरवासो सज्ज करो, राय आ घडी उठ.
त्यां राये ततक्षणे, तेड्या वणीक सोनार;
वस्त्र घराणां सज्ज कर्यां, केहेतां नावे पार.
चीर खीरोदक दोरिया, मघियां मोंघी भात;
साडी जरकशीनी सही, जेनी उत्तम जात.
त्रणसो रथ शणगारिया, सहस्र दासी दास;
दश सहस्र दई अश्व ने, उंटो शत पंचाश.
गज मोटा शणगारीआ, मद झरता मच्छराळ;
बखतर टोप धरी शीरे, बेठा वीर विकराळ.
बहु पशाय दील रीझीने, आप्या तेणे ठार;
कहे शामळ शुं वर्णवुं, केहेतां नावे पार.
प्रातःकाले पद्मनी, माने लागी पाय;
माता आपो आगना, अमने करो विदाय.
नैणेथी आंसु पड्यां, तुजविण रह्युं न जाय;
सुख दुख केहेशो कोणने, ए मोटी चिंताय.
माने वाळी बेटडी, सीधी होय विशेप;
पुत्रीने जननी कहे, दुख न धरशो लेश.

शीख मागी लइ सर्वनी, लईने सघळो साज;
रथमा बेठी शीघ्र थई, सरिया सघळा काज.
पुष्पक हय उपर चड्यो, बांध्या कशी हथीआर;
ससराने शीर नामियु, सौने कर्यो जुहार.
चंद्रावळी चरणे नमी, राये आपी लाण;
हस्ती आप्यो हेतथी, वळी आप्या केकाण.
नगर थकी ते निसर्या, सर्व वळावा जाय;
चरणे नमीओ रायने, मळ्या कईक राणाय.

चोपाइ.

प्रणाम करीने पाछा वळ्या, पुष्पसेन तो परे पळ्या;
ढोल शब्द थाये अती घणा, मोटा लश्करमा नहि मणा.
एक देशथी बीजे जाय, पडे नीशा त्या वासो थाय;
कईक दीवस तो वाटे थया, अघोर वनमा वासो रह्या.
कर्या उतारा तेणे ठाम, सौ लाग्या पोताने काम;
रथथी त्या राणी आखडी, अवनी उपर आवी पडी.
सखी सरव आवी विंटाय, हाहाकार शुण्यो ते राय;
नव बोले नेत्रे नव जुवे, दुख पोकार करीने रुवे.
राजाजी डेरामा गयो, जोई राणीने दुखीयो थयो;
एम दीवस त्रण्य वाटे गया, राजा दिलमा दुखिया थया.
वनमा स्त्रीनी थाशे हाण, घेर सुलोचना तजशे प्राण;
एवु कही मनडामा बळे, त्या जक्षणी ते सामी मळे.
कुवरे तेणीने कही गुज, कोल दीधो छे मारे भुज;
आ दुखथी बीजु शु ल्हु, स्त्रीनु दुःख जाये नहि कह्यु.
नव खाये नव पीये नीर, ते दुख साले मुज शरीर;
जक्षणिये उपायज कर्यो, रोग राणीना तननो हर्यो.
त्रण दीवसे भोजन त्या कर्यु, भुपतिनु मन हरखे भर्यु;
वळती त्यांथी थया विदाय. चंपकपुरनी वाटे जाय.
नगरलोक सौ करे उचाट, पुष्पसेननी देखे वाट;
वर्ष थवाना पुरा बार, तेमा छे ओछा दिन चार.

दोहरा.

नेनकमळनी दीकरी, सुलोचना जे नार;
वेगे चाली सासरे, सीने कर्यो जुहार.
ससरा आपो आगना, पाडु मुज शरीर;
वरस बार वीतां गया, नाव्यो नणदी वीर.
सासुने साचु कह्यु, पाडु मारो देह;
वाट जोई नव आवीयो, सासु जायो नेह.
कोल दीधो तो करविषे, ते मिथ्या थई वात;
तन न तजु जो माहरु, लाजे मारो तात.
एहु मन नव लावीए, कहे सासु ते वार;
बार वरसमां तो हतो, छे ओछा दीन चार.
घडी एकमां शु निपजे, साह्य करे भगवान;
वहुने वारी राखिया, कथन शुणावी कान.

चोपाइ.

समजावीने राखी नार, गया पछी तुरतना दीन चार;
त्रीजे दीवस पडी त्या रात, पुष्पक आव्यो सेना साथ.
नगर विषे आवीने अडे, नीशान वागे ने गडगडे;
वधामणी त्या दश दिश जाय, वधामणि वधामणिया लाय
चंपक नृप बेठो जे ठार, आवी भाट बोल्यो ते वार;
राजकुंवर आव्या पुर नार, सुणता हरख्यो राय अपार.

दोहरा.

आसनथी नृप उठियो, हरख न हइये माय;
पडो वजडाव्यो पुरविषे, राना सामो जाय.
आगळ मा पुष्पावती, साहेली सें चार;
पाछळथी सुलोचना, विचरो तेणी नार.
ते पाछळ पृथ्वीपती, सेना अपरम पार;
ते पाछळ वेपारियो, ससरो जे निरधार.
सउ आगळथी परवर्यो, गुणसागरनो तन;
ते जइ पुष्पकने मळ्यो, मान्यु वेनु मन.

मात पिता जइने मळ्या, पुत्र प्रणमियो पाय;
वचन हतु मुज तातनु, पाळ्यु तमो पसाय.
स्त्रीने भळिया सान्मा, पोतो मननी आश;
सासुने चेळो थयो, हरख्यां दासि दास.
ससरा केरा हाथमा, सुवर्णकेरो थाळ;
सोना पुष्प वधावियां, उरमां आणो वहाल.
बाथ भीडीने भेटिया, नर सउ आणि नेह;
शीतळ मन सउना थया, अमृत वुठया मेह.
सुंदर महेल सोहामणो, जोता पोत्या कोड;
पद्मावती उतारियां, सुलोचनानी जोड.
सासुने पाये नमी, पद्मावती तजी गर्व;
वहुवर पुत्र घणा हजो, सुखमा रहेजो सर्व.
पद्मावतीना महेल्मा, सुलोचना पछि जाय;
आदर कीधो अति घणो, आव्या बहु पसाय.
पद्मावती पछी बोलिया, साभळ बेन सुजाण;
वातो करो विनोदनी, बोलि अमृत वाण.
मारो तात वैवारियो, तमो तणो राजन;
तमने ओचरवु घटे, बोलो प्रथम वचन.

प्रश्न.

एक नारि आ विश्वमा, पाडे सउने त्रास;
आठ मास छानि रहे, माळे चारे मास.

उत्तर.

सहियर नारि सुलक्षणी, तने हजो कल्याण;
पद्मावती कहे पुछियु, टाढ तेह तु जाण.

प्रश्न.

एक नारि ससारमा, राय रंक घेर जाय;
जे उपर करुणा करे, मृतकतुल्य ते थाय.

उत्तर.

सुलोचना कहे धन्य तु, कोइना तुज तोल;
निद्रा तेनु नाम छे, बोली तुं जे बोल.

प्रश्न.

नारि एक नव खंडमां, लागे सउने अंग;
सत्रळाने निर्बळ करे, करे रंगनो भग.

उत्तर.

सुलोचना कहे सत कहुं, दिले न धरशो दुःख
शामा जे समश्या कही, भूडी ते तो भूख.

चोपाइ.

माहोमांही वातो करे, चतुराइ शु मनडु हरे;
मारासम नित्ये आवजो, काम काज रुडु कहावजो.
पछा कहे प्रथमथी थयां, माटे मुजथी मोटां ठयां;
शिख मागीने थयां विदाय, महा हरखथी महोले जाय.
नारि बे रहे पियुनी पास, कपट नहि मनमांही उल्लास;
रोज मळी बे बेनो रमे, भेळी बेशी भोजन जमे.
साथे बेशी तात ने तन, प्रीते शु किधुं भोजन;
पान सोपारि चर्वण कर्यां, आप आप मोले परवर्यां.

दोहरा.

शामळ भट कहे वर्णव्यु, पुष्पकनुं आख्यान;
भणे गणे ने सांभळे, कृपा करे भगवान.
सत्यवादि सतियो तणो, गाय शुणे महिमाय;
विजोग भागे तेहनो, आशा पूरण थाय.
खोड न देशो मुजने, सर्व कविनो रांक;
जाण अजाणे मे कह्यु, क्षमा करो मुज वांक.
प्रचंड बुद्धि चातुरी, साहसिक सुख धाम;
समश्या चोपाइ दोहरा, किध परमारथ काम.
सवत सतर चुंवोतरे, माहशुक्र पक्ष सार;
कही कथा दिन पांचमे, मळतो मंगळ वार.

संपूर्ण.

कठण शब्दोनो कोश.

अ.

अग, पु० पर्वत
अगम्य, वि० जाणी शकाय नहि ते.
अगोचर, वि० अजाण्यु. (अ=नहि गो=इंद्रियो. चर=अनु=इंद्रियो जइ शके नहि तेवु.)
अघ, न० पाप.
अजा, स्त्री० बकरी. २ माया.
अटन–ण, न० रखडवु, फरवु.
अटारी, स्त्री० हवेलीनो सौथी उपलो माळ. ९ झरुखो.
अट्टहास्य, न० खडखडीने हसवु.
अंतक, पु० काळ, मोत.
अंतरपट, पु० पडदो.
अंतर्धान, न० अदृश्य थवु.
अंत्यज, पु० ढेड, भंगी वगेरे.
अनमी, वि० कोइने नमे नहि ते.
अनावृष्टि, स्त्री० वरसाद न थाय ते.
अनिल, पु० पवन
अनुचर पु० चाकर.
अनुचरी, स्त्री० दासी.
अनुपम, वि० उपमा आपी शकाय नहि तेवु.
अनुराग, पु० प्रीति.
अनोपम, वि० अनुपम.
अन्य, अ० बीजु.
अपरिमित, वि० अपरमित, जेनु माप थइ शके नहि ते
अपवाद, पु० हरकत २ बाध. ३ तोमत.
अबला, स्त्री० स्त्री.
अंबार, पु० अथो, ढगलो.
अभीत, वि० बीये नहि ते
अभिधान, न० नाम
अभिराम, वि० मनोहर.
अभिषेक, पु० छटकाव, राजगादीए बेसती वखते मंत्र भणीने पाणी छांटेछे ते.
अमित, वि० अपार.
अयुत, वि० दश हजार.
अर्णव, पु० समुद्र.
अरण्य, न० जंगल.
अरि, पु० शत्रु.
अरुण, पु० सूर्य २ वि० रातु. ३ सूर्यनो सारथि.
अर्क, पु० सूर्य. २ आकडो.
अर्चन, न० पूजन
अर्धांगना, स्त्री० परणेत स्त्री.
अर्धांगा, स्त्री. अर्धांगना.
अलंकार, पु० शणगार.
अलंकृत, वि० शणगारेलु.
अलखत, वि० अणधारेलु (अलक्षित.)

अलछ, स्त्री० फुवडस्त्री, अलक्ष्मी.
अलौकिक, वि० दुनियामा न होय तेवू, अलौकिक
अवनि, स्त्री० पृथ्वी.
अवर, अ० जुदु. २ बीजु.
अवलोकवुं, क्रि० जोवु.
अवसान, पु० अत, छेवट
अश्व, पु० घोडो.
अस्त्र, न० फेंकवानु हथियार.
अहि, पु०सर्प
अक्षत, पु० डागर, चोखा वगेरेना आखा दाणा.
अक्षौहिणि, स्त्री० २१,८७० रथ. २१,८७०हाथी. ६५,६१० घोडा. १,०९,२५० पायदळ एटली फोज.
अज्ञ, वि० अज्ञानी.
आक्रंद, न० रुदन.
आखेट, पु० शीकार.
आख्यान, न० कथा.
आगळु, वि० वधारे.
आतप, पु० तडको.
आदर्श, न० दर्पण.
आभरण, न० घरेणु.
आयुध, न० हथियार लडाइनु.
आरक्त, वि० रातु.
आरत, स्त्री. आतुर.
आरूढ, वि० स्वार.
आलिंगन, न० भेटीने मळवु.
आवसत, (आवसथ्य) पु० एक अग्निनो कुड राखेछे ते.
आवास, पु० घर.
आह्लाद, पु० आनद.
ईश, पु० धणी. २ महादेव.

उ.

उथलवुं, क्रि० वरनु परणवा सीधा ववु.
उजावुं, क्रि० दोडवु.
उत्तरक्रिया, स्त्री० पछीनी क्रिया.
उत्संग, पु० खोळो, पलाठी.
उदर, न० पेट.
उन्मनी, स्त्री० पाचमी अवस्था. १ जागृत, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति, ४ तुरिया, ५ उन्मनी (ब्रह्मरूप थवु ते.)
उपकंठ, पु० कीनारो.
उपचार, पु० टापटीप.
उपरति, स्त्री० वैराग.
उपवन, न० बगीचो.
उपवीत, न० जनोइ.
उर, न० छाती.
उर्वी, स्त्री० पृथ्वी.
उवेखवुं, क्रि० अवगणना करवी.
एकावळ, पु० एक सेरनो हार.
ओरियो, पु० लावो.
ओवारणां, न० दुखडां लेवां.
ओसाण, न० भान, स्मृति.
ओसार, पु० मारग.

ओळग, स्त्री० चाकरी करवा आ टो फेरो खावो ते.

क.

कंकर, पु० काकरो

कंचन, न० सोनु.

कंज, न० कमल.

कंटक, पु० काटो.

कटक, न० लशकर.

कटाक्ष, पु० वाकी नजर.

कडवुं, वि० भेळशेळ थयेलु, क वितामां राग भेळशेळ थया होय तेने कडवु कहेछे.

कतार, स्त्री० पगन.

कंदर्प, पु० कामदेव.

कंदुक, पु० दडो.

कनक, न० सोनु.

कनिष्ट, वि० नानु

कपि, पु० वानर.

कपोळ, पु० लमणो.

कमंडल, न० जोगीनु जळपात्र.

करतुत, न० कर्तव्य, करेलु काम.

करपण, न० अनाजना छोड.

कर्दम, पु० कादव.

कर्मळो, पु० कलवो.

कल्प, पु० ब्रह्मानो १ दहाडो,वस्तिनी उत्पत्तिथी ते नाशपर्यंतनो काळ, जमानो.

कवण, अ० कोण (को जन).

काम, पु० कामना, इच्छा. २ काम देव. ३ कार्य.

कामेनी, स्त्री० स्त्री. (कामिनी)

काय—या, स्त्री० शरीर.

किंकर, पु० चाकर.

किन्नर, पु० एक जातना देव.

किशोर, पु० बाळक. २ पदर वर्ष-सुधीनी उमरनु माणस.

कीर, पु० पोपट.

कीश, पु० वानर.

कुंजर, पु० हाथी.

कुरंग, पु० हरण.

कुलिन, वि० कुलवान.

कुशासन, न० डाभनी सादडी.

कुसुम, न० फूल.

कुळाचार, पु० कुळनी चाल.

कुर, पु० भात.

कृति, स्त्री० कार्य, करेलु काम

कृष, वि० दुबळु, पातळु.

कृषिक, पु० खेडूत

केकाण, पु० घोडो.

केतु, पु० धजा, चुडो.

केश, पु० वाळ.

कोकिला, स्त्री० कोयलपक्षी.

कोकिल, पु० कोयली २ कोयलनो नर.

कोटी, वि० क्रोड.

कोठार, पु० भडार. २ कोवाडो, कोष्टागार.

कोदंड, न० धनुष.

कौरव, पु० कुरुवशना राजा, दु-र्योधन वगेरे.

क्रमी, पु० कीड.

ख.

खग, पु० पक्षी.
खट, वि० छनी सख्या.
खडग न० तरवार.
खडधान्य, न० सामो, मणचो वेगेरे हलकुं धान्य.
खलक, स्त्री० दुनिया
खांडेरु, न० उटनु टोळु.
खांपण, न० कलक.
खीरोदक, न० दूध ने पाणीना फीण जेवा रगनी साडी
खुंप, पु० फूलनी टोपी लांबा लट कता सरा वाळी.
खेडवुं, क्रि० चलावबु.
खोजवुं, क्रि० खोळवु.

ग.

गज, पु० हाथी.
गंजन–न, न० गाजबु. २ वि० हरा वनार.
गणक, पु० जोषी.
गदगद, वि० गळगळु.
गय, पु० हाथी. (गज)
गरक, वि० रसवस
गरुओ, वि० मोटो.
गाढुं, वि० जाडु, मजबुत. (गाढ)
गात, न० गात्र; शरीरना अवयव.
गामांतर, वि० बीजागामना लोको.
गारवो, पु० गर्व.
गिरि पु० पर्वत.
गुंजारव, पु० भमरानो आवाज.
गुझ, स्त्री० गुप्त, छानु.
गेगाट, पु० हरखमा, शोकमां, के गघमा रसबसपणु.
गेद, पु० दडो.
गेह, न० घर.
गोर, वि० गोरु.

घ.

घट, पु० घडो. २ शरीर
घटिका, स्त्री० घडी.
घरुणी, स्त्री० स्त्री.
घाट, पु० कांटो
घृत, न० घी.

च.

चख, स्त्री० आख.
चंचु, स्त्री० चांच.
चंत, न० चित्त.
चतुरंग, वि० चारमकारनी फोज.
चतुरा, स्त्री० चतुर स्त्री
चक्षु, स्त्री० आंख.
चर्वण, न० चावणु, अथवा चावबु.
चाप, न० धनुष.
चातक, पु० बपैयो.
चारु, वि० सुदर.
चिरंजीवी, वि० घणो काळ जविनार.
चिह्न, न० निशानी.
चूडामणि, पु० माथानो मणि.
चेटक, न० भूतनो वळगाड.

छ.

छळवुं, क्रि० ठगवु.

ज.

जंगम, वि० हालतु चालतु. एक जातना जोगी.
जंत–तु, पु० झीणो प्राणी.
जदा, अ० ज्यारे. (यदा)
जननी, स्त्री० मा.
जरा, स्त्री० घडपण.
जयुं, वि० जेतु.
जळधर, पु० वरसाद.
जागृति, स्त्री० जागवु.
जान्हवी, स्त्री० गगानदी.
जापक, वि० जपकरनार.
जापी, वि० जपकरनार.
जामात, पु० जमाइ.
जामात्र, पु० जमाइ.
जावुं, क्रि० जवु. २ जनमवु.
जीवाजोनी, स्त्री० हरेक प्राणी नी जात.
जुगल, न० जोडु, युगल.
जुवती, स्त्री० जुवान स्त्री.
जूठुं, वि० एठु.
जूथ, न० जथो, यूथ.
जेठीमल, पु० मल.
जेयलो, वि० जेने जय वालो होय ते. (जे जय. वलो वालो)
जोख, पु० शोख.
जोगववुं, क्रि० जोग करवो, मेळववु.

झ.

झमर, पु० घणा माणसो एक चीताभा बळे ते चीता.
झुझार, पु० लडवइयो.

ट.

टेढुं, वि० वांकु.
ठाणियो, पु० रावत.

त.

तक्र, स्त्री० छाश.
तजगारवुं, क्रि० गणकारवु.
तडित, स्त्री० बीजळी.
ततखेव, अ० तेज वखत, ततकाळ.
ततपर, अ० तैयार.
तदा, अ० त्यारे.
तदाकार, वि० तद्रूप.
तद्वत, वि० तेनाजेवु.
तन, न० शरीर. २ दीकरो.
तनया, स्त्री० दीकरी.
तनु, न० शरीर.
तनुज, पु० दीकरो.
तरंग, पु० पवन, पाणी, आनदनो मोजो.
तरणुं न० तृण, घास.
तरणी, पु० सूर्य.
तरतीब, स्त्री० युक्ति, तदबीर.
तरु, पु० झाड.
तरुण, पु० जुवान.
तरुणी, स्त्री० जुवान स्त्री.
तरुवर, पु० मोटु झाड.

तव, अ० त्यारे. २ तारुं.
तयुं, वि० तेवु.
तात, पु० बाप.
तातुं, वि० उनुं. (तप्त)
तारुणी, स्त्री० तरुणी.
तास, स० तेने–नुं.
तीर, स्त्री० काठो, तेड.
तितिक्षा, स्त्री० सहनशक्ति.
तुंड, न० मों
तुरंग, पु० घोडो.
तुरंगम पु० घोडो
तुरी, पु० घोडो. २ तुरइवाजु.
तूर्या, स्त्री० चोथी अवस्था, मूर्छा अवस्था.
तूल, न० फोतरा. २ आकडाना फळ.
तृण, न० घास.
तृषा, स्त्री० तरश.
तोखार, पु० घोडो.
तोरी, पु० घोडो.
त्याज, पु० त्याग.
त्रातुं, न० छुंदणु.
त्रिपुरारी, पु० शिव.
त्रिया, स्त्री० स्त्री.
त्र्यंबक, पु० महादेव अथवा तेमनुं धनुष.

द.

ददामा, स्त्री० नोबत.
दनुज, पु० दैत्य.
दंपती, पु० स्त्रीपुरुषनुं जोडुं.
दम, पु० बाहारनी इद्रियोने रोकवी.
दमडो, पु० पइसो.
दसोंदी, पु० दशमो भाग लेनार.
दळ, न० फोज.
दक्षणावंत, पु० जमणीतरफ वळेलो शंख उत्तम गणाय छे. (दक्षिणावर्त्त)
दानवी, स्त्री० दानवनी स्त्री.
दाम, पु० पइसो.
दामणुं, न० दुबळु. (दयामणु.)
दारा, स्त्री० स्त्री.
दावानळ, पु० वननी आग.
दाहक्रिया, स्त्री० मडदु बाळवानी क्रिया.
दिगपाळ, पु० दिशानो पाळणार देव.
दिन, पु० दिवस.
दिनकर, पु० सूर्य.
दिस, पु० दिवस.
दीन, वि० गरीब.
दीर्घ, वि० लांबु.
दुंदुभि, न० मोटी नोबत.
दूत, पु० चाकर, जासुद.
दैव, पु० नसीब.
दोटाववुं, क्रि० दोडाववुं.
दोय, वि० बे.
द्यूत, न० जुगटु.
द्विज, पु० ब्राह्मण.

ध.

धंध, पु० लडाइ.

धनु, न० धनुष.
धनुष, न० कामठुं.
धरणी, स्त्री० पृथ्वी.
धारक, वि० धारनार.
धुरंधर, पु० आगेवान.
धृती, स्त्री० धीरज
धेनु, स्त्री० गाय
धोरी, पु० बळध
ध्वजा, स्त्री० धजा
ध्वंस, पु० नाश

न.

नगरुं, वि० गुरुवगरनु.
नंदन, पु० दीकरो
नंदी, पु० पोडियो
नभ, न० आकाश.
नमेरुं, वि० निर्दय.
नरदेव, पु० राजा.
नरतक, पु० नाचनार.
नवाण, न० पाणीनी वधावेली (निपान) जगा
नष्टचर्चा, स्त्री० छानी वातमी.
नाद, पु० हजाम
नाद, पु० शब्द
नाशन वि० नाशकरनार.
नासा, स्त्री० नाक.
निकट, अ० पासे.
निज, अ० पोतानु
निदान, न० परिणाम.
निधान, पु० भंडार.
निधि, पु० भंडार २ समुद्र.
निमंत्रण, न० नोतरु.
निरीक्षण, न० तपासीने जोवु.
निर्गमवुं, क्रि०जवु, काळगुजारवो.
निर्वाण, अ० निश्चळ.
निवर्त्तवुं, क्रि० नीरांत करीने बेसवु
निशा, स्त्री० रात्री
निशाचर, पु० राक्षस.
निशान, न० वावटावाळी नोबत.
निशिचर, पु० राक्षस.
नेजो, पु० नानो वावटो
नेट, अ० छेवट
नेपुर, न० झांझर
नेह, पु० स्नेह.
नैषध, पु० संस्कृत काव्यनो एक ग्रथछे
न्यून, अ० ओछु

प.

पंकज, न० कमळ.
पटंतर, पु० पडदो
पडो, पु० (पटह) मोटो ढोल.
पण, न० प्रतिज्ञा
पताका, स्त्री० शेड वगरनी धजा.
पतित, वि० पडेलु, भ्रष्ट थयेलु.
पत्तन, न० शेहेर.
पत्य, स्त्री० पतियार, विश्वास.
पद, पु० पग २ पदवी.
पदाति, पु० पगपाळो.

पय, न० दूध.
परवरवुं, क्रि० जवु.
परस्वेद, पु० परसेवो (प्रस्वेद.)
परिणाम, पु० छेवट जे फळ थाय ते.
परिताप, पु० चिंता.
परिमल, पु० सुगध.
परिब्रह्म, पु० परमेश्वर.
परियो, पु० पेढी, वंशनो प्रत्येक पुरुष.
पल्लव, न० पादडु. २ पालव.
पसाय, पु० प्रसाद; बक्षीस.
पळवुं, क्रि० जवु. २ पळिया आव वा. ३ सचवावु.
पांकवु, क्रि० कळवु.
पाखे, अ० विना.
पाग, पु० पग. २ पाघडी.
पाटी, स्त्री० घोडानी दोड.
पाठववुं, क्रि० मोकलवु.
पान, न० पीवु.
पाय, पु० पग.
पारथ, पु० अरजुन (पार्थ)
पारधी, पु० शीकारी.
पालव, पु० छेडो. २ बरफ.
पावक, पु० अग्नि.
पावन, पु० पवित्र.
पाश, पु० जाळ. २ फांसो.
पिंजर, न० पाजरु.
पिष्ट, पु० लोट.
पीत, वि० पीळु.
पुनित, वि० पवित्र.
पुरुषार्थ, पु० पराक्रम, मर्दामी.
पृष्ट, न० वासो.
पेर, स्त्री० रीत.
पोढुं, वि० मोटु (मोढ)
प्रचंड, वि० मोटु. २ भयकर.
प्रतिबिंब, न० दर्पण, पाणी वीगरे मा छाया (आकार) देखाय ते.
प्रतिबोध, पु० सामामाणसने सम जाववु ते.
प्रतिहार, पु० दरवान.
प्रमदा, स्त्री० स्त्री.
प्रमाद, पु० आळस.
प्रवीण, वि० डाह्यु.
प्रवेशवुं, क्रि० पेसवु.
प्रसववु, क्रि० जणवु.
प्रहार, पु० मार.
प्राशन, न० चाटवु, खावु.
प्रीछवुं, क्रि० जाणवु.

ब.

बंदन, न० तोरण.
बंदीजन, पु० भाट; चारण.
बंधु, पु० भाइ.
बबुल, पु० बावळ.
बहिर्मुख, पु० विमुख, मढळीव हार थयेलो.
बाज, पु० घोडो; बाजी. २ शीचा णो पक्षी
बाधु, वि० बधु.
बाहु, पु० बावडु
बुडी, स्त्री० बरछी.

बुझवुं, क्रि० जाणवुं. २ ओलावुं.

भ.

भंगी, पु० भांगपीनार.
भजवुं, क्रि० शोभवुं.
भड, वि० बहादुर. (भट्ट)
भडवुं, क्रि० लडवुं.
भर्ता, पु० स्वामी.
भवन, न० घर.
भाखवुं, क्रि० बोलवुं.
भान-णु, पु० सूर्य.
भामणां, ना० ओवारणां.
भामनी, स्त्री० स्त्री.
भालु, न० रींछनी एक जात छे
भिन्न, वि० जुदुं.
भुज-जा, पु० स्त्री० हाथ.
भू, स्त्री० पृथ्वी.
भृकुटी, स्त्री० आंख उपरनी भमर.
भोरिंग, पु० सर्प.
भ्रात, पु० भाइ.

म.

मंगळाक्षत, पु० मंगळिक अक्षत.
मंगळाष्टक, न० मंगळिक आठ श्लोक विवाहमां भणेछे ते.
मछराळ, वि० अदेखो.
मंजन, न० मांजवुं, उटकवुं. २ मांजवानी वस्तु पीठी वगेरे.
मंडन, न० घरांणुं.
मणा, स्त्री० खामी.
मदिरा, स्त्री० दारुपीवानो.
मद्यप, पु० दारुपीनार.
मधुकर, पु० भमरो.
मधुपर्क, पु० एकप्रकारनी पूजा.
मम, स० मारुं.
मराल, पु० हंस.
मर्कट, पु० मांकडुं.
मही, स्त्री० पृथ्वी.
महीप, पु० राजा.
महिला, स्त्री० स्त्री.
महिष, पु० पाडो.
मांजारी, स्त्री० बिलाडी.
मांझार, पु० बिलाडो.
माणवुं, क्रि० भोगववुं.
मातंग, पु० हाथी.
मातुल, पु० मामो.
माननी, स्त्री० स्त्री.
माम, स्त्री० ममता.
मींडक, पु० देडको.
मुक्ता, स्त्री० मुक्ताफळना अर्थमां वपरायछे. (मोती.)
मुंड, न० माथुं.
मुमुक्षुता, स्त्री० मोक्षपामवानी इच्छा.
मूर्त, न० बे घडीनो काळ.
मृग, पु० हरणियुं.
मृगमद, पु० कस्तुरी.
मृगया, स्त्री० शीकार.
मृतक, न० मडदुं.
मृत्तिका, स्त्री० माटी.
मेदनी, स्त्री० पृथ्वी.
मेर, पु० मेरुपर्वत.

मेरी, वि० दयालु २ स्त्री० स्त्री मो
कम, वि० जोरावर, कठण (मक्कम)
मोझार, म० मांही·
मोडवुं, क्रि० मरडवु·
मोद, पु० आनंद, मुद·

य.

यज्ञोपवीत, न० जनोई·
यौवन, न० जुवानी

र.

रक्त, वि० रातु २ रंगायेलु·
रजक, न० अन. २ धोबी·
रजनी, स्त्री० रात्रि·
रढियालुं, वि० होंशीलु
रण, पु० संग्राम २ करज. ३ जंगल.
रणियो, पु० करजदार·
रंभा, स्त्री० अप्सरा·
रश्मि, पु० किरण
रळी, स्त्री० खुशी.
रक्ष, न० रींछ.
राका, स्त्री० पूनमनी रात
राखणहार, पु० राखनार
राजन, पु० राजा.
राजवी, पु० राजवंशी·
राजान, पु० राजाओ·
राजेंद्र, पु० मोटो राजा·
राड, स्त्री० लडाई.
रामा, स्त्री० स्त्री·
राया-दी, स्त्री० जमो·
रुचि, स्त्री० इच्छा, मरजी.
रुडवुं, क्रि० रीसावु·
रुंढमाळ, स्त्री० माणसना माथानी
माळा.
रुपक, न० कविताना एक अलंकार
छे जेमके पुरुषनु वर्णन सिंहरूपे
करवु इत्यादि·
रोमांचित, वि० हरखथी रुवाडा
उभां थवा
रौरो, अ० भयंकर·

ळ.

लघु, वि० नानु· २ टुंकु·
लछ, स्त्री० लक्ष्मी·
ललना, स्त्री० स्त्री
ललित, वि० सुंदर
लवण, न० मीठु, लूण.
लोचन, न० आंख.
लोह, न० लोढु

व.

वण, न० कपास. २ अ० विना
वत्स, पु० वालो २ वाछडु·
वदन, न० मुख.
वधु, स्त्री० वहु·
वनकुल, न० झाडनी छालनु लुगडु·
वपु, न० शरीर.
वय, न० अवस्था.
वर, वि० श्रेष्ठ, सुंदर. २ वरदान.

वर्तिक, पु० गोरजी, जती.
वशियर, पु० सर्प- (विषधर)
वष्टि, स्त्री० पचात
वसन, न० वस्त्र.
वह्नि, पु० अग्नि.
वाक, स्त्री० वाणी
वाडव, पु० ब्राह्मण.
वाण–णी, स्त्री० वाणी.
वात्सल्य, न० वहालपण
वाधवुं, क्रि० वधवु.
वामणुं, वि० ठींगणु.
वामवुं, क्रि० काढी नाखवु
वायक, न० वाक्य, वेण.
वायस, पु० कागडो.
वार, स्त्री० सहायता.
वार–रि, न० पाणी.
वारांगना, स्त्री० वेश्या
वाहन, न० घोडो, गाडी वगेरे बेसवानु
विचरवुं, क्रि० जवुं.
विचक्षण, वि० डाह्यु.
वितान, पु० चदरवो.
वित्त, न० नाणु, दैवत.
विधि, पु० ब्रह्मा.
विधु, पु० चंद्र.
विनता, स्त्री० स्त्री.
विनीत, वि० नम्रतावाळो.
विनोद, पु० आनंद, गमत.
विपरित, न० उलटु.
विमासवुं, क्रि० पस्तावु, विचारवु. (विमासण.)
विरला, वि० थोडा
विलास पु० मोज, मजा
विशारद, पु० पंडित.
विहंगम, पु० पक्षी
व्रक, पु० वरु.
वृत्ति, स्त्री० मननो विचार. २ आजीविका
वृषभ, पु० वाछडो
वृषभारूढ, पु० महादेव. २ बळदउपर बेसनार.
वृषा, स्त्री० वरसाद.
वेडाग, पु० घोडो.
वेद, अ० नकी
वैश्य, पु० वाणियो २ वेपारी, कारीगर, खेडू.
व्यंग, न० भूत
व्यंडळ, पु० नपुसक.
व्यतर, न० एक जातनु भूत.
व्याघ्र, पु० वाघ.
व्याळ, पु० सर्प

श.

शक, स्त्री० शका.
शकट, न० गाडु.
शत, वि० सो.
शव, न० मडदु
शब्दवेधी, वि० शब्दउपर तीर नांखीने वेधनार.

शम, पुं० शमता.
शमी, स्त्री० शमडी, खीजडी.
शरासन, न० धनुष.
शलभ, न० टीड.
शशि, पु० चंद्र.
शस्त्र, न० हथियार.
शाम, वि० कालुं.
शामद, पु० सरदार.
शामा, स्त्री० स्त्री.
शिक्ष, स्त्री० रजा.
शिरोमणि, पु० माथानो मणी.
शिष्टाई, स्त्री० मोटाइ.
शीखंडी, पु० मोर.
शीखा, स्त्री० चोटली.
शीघ्र, वि० उतावलुं.
शीत, स्त्री० टाढ.
शीश, न० मस्तक.
शोणीत, न० लोही.
श्रोता, पु० साभळनार.
श्वेत, वि० धोळुं.
षोडश, वि० सोळनी संख्या.

स.

सकुमार, } वि० कुमळुं (सुकु-
सकोमळ, } मार) नाजुक.
सगरु, वि० जेने माथे गुरु होय तेवुं.
. २ गोळो वगेरे उपडावाना सो
गन खवरावववा ते.
संचरवुं, क्रि० जवुं.
सत्वर, वि० उतावळुं.
सदन, न० घर.
संपुट, पु० डाबडी. २ बे हाथ जो
डवा अथवा बे कमाड भीडवां ते.
सप्त, वि० सात.
समागम, पु० मेळाप.
समीप, अ० पासे.
समेत, अ० सहित.
सर, न० तलाव.
सर्वदा, अ० हमेशा.
सर्वथा, अ० सर्व प्रकारे.
सविता, पु० सूर्य.
सवेरुं, न० सवार.
सहस्र, वि० हजारनी संख्या.
सांग, स्त्री० शक्ति कहेछे ते हथी-
आर.
सांचरवुं, क्रि० जवुं.
साधक, पु० साधनकरनार.
सायक, न० धनुष.
सारंग, पु० चद्र. २ हरण. ३ तंबुरो.
४ अमृत. ५ दीवो. ६ मोर. ७ धनुष.
सारीखुं, वि० सरखुं.
सांसो, पु० सशय.
सिंधु, पु० समुद्र.
सुकृत, पु० सारुकाम, पुण्य.
सुखासन, न० सुखपाल.
सुत, पु० पुत्र.
सूनुं, वि० ऊजड.
सुभग, वि० सुदर.
सुम, पु० कंजुस.
सुरपति, पु० इंद्र.

सुरभी, स्त्री० गाय.
सुवर्ण, न० सोनु.
सूत्र, वि० सूतर, पांशरु, सीधु, फा वे तेवु.
सूर, पु० सूर्य.
स्रष्टा, पु० सृजनार, ब्रह्मा.
स्तुति, स्त्री० वखाण.
सेन, न० फोज.
सेना, स्त्री० फोज.
सोडो, पु० मददगार.
सोढवुं, क्रि० विदाय थवु.
स्थूळ, वि० जाडु.
स्वर्ण, न० सोनु.
स्वल्प, वि० थोडु.
स्वस्तिवाचन, न० मंगळिक मंत्र बोलवा ते.
हय, पु० घोडो
हरम—हर्म्य, पु० हवेली.
हस्ती, पु० हाथी.
हाटक, न० सोनु.
हीसवुं, क्रि० हरखवु.
हुताशन, पु० अग्नि
हलवु, पु० अडपलु.
क्षिति, स्त्री० पृथ्वी.
क्षीण, वि० ओछु थवु.
क्षोणि, स्त्री० अक्षोहिणी.

सुरभी, स्त्री० गाय.
सुवर्ण, न० सोनु
सूत्र, वि० सूतर, पांसरु, सीधु, फा वे तेवु
सूर, पु० सूर्य
स्रष्टा, पु० सृजनार, ब्रह्मा
स्तुति, स्त्री० वखाण
सैन, न० फोज
सेना, स्त्री० फोज
सोडो, पु० मददगार
सोटवुं, क्रि० विदाय थवु
स्थूळ, वि० जाडु
स्वर्ण, न० सोनु
स्वल्प, वि० थोडुं.
स्वस्तिवाचन, न० मगाळिक मत्र बोलवा ते
हय, पु० घोडो
हरम–हर्म्य, पु० हवेली
हस्ती, पु० हाथी
हाटक, न० सोनु
हीसवुं, क्रि० हरखवु
हुताशन, पु० आग्नि
हलवु, पु० अडपलु
क्षिति, स्त्री० पृथ्वी
क्षीण, वि० ओछु थवु
क्षोणि, स्त्री० अक्षोहिणी.